मार्क्स के आखिरी दिन (1881-83)

बौद्धिक जीवनी

मार्क्स के आखिरी दिन (1881-83)
बौद्धिक जीवनी

मार्चेलो मुस्तो

अनुवादक
गोपाल प्रधान

AAKAR

Hindi translation of **The Last Years of Karl Marx: An Intellectual Biography** by Marcello Musto, 2020

मार्क्स के आखिरी दिन (1881-83): बौद्धिक जीवनी

© लेखक

प्रथम हिन्दी संस्करण 2021

ISBN 978-93-5002-719-6

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक
आकार बुक्स
28 ई, पॉकेट IV, मयूर विहार
फेस I, दिल्ली 110 091
www.aakarbooks

लेजर टाइपसेट
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली

मुद्रक
सपना ब्रदर्स, नोएडा

विषय सूची

भूमिका 7

1. पूर्वरंग 'संघर्ष!' 11

2. जीवन का भार और नए शोध 15
   1. मेटलैंड पार्क रोड पर घर 15
   2. मानवशास्त्र और गणित के बीच 26
   3. विश्व नागरिक 40

3. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और रूसी विवाद 54
   1. ग्रामीण कम्यून के भविष्य के बारे में 54
   2. क्या पूँजीवाद कम्युनिस्ट समाज की अनिवार्य पूर्वशर्त है? 57
   3. सम्भव वैकल्पिक रास्ता 67

4. बुजुर्ग की मकबूलियत 80
   1. 'पूँजी' का यूरोप में प्रसार 80
   2. जीवन का दंगल 91
   3. पत्नी का देहांत और फिर से इतिहास का अध्ययन 96

5. मूर की आखिरी यात्रा 105
   1. अल्जीयर्स और अरब दुनिया के बारे में 105
   2. सिद्धांततः गणतांत्रिक 114
   3. "तय है कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ" 121

पश्चलेख : आखिरी हफ़्ते 126

परिशिष्ट : रोटी और गुलाब 132
   (क) राजनीतिक मांग 135
   (ख) आर्थिक मांग 136

जीवनक्रम : 1881-83 138

भूमिका

पूँजीवाद के जीवन में सबसे हालिया 2008 के संकट के बाद से ही कार्ल मार्क्स के बारे में बातचीत शुरू हो गई है। बर्लिन की दीवार गिरने के बाद मार्क्स की शाश्वत गुमनामी की भविष्यवाणी के विपरीत उनके विचारों का विश्लेषण, विकास और बहस मुबाहिसा फिर से चालू हुआ है। बहुत सारे लोगों ने उस चिंतक के बारे में नए सवाल पूछने शुरू किए हैं जिसे अक्सर गलत ही 'जैसा भी समाजवाद' के साथ जोड़ा और 1989 के बाद धीरे से परे हटा दिया।

प्रतिष्ठित अखबारों और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली पत्रिकाओं ने मार्क्स को अत्यंत प्रासंगिक और दूरदर्शी सिद्धांतकार कहा है। लगभग सर्वत्र वे विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में मौजूद हैं। उनके लेखन का पुनःप्रकाशन या नए संस्करण किताबों की दुकानों में फिर से नजर आना शुरू हुए हैं और बीसेक साल की उपेक्षा के बाद उनके लेखन का अध्ययन धीरे-धीरे गति पकड़ रहा है। कभी कभी इस अध्ययन के महत्त्वपूर्ण और नए परिणाम सामने आ रहे हैं। मार्क्स के समूचे लेखन के पुनर्मूल्यांकन की दृष्टि से खास घटना 1998 से मेगा 2 के नाम से मार्क्स और एंगेल्स के समस्त लेखन का ऐतिहासिक-आलोचनात्मक संस्करण का प्रकाशन है। इसके पाँच खंड छप चुके हैं और शेष के प्रकाशन की तैयारी चल रही है। इन खंडों में मार्क्स की कुछ किताबों (मसलन जर्मन विचारधारा) का नया रूप है, पूँजी की सारी पांडुलिपियाँ हैं, उनके जीवन के महत्त्वपूर्ण दौरों में भेजी गई (और प्राप्त में से चयनित) चिट्ठियाँ हैं तथा दो सौ नोटबुकें हैं जिनमें उनकी पढ़ी किताबों के उद्धरण और उनसे उत्पन्न टीपें हैं। नोटबुकें उनके

आलोचनात्मक सिद्धांत की कार्यशाला हैं जिनसे उनके चिंतन की जटिल यात्रा और विचारों के विकास के लिए प्रयुक्त स्रोतों का पता चलता है।

इस अमूल्य सामग्री का अधिकतर हिस्सा जर्मन में ही उपलब्ध होने के चलते कुछ ही शोधकर्ताओं तक सीमित है। इससे हमारे सामने मार्क्स की दूसरी ही तस्वीर उभरती है जो लम्बे दिनों से उनके अनगिनत आलोचकों और स्व घोषित समर्थकों द्वारा प्रस्तुत तस्वीर से भिन्न है। मेगा 2 से हासिल नए संदर्भों के आधार पर कहा जा सकता है कि महान राजनीतिक और दार्शनिक चिंतकों में हाल के दिनों में मार्क्स के भाग्य में सबसे अधिक उलट फेर हुए हैं। सोवियत संघ के बिखराव के साथ बदले हुए राजनीतिक परिदृश्य ने मार्क्स को राजव्यवस्था की वकालत से आजादी दे दी है जिसकी जिम्मेदारी उनके माथे पर डाल दी गई थी।

शोध में हुई प्रगति और बदले राजनीतिक हालात को देखकर लगता है कि मार्क्स के चिंतन की व्याख्या के नए उभार की यह परिघटना आगे भी जारी रहेगी। बहुत संभव है कि यह रुचि उनके सैद्धांतिक अनुसंधान के अंतिम दिनों पर ध्यान केंद्रित करे। वर्तमान अध्ययन बौद्धिक जीवनी लिखने की आकांक्षा के साथ शुरू हुआ है इसलिए हो सकता है बाद में मार्क्स के चिंतन की सैद्धांतिक छानबीन के साथ इसकी पूर्णाहुति हो।

मार्क्स के जीवन के आखिरी सालों की पांडुलिपियों से यह मान्यता ध्वस्त हो जाती है कि उनकी बौद्धिक जिज्ञासा बुझ गई थी और उन्होंने काम करना बंद कर दिया था। न केवल उन्होंने अपनी खोज जारी रखी थी बल्कि उसे नए अनुशासनों में विस्तारित किया था।

1881 और 1882 में मार्क्स ने मानवशास्त्र की हालिया खोजों, प्राक-पूँजीवादी समाजों में सामुदायिक स्वामित्व के रूपों, भूदास प्रथा के खात्मे के बाद रूस में होने वाले बदलावों और आधुनिक राज्य के जन्म के सिलसिले में गहन अध्ययन किया। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रमुख घटनाओं को भी वे ध्यान से देख रहे थे। इसका सबूत वे पत्र हैं जिनमें उन्होंने आयरलैंड की स्वाधीनता की लड़ाई के लिए अपना समर्थन जाहिर किया और भारत, मिस्र तथा अल्जीरिया में औपनिवेशिक उत्पीड़न का मजबूती से विरोध किया। उन्हें यूरोप केंद्रित, आर्थिक निर्धारणवादी या केवल वर्ग संघर्ष से ग्रस्त कहना मुश्किल है।

पूँजीवादी व्यवस्था की अपनी लगातार जारी आलोचना के लिए मार्क्स नए राजनीतिक संघर्षों, नए विषयों और नए भौगोलिक क्षेत्रों का अध्ययन बुनियादी समझते थे। इसके चलते वे विभिन्न देशों की विशेषताओं को देख सके और समाजवाद का जो स्वरूप पहले उन्होंने सोचा था उससे भिन्न स्वरूप की संभावनाओं पर विचार कर सके।

आखिरी बात कि अंतिम दिनों में मार्क्स बेहद प्यारे इंसान हो गए थे। जीवन में आई अपनी कमजोरी पर परदा नहीं डाला फिर भी संघर्ष करते रहे। संदेह से पीछा नहीं छुड़ाया बल्कि उसका खुलकर सामना किया। आत्म निश्चिति में शरण लेने या प्रथम 'मार्क्सवादियों' की अनर्गल प्रशंसा में सुख पाने की जगह शोध का काम जारी रखा। इन दिनों के मार्क्स की तस्वीर विरल ढंग से विध्वंसक मूलगामी की बनती है जो बीसवीं सदी की उस पत्थर जड़ी तस्वीर से पूरी तरह भिन्न है जिसमें वे जड़ निश्चय के साथ भविष्य की ओर संकेत करते हैं। असल में वे शोधकर्ताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं की नई पीढ़ी का उसी संघर्ष की पताका उठाकर आगे ले जाने का आवाहन करते हैं जिसके लिए उनके पहले और बाद के बहुतेरे लोगों ने समूचा जीवन होम कर दिया।

1

पूर्वरंग 'संघर्ष!'

अगस्त 1880 में जान स्विंटन (1829-1901) जो मशहूर अमेरिकी प्रगतिशील पत्रकार थे यूरोप घूमने आए। वहाँ वे इंग्लैंड के धुर दक्षिणपूर्वी छोर से कुछ किलोमीटर दूर स्थित छोटे से खाड़ी नगर केन्ट के पास राम्सगेट गए। यह यात्रा उन्होंने तत्कालीन अमेरिका में सबसे व्यापक पाठक समुदाय वाली खुद द्वारा संपादित पत्रिका *सन* के लिए एक साक्षात्कार हेतु की थी। जिनसे साक्षात्कार लेना था वे अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के एक प्रमुख प्रतिनिधि बन चुके कार्ल मार्क्स थे।

जन्म से जर्मनी के नागरिक मार्क्स फ्रांसिसी, बेल्जियाई और प्रशियाई सरकारों द्वारा 1848-49 में अपने देशों में उभरे क्रांतिकारी आंदोलनों का दमन करने के क्रम में बहिष्कृत होने के बाद राष्ट्रविहीन हो चुके थे। 1874 में जब उन्होंने ब्रिटेन की नागरिकता के लिए आवेदन किया तो उनकी अर्जी खारिज कर दी गई क्योंकि स्काटलैंड यार्ड की एक रिपोर्ट में उन्हें ऐसा 'बदनाम जर्मन आंदोलनकारी और कम्युनिस्ट सिद्धांतों का वकील' बताया गया था जो 'अपने राजा और देश के प्रति निष्ठावान नहीं' रहा था।

दस साल से अधिक समय तक मार्क्स *न्यू यार्क ट्रिब्यून* के संवाददाता रहे; 1867 में 'पूँजी' नामक ग्रंथ में पूँजीवादी उत्पादन पद्धति की आलोचना प्रकाशित की थी और 1864 के बाद आठ सालों तक इंटरनेशनल नामक मजदूर संगठन के नेता रहे थे। 1871 में उनका नाम यूरोप के तमाम अखबारों में छपा था जब 'फ्रांस में गृहयुद्ध' में पेरिस कम्यून के बचाव के कारण प्रतिक्रियावादी अखबारों नें उन्हें 'लाल क्रांति का डाक्टर' कहकर बदनाम किया था।

1880 की गर्मियों में मार्क्स अपने परिवार के साथ राम्सगेट में 'कुछ भी न करने' और इस तरह 'स्नायविक तंत्र को दुरुस्त करने' के डाक्टर के आदेश पर रह रहे थे। पत्नी की सेहत तो उनसे भी बुरी थी। जेनी फान वेस्टफालेन कैंसर से पीड़ित थीं और उनकी हालत 'अचानक इतनी बिगड़ गई कि सबको घातक अंत की आशंका' हो गई। ऐसी ही स्थिति में समूचे 1860 दशक में *न्यू यार्क टाइम्स* के प्रधान सम्पादक रहे स्विंटन को मार्क्स के बारे में पता चला और उन्होंने उनकी सहानुभूतिपूर्ण, चटक और सही तस्वीर खींची।

थोड़ा निजी स्तर पर स्विंटन ने मार्क्स को 'साठ के लपेटे में दाखिल भारी सिर, उभरे नक्श वाले, सज्जन और घने लहराते उलझे सफेद बालों वाला ऐसा उदारमना पुरुष बताया', जो 'नाना का दायित्व निभाने की कला को विक्टर ह्यूगो से कम बेहतर नहीं' जानता। उनकी बातें 'इतनी खुली, इतनी विस्तृत, इतनी रचनात्मक, इतनी बेधक, इतनी सच्ची' थीं कि स्विंटन को 'कटुक्तियों से संवलित, हास्य की चमक से भरे और क्रीड़ाभावी हास्य वाले' सुकराती संवादों की याद हो आई। उनको यह भी लगा कि 'इस व्यक्ति में दिखावे या प्रसिद्धि की कोई चाहत नहीं है, जीवन की तड़क भड़क का रंच मात्र स्पर्श नहीं है तथा शक्ति प्रदर्शन का तो सवाल ही नहीं' उठता।

फिर भी 6 सितम्बर 1880 को जब *सन* के मुखपृष्ठ पर जब यह साक्षात्कार प्रकाशित हुआ तो स्विंटन ने पाठकों के समक्ष मार्क्स की यह तस्वीर नहीं प्रस्तुत की। उन्होंने मार्क्स का सार्वजनिक चेहरा पेश किया 'आज की दुनिया के सबसे उल्लेखनीय लोगों में से एक, जिन्होंने अबूझ तरीके से पिछले चालीस साल की क्रांतिकारी राजनीति में ताकतवर भूमिका निभाई है।' स्विंटन ने उनके बारे में लिखाः

> '(वे) न तो जल्दी में हैं, न आराम करना चाहते हैं। शक्तिशाली, व्यापक और उन्नत मस्तिष्क का स्वामी यह व्यक्ति दूरगामी परियोजनाओं, तार्किक पद्धतियों और व्यावहारिक लक्ष्यों से भरा हुआ है। जिनसे गद्दियों पर बैठे लोग और सत्ताशाली धोखेबाज विस्मित और भयभीत रहते हैं ऐसे देशों को हिला देने वाले और बादशाहतों को बरबाद करने वाले भूकम्पों की पीठ पर वे यूरोप के किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक खड़े थे और अब भी खड़े हैं।'

मार्क्स के साथ बातचीत से न्यू यार्क के इस पत्रकार को विश्वास हो गया कि वह ऐसे व्यक्ति के समक्ष है जो 'समय में गहरे धंसा' है और जिसका हाथ 'नेवा से लेकर सीन तक, यूराल्स से लेकर पाइरेनीज तक' नये युग के 'आगमन की तैयारी में व्यस्त' है। मार्क्स से वह प्रभावित हुआ क्योंकि वे 'एक एक देश की विशेषताओं, परिवर्तनों तथा सतह के ऊपर और सतह के नीचे के नेताओं का संकेत करते हुए समूचे यूरोपीय संसार का सर्वेक्षण' करने में सक्षम थे। मार्क्स ने 'यूरोप के विभिन्न देशों की राजनीतिक ताकतों और लोकप्रिय आंदोलनों–रूस की भावना की विशाल धारा, जर्मन दिमाग की हलचल, फ्रांस की कार्यवाही, इंग्लैंड की जड़ता की बात की। रूस के बारे में आशा के साथ, जर्मनी के बारे में दार्शनिक भाव से, फ्रांस के बारे में प्रसन्नतापूर्वक और इंग्लैंड के बारे में गम्भीर होकर बातें कीं। इंग्लैंड के प्रसंग में उन 'अत्यल्प सुधारों' का हिकारत से जिक्र किया जिस पर ब्रिटिश संसद में लिबरल लोग समय खर्च करते हैं।'

स्विंटन को अमेरिका के बारे में मार्क्स की जानकारी से भी अचरज हुआ। वहाँ के घटनाक्रम को वे ध्यान से देख रहे थे और 'अमेरिकी जीवन को आकार देने वाली प्रभावी कुछ ताकतों के बारे में उनकी बातें सूझ से भरी हुई थीं'।

जीवंत बहस मुबाहिसे में दिन बीत गया। दिन ढलते समय मार्क्स ने अपने परिवार से मिलने के लिए 'तट पर समुन्दर के साथ टहलते' हुए चलने का प्रस्ताव किया। इसे स्विंटन ने 'कुल मिलाकर दस लोगों की मजेदार पार्टी' बताया। शाम उतर आने पर मार्क्स के दामाद चार्ल्स लांग्वे (1839-1903) और पाल लाफ़ॉर्ग (1842-1911) उन दोनों का साथ देने आए और साथ बने रहे। बातचीत 'दुनिया, मनुष्य और विचारों के बारे में जारी रही और हमारे गिलास समुद्र किनारे खनकते रहे।' इसी तरह के किसी एक क्षण में 'जीवन और जमाने भर की यंत्रणा के बारे में बड़बड़ाहट के साथ सोचते हुए' अमेरिकी पत्रकार ने 'दिन की बातचीत और शाम के नजारे' में डूबकर सामने बैठे महान व्यक्ति से 'अस्तित्व के अंतिम नियम जैसा' सवाल पूछने की हिम्मत की। उस समय क्षण भर की चुप्पी में क्रांतिकारी और दार्शनिक से एक सांघातिक सवाल पूछा '(जीवन) क्या है?', स्विंटन को लगा कि मार्क्स का दिमाग 'सामने गरजते समुद्र और तट पर अशांत भीड़ पर नजर डाले हुए

एक क्षण के लिए अंतर्मुखी हो गया।' आखिरकार मार्क्स ने गहरी और शांत आवाज में जवाब दिया 'संघर्ष!'।

पहली बार में स्विंटन को लगा कि उस उत्तर में उन्होंने 'निराशा की प्रतिध्वनि' सुनी। बहरहाल बाद में वे भी सहमत हुए- 'संघर्ष' ही 'जीवन का सार' है जिसे समझने की कोशिश हमेशा से मानवता करती रही है।

2

जीवन का भार और नए शोध

1. मेटलैंड पार्क रोड पर घर

स्विंटन के साक्षात्कार के कुछ महीने बाद 1881 में जनवरी की एक रात लगभग पूरी तरह सफेद हो चुकी दाढ़ी में एक व्यक्ति उत्तरी लंदन के अपने घर में बैठा हुआ किताबों के ढेर में से पढ़कर ध्यान से महत्त्वपूर्ण हिस्सों को नोट करता जा रहा था। नौकरी जैसे धीरज के साथ वह अपने जीवन के मकसद को पूरा करने में लगा हुआ था। उसका मकसद था– पूँजीवादी उत्पादन पद्धति को नष्ट करने के लिए मजदूर आंदोलन को सैद्धांतिक आधार मुहैया कराना।

दसियों साल से प्रतिदिन पढ़ने और लिखने के कठोर काम के निशान उसके शरीर पर नजर आ रहे थे। पीठ और शरीर के अन्य हिस्सों में 'पूँजी' पर काम करने के बरसों में उपजे भयानक फोड़ों के घाव बन गए थे। उसकी आत्मा पर अभाव और कठिनाई के अन्य घाव भी बने थे जिनका परिहार समय समय पर शासक वर्ग के बड़े लोगों और अपने खेमे के भी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को चोट पहुँचाने से उत्पन्न संतोष से हो जाया करता था।

सर्दियों में वह अक्सर थक जाता और निढाल पड़ जाता क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ उसकी प्राकृतिक ऊर्जा में कमी आती जा रही थी और उसकी पत्नी उसकी सेहत के बारे में अधिकाधिक परेशान रहा करती। फिर भी वे कार्ल मार्क्स थे। हमेशा की तरह एक ही आवेग के साथ वे मजदूर वर्ग की मुक्ति के लक्ष्य के लिए परिश्रम किए जा रहे थे। इस काम में भी उन्होंने वही पद्धति कायम रखी जो शुरुआती विश्वविद्यालयी जीवन से उनके साथ लगी रही थीः कष्टसाध्य और आलोचनात्मक।

लकड़ी की आरामकुर्सी पर बैठकर बरसों से वे सारे दिन और देर रात तक तीन फ़ुट लम्बी और दो फ़ुट चौड़ी साधारण सी मेज पर मेहनत से लिखाई पढ़ाई करते रहे थे। हरे शेड वाले एक लैम्प, लिखने के कागज और तत्काल काम की कुछेक किताबों के लिए उस मेज पर मुश्किल से जगह थी। इससे ज्यादा की उन्हें जरूरत भी नहीं थी।

पढ़ने का कमरा पहली मंजिल पर था जिसमें बगीचे की ओर खिड़की खुलती थी। जब से डाक्टरों ने धूम्रपान मना कर दिया था तबसे तम्बाकू की गंध तो नहीं आती थी लेकिन पाइप पड़े हुए थे जिनसे बरसों तक वे रात रात जागकर तम्बाकू पीते रहे थे। इनसे उन निद्राहीन रातों की याद बनी रहती थी जो राजनीतिक अर्थशास्त्र के महान ग्रंथों को छानते बिताई गई थीं।

कमरे की दीवार किताबों की आलमारी से ढकी थी, उसमें कल्पना से बाहर किताबें और अखबार ठुंसे हुए थे। उनका पुस्तकालय उनके बराबर के, और निश्चय ही उनसे धनी, बुर्जुआ बौद्धिकों की तरह आक्रामक नहीं था। प्रचंड गरीबी के दिनों में तो अधिकतर उन्होंने ब्रिटिश संग्रहालय के संसाधनों का इस्तेमाल किया था लेकिन बाद में दो हजार[1] के करीब किताबें इकट्ठा हो गई थीं। इनमें सबसे बड़ा हिस्सा अर्थशास्त्र की किताबों का था लेकिन राजनीतिशास्त्र और इतिहास (खासकर फ्रांसिसी) और मुख्य रूप से जर्मन परम्परा के दर्शन के ग्रंथ भी थे। प्रकृति विज्ञान की पुस्तकें भी कुछ कम न थीं।

उनके पास की किताबों में जो विविधता विषयों की थी उससे कम भाषाओं के मामले में न थी। कुल किताबों का लगभग तिहाई जर्मन भाषा में, लगभग चौथाई अंग्रेजी भाषा में तो उससे कुछ ही कम फ्रांसिसी भाषा में थीं। इसके अलावा इतालवी जैसी भाषा में भी कुछ किताबें थीं। लेकिन 1869 के बाद जब उन्होंने ज़ार के साम्राज्य में हो रहे बदलावों के अध्ययन के लिए रूसी भाषा सीखनी शुरू की तो क्रिलिक वर्णमाला की किताबों की संख्या बढ़ने लगी।

---

1. एक शोधकर्ता ने पचहत्तर साल के शोध के बाद 730 पृष्ठों में मार्क्स की पढ़ी किताबों की सूची तैयार की है। उसमें 1,450 किताबों (2,100 जिल्दें) की सूची है। उन दोनों के पास कुल 3,200 जिल्दों में 2,100 किताबें थीं। इसमें 830 किताबों में चालीस हजार पृष्ठों पर हाशिये पर लिखी टिप्पणियों को भी शामिल किया गया है।

उनकी आलमारी में केवल विद्वत्तापूर्ण किताबें ही न थीं। 1878 में उनके अध्ययन कक्ष में *शिकागो ट्रिब्यून* के एक अनाम संवाददाता का आना हुआ था। उसने लिखाः

> 'किसी भी व्यक्ति की परीक्षा उन किताबों के जरिए की जा सकती है जिन्हें वह पढ़ता है। आप खुद ही नतीजा निकाल सकते हैं जब बताऊं कि उड़ती नजर डालने से भी शेक्सपीयर, डिकेन्स, ठैकरे, मोलिएर, रासीन, मोन्तेन, बेकन, गेटे, वोल्तेयर, पेन; अंग्रेजी, अमेरिकी, फ्रांसिसी, सरकारी दस्तावेज; रूसी, जर्मन, स्पेनी, इतालवी आदि भाषाओं में राजनीतिक और दार्शनिक ग्रंथ नजर आए।'

पाल लाफ़ॉर्ग ने भी मार्क्स की साहित्यिक रुचियों और विस्तृत ज्ञान का ऐसा की बयान किया है। उनके अध्ययन की याद करते हुए लाफ़ॉर्ग ने कहा 'मार्क्स के आध्यात्मिक संसार में प्रवेश पाने से पहले आपको उनके ऐतिहासिक खजाने के बारे में जानना होता था।' लिखकर बतायाः

> 'हाइने और गेटे तो उन्हें कंठस्थ थे और बातचीत करते हुए अक्सर उन्हें उद्धृत कर बैठते थे; वे समूची यूरोपीय भाषाओं में कविता के घनघोर पाठक थे। हर साल मूल ग्रीक में वे एस्किलुस को पढ़ जाते थे। वे मानते थे कि एस्किलुस और शेक्सपीयर अब तक के मानव इतिहास की सर्वोत्कृष्ट नाट्य प्रतिभाएँ हैं। –दांते और रॉबर्ट बर्न्स उनके पसंदीदा कवियों में शुमार थे। खासकर अठारहवीं सदी के उपन्यासों के तो वे जबर्दस्त पाठक थे। फ़ील्डिंग का 'टाम जोन्स' उन्हें बेहद पसंद था। जिन आधुनिक उपन्यासकारों को वे अत्यधिक रुचिकर समझते वे थे पाल द काक, चार्ल्स लीवर, अलेक्सांद्र दुमास सीनियर और वाल्टर स्काट की 'ओल्ड मोर्टलिटी' को वे ग्रन्थरत्न मानते थे। रोमांच और हास्य की कथाओं को वे खास तौर पर पसंद करते थे। सर्वान्तेज और बाल्ज़ाक को वे सभी उपन्यासकारों से ऊंचा दर्जा देते थे। डान क्विकजोट में उन्हें शूरवीरता का क्षरणशील महाकाव्य नजर आता जिसके सद्गुणों का मजाक उदीयमान बुर्जुआ विश्व में उड़ाया गया। बाल्ज़ाक की तो वे इतनी तारीफ़ करते थे कि अर्थशास्त्र संबंधी अपनी किताब खत्म करने के तत्काल बाद उनके महान ग्रंथ 'ह्यूमन कामेडी' की समीक्षा लिखना चाहते थे।–मार्क्स सभी यूरोपीय भाषाएँ पढ़ सकते थे।–यह कहावत दुहराना उन्हें पसंद था 'जीवन के संघर्ष में विदेशी भाषा हथियार होती है।'–उन्होंने रूसी सीखनी शुरू की–और छह महीने के भीतर ही इतना अधिकार हो गया कि रूसी कवियों और गद्यकारों को पढ़कर मजा लेने लगे। पुश्किन, गोगोल और श्चेद्रिन उन्हें खासा पसंद आते थे।'

लाफ़ॉर्ग ने अपने पास रखी किताबों से मार्क्स के रिश्ते पर भी विचार किया है। वे 'उनका दिमागी औजार थीं, न कि सुविधा के सामान। वे कहा करते

"ये मेरी गुलाम हैं और मेरी मर्जी के मुताबिक इन्हें मेरे काम आना चाहिए"। वे पन्नों के किनारे मोड़ देते, हाशिये पर पेंसिल से निशान लगाते और समूची लाइन रेखांकित कर देते। किताब पर तो कभी नहीं लिखते लेकिन लेखक के भटकने पर विस्मयबोधक या प्रश्नचिन्ह लगाने से खुद को रोक नहीं पाते। निशान लगाने की इस आदत के चलते उन्हें किसी किताब में जिस अंश की जरूरत पड़ती उसे पाना आसान हो जाता था।'

वे इन किताबों पर इस कदर नजर रखते कि खुद को 'ऐसी मशीन' समझते 'जो इन्हें भकोस जाने और फिर पचाकर दूसरे रूप में सामने लाने के लिए अभिशप्त थे'।

मार्क्स के पुस्तकालय में उनकी लिखी किताबें भी थीं लेकिन आखिरकार वे उतनी न थीं जितनी किताबें लिखने की उनकी योजना थी लेकिन सघन बौद्धिक गतिविधि के कारण जिन्हें अधूरा ही छोड़ दिया था। उनमें 'होली फ़ेमिली' (1845) और 'पावर्टी ऑफ़ फिलासफी' (1847) की प्रतियाँ तो थीं ही, 'मेनिफ़ेस्टो ऑफ़ द कम्युनिस्ट पार्टी' (1848) की भी काफी प्रतियाँ रखी थीं जिसे एंगेल्स के साथ लिखा और 1848 की क्रांतियों के ठीक पहले प्रकाशित कर लिया लेकिन व्यापक प्रसार 1870 के बाद ही हुआ। 'एटीन्थ ब्रूमेर ऑफ़ लुई बोनापार्त' जैसे फ्रांसिसी इतिहास लेखन के साथ ही 'द स्टोरी ऑफ़ द लाइफ़ ऑफ़ लार्ड पामर्स्टन (1853-54) जैसी विवादधर्मी किताबें भी मौजूद थीं। इनके साथ ही 'रिवीलेशंस कनसर्निंग द कम्युनिस्ट ट्रायल इन कोलोन' (1853) या 'सीक्रेट डिप्लोमेटिक हिस्ट्री ऑफ़ द एटीन्थ सेन्चुरी' (1856-57) जैसी तात्कालिक पुस्तिकाओं के साथ ही अल्पज्ञात 'ए कंट्रीब्यूशन टु ए क्रिटीक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनामी' (1859) और 'हेर फ़ोग्ट' (1860) भी पड़ी थीं। ऐसी किताबें भी रखी थीं जिन पर उनको गर्व था मसलन 'कैपिटल' जिसका अनुवाद रूसी और फ्रांसिसी में हो चुका था तथा इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन के महत्त्वपूर्ण सम्भाषण और प्रस्ताव।

इनके साथ ही उन पत्र पत्रिकाओं को गट्ठर बनाकर रखा गया था जिन्हें जवानी के दिनों में संपादित किया था। इनमें शामिल थे– *ड्यूश-फ्रांत्सोजिशे यारबुखेर* (जर्मन-फ्रांसिसी संचयिता); *न्यू राइनिशे जाइटुंग* (नया राइन अखबार) नामक दैनिक जिसका मई 1849 का प्रतिक्रांति की विजय के पहले

का पूरा आखिरी अंक लाल स्याही से छापा गया था; मासिक *न्यू राइनिशे जाइटुंग*; अगले साल का *पोलिटिश-ओकोनामिश रेव्यू*। पुस्तकालय के अन्य हिस्सों में उद्धरणों की दर्जनों नोटबुकें और अपूर्ण पांडुलिपियाँ भरी थीं– हालांकि इनमें से अधिकतर को टांड़ के हवाले कर दिया गया था जहाँ उन सभी परियोजनाओं को जमा रखा था जो जिंदगी के विभिन्न मौकों पर शुरू हुईं लेकिन कभी समाप्त न की जा सकीं। यह समस्त लेखन जिसमें से कुछ 'चूहों की कुतरनी' आलोचना के लिए छोड़ दिए गए थे, बड़ी संख्या में बिखरी नोटबुकों और रजिस्टरों की शक्ल में था।[2]

इनमें वे कागजात भी शामिल थे जिनसे बाद में '1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियाँ (1844)' और 'जर्मन विचारधारा (1845-46)' तैयार हुईं। बीसवीं सदी में इन दोनों सैद्धांतिक किताबों को सबसे अधिक पढ़ा गया और उन पर तर्क वितर्क किया गया। मार्क्स ने तो 'कोई भी काम' तब तक प्रकाशित नहीं किया, 'उनको तब तक बार-बार संशोधित किया जब तक उनके लायक सर्वोत्तम रूप नहीं मिल गया' और 'पांडुलिपियों को अधूरा छोड़ देने से बेहतर उन्हें जला देना समझा'। उन्होंने निश्चय ही इनकी प्रसिद्धि पर अचम्भा जाहिर किया होता और उनके प्रचार से असंतुष्ट हुए होते।

बहरहाल सबसे मोटी और महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियाँ 'पूँजी' के आरम्भिक मसौदों से जुड़ी थीं। इनमें 'ग्रुंड्रिस' (1857-58 की 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना की बुनियादें') से लेकर 1881 तक लिखे अंतिम नोटों तक शामिल थे। मार्क्स और एंगेल्स की आपसी चिट्ठी पत्री को वे वैसे तो 'पार्टी संग्रहालय' कहते थे लेकिन असल में उसे एंगेल्स के घर पर रखा गया था।

मार्क्स के ठसाठस भरे अध्ययन कक्ष में बीच में चमड़े का सोफा रखा हुआ था जिस पर आराम करने के लिए कभी कभी वे लेट जाते थे। दिमाग को आराम देने की उनकी नियमित आदत में शुमार था एक कोने से दूसरे कोने तक चहलकदमी करना। लाफ़ॉर्ग के अनुसार तो 'कहा जा सकता है

---

2. मार्क्स के देहांत के एक साल बाद 16 फ़रवरी 1884 को एंगेल्स ने लौरा लाफ़ॉर्ग को लिखा 'आखिर हम पुराने स्टोर की सफाई में कामयाब हुए। कई चीजें मिलीं जिन्हें सुरक्षित रखना होगा लेकिन आधा टन पुराने अखबारों को छांटना सम्भव नहीं है।–पांडुलिपियों में "पूँजी" का पहला रूप मिला और सैकड़ों पृष्ठों में "थियरीज ऑफ़ सरप्लस वैल्यू" भी मिला'।

कि चहलकदमी करते हुए भी वे काम करते थे, बीच में अल्प काल के लिए बैठकर वह सब लिखते जो चहलकदमी करते हुए सोचा होता'। उन्हें याद आया कि मार्क्स को 'बातचीत करते हुए भी टहलना पसंद था, कभी कभी रुक जाते जब व्याख्या अधिक जीवंत हो जाती या बातचीत गम्भीर हो जाती।' उस समय के एक और नियमित मिलने वाले सज्जन ने बताया कि उनकी आदत थी कि 'बातचीत जब कभी रुचिकर होती तो वे कमरे में इस कोने से उस कोने टहलने लगते मानो कसरत करने के लिए वे स्कूनर के डेक पर तेज चल रहे हों'।

एक और मेज उनकी डेस्क के सामने खड़ी थी। कभी-कभार आने वाला कोई भी उस पर रखे कागजों की बेतरतीबी से भौंचक्का हो जाता लेकिन जो भी मार्क्स को अच्छी तरह जानता था उसे मालूम था कि यह बेतरतीबी बस सतही है।

'सब कुछ उसकी वांछित जगह पर था ताकि उनको जिस भी किताब या नोटबुक की जरूरत हो वह सीधे उनके हाथ में आ जाए। बातचीत के दौरान भी अक्सर वे रुक जाते और जिस वक्तव्य या संख्या का जिक्र किया होता उसे किताब खोलकर दिखा देते। वे और उनका अध्ययनकक्ष अलग अलग नहीं थे। इस कक्ष में मौजूद कागज और किताबें उसी तरह उनके नियंत्रण में थीं जिस तरह उनके शरीर के अंग।'

कमरे में आखिरी फ़र्नीचर लकड़ी का बड़ा बक्सा था जिसमें कई दराजें थीं। इनमें वे कामरेड विल्हेल्म वोल्फ़ जैसे अपने प्रिय लोगों की फोटुओं को सुरक्षित रखते जिन्हें 'पूँजी' समर्पित की गई थी। उनके इस अध्ययन कक्ष में बहुत दिनों से जोव की आवक्ष मूर्ति और गाटफ्रीड लाइबनित्ज़ (1717-83) के घर की दीवार के दो पत्थर रखे हुए थे। ये दोनों चीजें मार्क्स को उनके डाक्टर और अनेक वर्षों के प्रिय मित्र लुडविग कुलेगमान ने 1867 के क्रिसमस और 1870 में उनके बावनवें जन्मदिन के अवसर पर उपहार में दी थीं। उन्हें भी ये चीजें तब मिली थीं जब अठारहवीं सदी के इस महानतम जर्मन दार्शनिक का घर हनोवर में तोड़ा गया था।

मार्क्स और उनका परिवार उत्तरी लंदन में 41 मेटलैंड पार्क के खुली छत वाले एक घर में रहते थे। पिछले दस बरस से 1 नंबर के बड़े और महंगे आवास में किराये पर रहने के बाद इस नए घर में वे और परिवार 1875 में

मकान बदलकर चले आए थे। उस समय उनके एकल परिवार में मार्क्स और उनकी पत्नी जेनी, सबसे छोटी बेटी और पिछले चालीस साल से साथ रहने वाली घर की सेविका हेलेन देमुथ थे। तीन कुत्ते भी थे जिनसे मार्क्स को बहुत प्यार था। टाडी, ह्विस्की और अज्ञात नाम वाले 'जानवर भी थे जो किसी खास नस्ल के तो नहीं थे (लेकिन) घर के महत्त्वपूर्ण सदस्य थे'।

1870 में व्यवसाय से सेवा निवृत्त होने के बाद एंगेल्स ने मानचेस्टर वाला घर छोड़ दिया और लगभग एक किलोमीटर दूर 122 रीजेन्ट'स पार्क रोड पर आवास लिया। बहुत पहले 1844 से उनके राजनीतिक संघर्षों के साझीदार और सबसे सच्चे दोस्त से दूर वे कैसे रह सकते थे![3]

मार्क्स की बहुतेरी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते 'अनेक बरसों से (उनके) चिकित्सकीय सलाहकारों ने नैश जागरण की पूरी तरह से मनाही कर रखी थी'। इसके चलते दिन भर वे अनथक परिश्रम करते, खासकर 'पूँजी' को पूरा कर देने के लिए जिसके दूसरे खंड की तैयारी 1867 में पहले खंड के प्रकाशन के तुरंत बाद से चल रही थी।

मार्क्स अपने समय की सारी प्रमुख राजनीतिक और आर्थिक घटनाओं को भी आलोचनात्मक निगाह से देख रहे थे, उनसे उत्पन्न नए हालात का कयास लगाने की कोशिश कर रहे थे जिनमें मजदूर वर्ग की मुक्ति हो सकती। उनका विश्वकोशीय मस्तिष्क अगाध जिज्ञासा से भरा हुआ था इसलिए आखिरकार उन्होंने नवीनतम वैज्ञानिक हलचलों से खुद को बाखबर रखना और निरंतर नवीकृत करना शुरू किया। इसी वजह से जीवन के आखिरी सालों में मार्क्स ने गणित, भौतिकी, भूगर्भ विज्ञान, खनिजशास्त्र, कृषि, रसायन और भौतिकी की ढेर सारी किताबों से नोट और उद्धरण जमा करके दर्जनों नोटबुकें भर डालीं। पत्रिकाओं के लेखों के अतिरिक्त उन्होंने संसद के दस्तावेज, सांख्यिकी तथा सरकारी रिपोर्टें और प्रकाशन, मसलन जांच रपटों वाली ब्लू बुक छान मारे। उनका यह अध्ययन अनेक भाषाओं में होता था और इसमें शायद ही कभी व्यवधान आया हो। एंगेल्स को भी इसका पछतावा था। उन्होंने कहा कि 'बड़ी मुश्किल से ही' वे उन्हें 'अपना कमरा छोड़ने के लिए मना पाये'।

---

3. जुलाई 1870 में फ्रेडरिक एंगेल्स ने सिलाई का धागा बनाने वाली कंपनी एर्मेन एंड एंगेल्स से अपना हिस्सा बेच दिया जिससे खुद और मार्क्स परिवार की ठीक ठाक जिंदगी चलाने लायक धन प्राप्त हुआ।

ऐसे कुछेक मामलों के अलावे वे केवल नियमित व्यवधान और तयशुदा मुलाकातों के लिए ही अपने काम को छोड़कर उठते।

देर शाम को वे एक ओवरकोट डालते और नजदीक के ही मेटलैंड पार्क पहुँच जाते। उन्हें सबसे बड़े नाती जानी के साथ वहाँ टहलना अच्छा लगता। कभी कभी थोड़ा और दूर हैम्पस्टीड हीथ चले जाते जहाँ पूरे परिवार के साथ कई खुशी भरे रविवार गुजारे थे। सबसे छोटी बेटी की अभिनेत्री दोस्त मरियान कोमिन ने संक्षेप में वह दृश्य दर्ज किया जो अक्सर दिखाई देताः

> 'कई बार मैं और एलिनोर मार्क्स बैठक की गरमी देने वाली आग के सामने कालीन पर बैठे मद्धम रोशनी में बात कर रहे होते कि मुख्य दरवाजा आहिस्ता बंद होता और उसके तुरंत बाद काला ओवरकोट और पतली फ़ेल्ट हैट पहने (उनकी पुत्री के शब्दों में पूरी दुनिया को षड़यंत्रकारियों के समूहगान की तरह देखते हुए) डाक्टर की छाया खिड़की के पास से गुजरती। अंधेरा होने पर ही वे वापस लौटते।'

तफ़रीह का एक और समय था विलियम शेक्सपियर (1564-1616) के नाटक 'मच ऐडो एबाउट नथिंग' के एक चरित्र के नाम पर गठित तथाकथित डागबेरी क्लब की बैठकें। इनमें शेक्सपियर की रचनाओं का पाठ होता और एंगेल्स, घनिष्ठ परिचितों तथा मार्क्स की पुत्रियों के दोस्तों के साथ रात का भोजन होता। इन बैठकों के बारे में मार्क्स अपनी अनुभूति का वर्णन करने के लिए उसी मारक व्यंग्य का इस्तेमाल करते हैं जिससे वे अपने सैद्धांतिक प्रतिपक्षियों को धराशायी कर दिया करते थे– 'बड़ी विचित्र बात है कि बिना संग साथ के आप अच्छी तरह रह भी नहीं सकते और जब आपको संग साथ मिल जाता है तो उससे पीछा छुड़ाने की जबर्दस्त कोशिश शुरू हो जाती है।'

मार्क्स के घर में परेशानियाँ तो बहुत थीं लेकिन इनके चलते विभिन्न देशों के आगंतुकों का स्वागत कम न हुआ। ये लोग अत्यंत सम्मानित इस अर्थशास्त्री और मशहूर क्रांतिकारी से प्रत्यक्ष बातचीत के लिए आते थे। 1881 के आगंतुकों में क्रीमियावासी निकोलाई ज़ाइबेर (1844-81), मास्को विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर निकोलाई काब्लुकोव (1849-1919), जर्मन पत्रकार और भविष्य के सांसद लुई वाइरेक (1851-1921), लम्बे दिनों से सामाजिक जनवादी रहे फ्रेडरिक फ्रिट्शे (1825-1905) और रूसी लोकप्रियतावादी लियो हार्टमान (1850-1908) शामिल थे। वहाँ अक्सर आने वाले अन्य लोगों में जर्मनी की समाजवादी पार्टी से जुड़े पत्रकार कार्ल

हिर्श (1841-1900), उसी साल के आरम्भ में इंग्लैंड में बनी डेमोक्रेटिक फ़ेडरेशन के संस्थापक हेनरी हिंडमैन (1842-1921) और मूलतः प्राग के युवा समाजवादी कार्ल काउत्सकी (1854-1938) भी शामिल थे। काउत्सकी तो लंदन आए ही थे मार्क्स और एंगेल्स से रिश्तों की बदौलत राजनीति की समझ बढ़ाने के लिए और आगे चलकर वे मजदूर आंदोलन के प्रभावी सिद्धांतकार बनने थे।

मार्क्स के सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनके व्यक्तित्व के आकर्षण से बच नहीं पाता था या उनकी शारीरिक छटा से भी मुग्ध न होना कठिन था। स्काटिश नेता माउंटस्टुअर्ट एलफ़िंस्टन (1826-1906) से उनकी मुलाकात 1879 के आरम्भ में हुई थी। उन्हें मार्क्स की 'नजर तो तीक्ष्ण लेकिन शेष समूचा व्यक्तित्व खुशनुमा लगा। ऐसा तो एकदम नहीं लगा जैसे बच्चों को खा जाने वाला भकाऊं हो- जैसी छवि पुलिस ने उनकी बना रखी थी'।

एडुअर्ड बर्नस्टाइन भी मार्क्स की मानवीयता और सादगी से चकित रह गए थे– 'मुझे उम्मीद थी कि भारी भरकम और अत्यंत उत्तेजक बुजुर्ग से देखादेखी होगी। इसकी जगह मुझे मिले सफेद बालों वाले ऐसे व्यक्ति जिनकी काली आंखों में दोस्ताना मुस्कान थी और बोलने में सहानुभूति भरी थी'।

काउत्सकी को याद था कि 'मार्क्स में एक बुजुर्ग की गरिमा का भाव था', कि उनके मुख पर 'लगभग पितृवत मोहक मुस्कान' बनी रहती थी और कि 'हमेशा सुसज्जित' एंगेल्स के विपरीत वे 'बाहरी रूपरंग से उदासीन' रहते थे।

मरियान कोमिन ने उनकी मनोवृत्ति के बारे में भली तरह बताया हैः

> '(उनका) व्यक्तित्व असाधारण रूप से जोरदार और प्रभावी था। उनका सिर बड़ा था, लम्बे सफेद बालों से भरा हुआ था जिससे मिलती जुलती झबरी दाढ़ी और मूंछ थे; आंखें थोड़ी छोटी और काली थीं, उनमें उत्सुकता, वेधकता और व्यंग्य के साथ किंचित हास्य खेलता रहता था;–श्रोता के रूप में वे रुचिकर थे और कभी आलोचना नहीं करते थे; आसपास चल रही मजेदार बातों में दिल से शरीक हो जाते थे, अगर कोई हंसी की खास बात हो तो ठठाकर हंसते थे और हंसते हंसते उनके गालों पर से आंसूं बहने लगते थे; उम्र में तो हम सबसे बड़े थे लेकिन दिल से हम सबकी तरह ही युवा थे।'

अगर मार्क्स के घर में अक्सर हलचल जारी रहती थी तो चिट्ठियों का बक्सा भी दुनिया के विभिन्न देशों के कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों के साप्ताहिक पत्रों से हमेशा भरा रहता था। चिट्ठियाँ भेजने वालों को इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन के इस नेता से तत्कालीन प्रमुख राजनीतिक घटनाओं पर सलाह मशविरे की उम्मीद होती थी और वे उनसे खास खास फैसलों या कार्यवाही की दिशा के बारे में सुझाव मांगते।

मार्क्स के उन दिनों की पृष्ठभूमि में इंग्लैंड का धुंधलका भरा और बारिश का मौसम था। उन्होंने फ़रवरी 1880 में निकोलाई डैनिएल्सन (1844-1918) को लिखा कि हालांकि उनकी 'सेहत राम्सगेट से लौटने (के बाद) से आम तौर पर सुधर (रही थी) लेकिन महीनों तक चलने वाले इस घृणित मौसम' के चलते उन्हें 'लगातार ठंड और खांसी बने हुए हैं और (जिनसे) नींद में भी व्यवधान रहता है'। खतरे की बात थी कि जेनी की हालत उन सर्दियों में खराब होती जा रही थी और वसंत आने के साथ मार्क्स को नए विशेषज्ञ ब्रायन डोंकिन (1842-1927) को बुलाना पड़ा। इससे पत्नी के इलाज की उम्मीद पैदा हुई।

अपने रूसी दोस्त डैनिएल्सन को उन्होंने एक और दुखद घटना की सूचना दी। जुलाई 1880 में फ्रांसिसी सरकार के एक राजक्षमा आदेश से उन सैकड़ों क्रांतिकारियों को देश वापसी की अनुमति मिल गई जिन्हें 1871 के पेरिस कम्यून के बाद के दमन के चलते विदेश भागना पड़ा था। हालांकि इस खबर से मार्क्स को खुशी ही हुई लेकिन निजी परिणाम अनिवार्य रूप से दुखदायक निकले। उनकी सबसे बड़ी पुत्री जेनी से दस साल पहले विवाहित पत्रकार और कम्यून के योद्धा चार्ल्स लांग्वे को जार्ज क्लीमेंस्यू (1841-1929) द्वारा स्थापित क्रांतिकारी दैनिक *ल जस्टिस* (न्याय) का सहायक संपादक का पद प्रस्तावित किया गया और इसलिए वे बच्चों के साथ फ्रांस की राजधानी लौट गए। इस जुदाई से मार्क्स और उनकी पत्नी को बहुत कष्ट हुआ क्योंकि 'तीनों नाती–आनंद के, जीवन के अक्षय स्रोत थे'।

आगामी महीनों में उन्हें लगातार इन नातियों की कमी खलती रही। मार्क्स को कभी खुशी, कभी उदासी का अहसास होता रहा। जेनी को लिखे पत्रों में वे बच्चों का समाचार हमेशा पूछतेः

'जबसे तुम गई हो तभी से बोरियत होती रहती है– तुम्हारे और जानी

तथा हर्रा के बिना! और 'चाय' महाशय![4] कभी कभी मैं खिड़की की तरफ भागता हूँ जब उन बच्चों की तरह के बच्चों की आवाज सुनता हूँ। एक पल के लिए भूल जाता हूँ कि वे नन्हें बालक समुद्र के पार चले गए हैं।'

अप्रैल के अंत में जब जेनी ने चौथी संतान, नतिनी को जन्म दिया तो मार्क्स ने मजाक करते हुए उसे बधाई दी और लिखा कि उनकी 'जनाना' को उम्मीद है कि 'नवागंतुक' से 'बेहतर आधी आबादी' में बढ़ोत्तरी होगी। आगे और जोड़ा 'जहाँ तक मेरा मामला है इतिहास के इस मोड़ पर पैदा होने वाले बच्चों में मैं मर्द को पसंद करता हूँ। उनके समक्ष अब तक के सभी पुरुषों के मुकाबले सर्वाधिक क्रांतिकारी समय का द्वार खुला हुआ है।'

उनकी इन बातों में राजनीतिक उम्मीदों के साथ उनकी पीढ़ी के लोगों में व्याप्त पूर्वाग्रह भी घुले मिले हैं। इनके जरिए उनके दो बड़े सरोकार सामने आते हैं। पहला सरोकार नितांत निजी था। उन्हें पछतावा था कि वे पेरिस में अपनी बच्ची की कोई मदद नहीं कर पा रहे हैं। इस समय वह वैसा ही तकलीफ से भरा जीवन बिता रही थी जिससे उनको अपने बहुत समय तक चली तकलीफों की याद हो आई। उसको लिखी चिट्ठी में उन्होंने पत्नी की ओर से 'सब सम्भव मंगल चीजों' की शुभाकांक्षा सम्प्रेषित की लेकिन उन्हें नहीं लग रहा था कि इन 'मंगल कामनाओं' से 'अपनी असहायता व्यक्त करने के अतिरिक्त और' क्या किया जा सकता है। उनका दूसरा राजनीतिक सरोकार इस बात का पछतावा था कि अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के नए और जोशीले संघर्षों का अनुभव लेने के लिए वे जीवित न रहेंगे। लिखा कि

---

4. इन्हीं संक्षिप्त नामों से वे अपने नातियों, ज्याँ, हेनरी और एडगर लांग्वे को बुलाते थे। एडगर ने बाद में याद किया कि नाना 'बच्चों के साथ ऐसे खेलते मानो वे भी बच्चे हों। इसकी चिंता तनिक भी नहीं करते कि इससे उनकी बात का वजन घट जाएगा। गलियों में उन्हें "पापा मार्क्स" कहकर बुलाया जाता। उनकी जेब में हमेशा बच्चों को देने के लिए मिठाई भरी रहती। वार्धक्य में उनका प्रेम नातियों को अधिक मिलने लगा था'। बेबेल को भी याद है कि मार्क्स 'बच्चों के साथ खेलने का तरीका जानते थे और अपने नातियों को बहुत प्यार करते थे'। लीबक्नेख्त को याद है कि 'बच्चों का साथ मार्क्स की जरूरत थी। उनके साथ खेलकर वे ताजादम हो जाते थे'। हिंडमैन ने भी बताया है कि 'बच्चे उन्हें पसंद करते थे और उनके साथ दोस्तों की तरह खेलते थे'।

'बुरी बात इस समय "बूढ़ा" होना है जिससे देखने की जगह आप कयास लगाने में ही सक्षम रह जाते हैं।'

दुर्भाग्य की बात कि ये सभी समस्याएँ बदतर होती गईं। जून के शुरू में मार्क्स ने स्विंटन को सूचित किया कि पत्नी की बीमारी 'अधिकाधिक घातक प्रकृति ग्रहण करती' जा रही है। उनको भी नई गड़बड़ियों को झेलना पड़ रहा था और पाँव में गठिया के चलते तुर्की स्नान करना मजबूरी हो गया। इसके अतिरिक्त उनको बुरी तरह 'अनंत' खांसी से जूझना पड़ रहा था हालांकि अब वह 'तेजी से खत्म होती' महसूस हो रही थी। बड़ी पुत्री और उसके बच्चों का अभाव बुरी तरह खल रहा था। 'कोई दिन ऐसा नहीं बीतता जब तुम्हारी और प्यारे बच्चों की याद न आती हो'। जानी के लिए उन्होंने जोहान्न वोल्फ़गांग वान गोएथे (1749-1832) की 'रेनार्ड द फ़ाक्स' की एक प्रति भेजी और पूछा कि 'बेचारे बच्चे' को 'पढ़कर सुनाने के लिए कोई है या नहीं'। 1881 का पूर्वार्ध इन्हीं कष्टों में बीता। उत्तरार्ध तो और बुरा बीतने वाला था।

2. मानवशास्त्र और गणित के बीच

इन सबके बावजूद जब कभी परिस्थितियाँ इजाजत देतीं मार्क्स अपना काम शुरू कर देते। उनके कुछ जीवनी लेखकों का दावा है कि उनकी जिंदगी के अंतिम वर्षों में उनकी बौद्धिक उत्सुकता और सैद्धांतिक कुशाग्रता मंद पड़ गए थे लेकिन इसके विपरीत अब भी वे न केवल अपना शोध जारी रखे हुए थे बल्कि उसे नए क्षेत्रों तक विस्तारित भी कर रहे थे।[5]

---

5. फ्रांज़ मेहरिंग ने कहा कि मार्क्स के जीवन के अंतिम दशक को 'धीमी मौत' कहना 'बढ़ा चढ़ाकर बोलना' है लेकिन उन्होंने यह गलत बात भी कही कि '1878 के बाद अपने मुख्य काम को पूरा करने के अलावा उन्होंने कुछ नहीं किया'। 1923 में डेविड रियाज़ानोव ने कहा कि 'हालांकि 1881 से 1883 के बीच रचनात्मक काम की उनकी ऊर्जा कुछ घट गई थी लेकिन शोध की उनकी भूख और क्षमता में कभी कोई कमी नहीं आई'। 1929 में कार्ल फ़ोरलैंडर ने लिखा कि 'जो आदमी जल्दी ही परिपक्व हो गया था लेकिन जिसे बहुतेरे कष्ट झेलने पड़े उस पर शारीरिक बुढ़ापा बहुत सारे अन्य लोगों के मुकाबले जल्दी आ गया'। साथ ही जोड़ा '1878 के बाद से काम करने में अक्सर और अधिकाधिक अक्षम महसूस करने लगे थे'। दस साल बाद इसाइया बर्लिन ने यही दुहराया 'उनका लेखन घटता गया। उनकी शैली अपाठ्य और अबूझ होती गई'। सही है कि अंतिम दौर में मार्क्स के लिए लेखन कष्टकर और पीड़ादायी होता गया लेकिन सैद्धांतिक रूप से वह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

फ़रवरी में मार्क्स ने डैनिएल्सन को लिखा 'भयंकर पत्राचार जनित ऋण मेरे सिर पर चढ़ा हुआ है'। इसका बहुत बड़ा कारण था कि वे अपने नए अध्ययनों में डूबे हुए थे और उनका संकल्प था कि 'तमाम देशों से और खासकर अमेरिका से (उन्हें) भेजी गई सरकारी खाता बही के जखीरे से जूझकर पार पा लेंगे'।

दिसम्बर 1880 और जून 1881 के बीच मार्क्स की शोध संबंधी रुचि के केंद्र में एक और अनुशासन, मानवशास्त्र, बना रहा। यह अध्ययन उन्होंने एक अमेरिकी मानवशास्त्री लेविस मोर्गन (1818-81) की रचना 'एनशिएन्ट सोसाइटी' से शुरू किया। इसे रूसी नृजाति-विज्ञानी मैक्सिम कोवालेव्सकी (1851-1916) उत्तरी अमेरिका की अपनी यात्रा से ले आए थे और छपने के दो साल बाद मार्क्स के पास भेजा था।

इसमें मार्क्स को सबसे अच्छी बात यह लगी कि मोर्गन ने उत्पादन और तकनीक संबंधी कारकों को सामाजिक प्रगति की पूर्वशर्त के बतौर शामिल किया था। तत्काल उन्होंने घनी लिखावट में सौ पृष्ठ भर डाले। इनको मिलाकर बने जखीरे को ही 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' के नाम से जाना जाता है। उनमें मोर्गन की किताब के अतिरिक्त वकील और इंडोनेशिया के जानकार जेम्स मनी की किताब 'जावा, ऑर हाउ टु मैनेज ए कोलोनी' (1861); सीलोन के सुप्रीम कोर्ट के अध्यक्ष जान फीयर (1825-1905) की किताब 'द आर्यन विलेज इन इंडिया ऐंड सीलोन' (1880); इतिहासकार हेनरी मेन (1822-1888) की किताब 'लेक्चर्स ऑन द अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंस्टीच्यूशंस' (1875) के उद्धरण भी सौ पृष्ठ में शामिल थे। मार्क्स ने इन लेखकों का जिस तरह तुलनात्मक मूल्यांकन किया है उससे लगता है कि यह सारी सामग्री उन्होंने कम ही समय में एकत्र कर ली थी। उनकी कोशिश थी कि इस काम को जल्दी खत्म कर डालें।

इससे पहले के शोध में भी मार्क्स ने अतीत के समाजार्थिक रूपों की परीक्षा करके उन पर टिप्पणी की थी। इसका सबूत 'जर्मन विचारधारा' के पहले भाग, ग्रुंड्रिस में 'पूँजीवादी उत्पादन से पहले के रूप' शीर्षक लम्बे अनुभाग और 'पूँजी' के पहले खंड से मिलता है। 1879 में कोवालेव्सकी की किताब 'कॉमन लैंड ओनरशिप' को रूसी में पढ़ने पर एक बार फिर वे इस

विषय की ओर लौटे थे। लेकिन 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' में ही उन्होंने इस विषय पर ताजा शोध के साथ गहन संवाद कायम किया।

इस काम को करते हुए उनके सामने लक्ष्य था ऐसे ऐतिहासिक युगों, भौगोलिक क्षेत्रों और प्रासंगिक मुद्दों के बारे में अपनी जानकारी को विस्तारित करना जिन्हें वे राजनीतिक अर्थशास्त्र की अपनी आलोचना के काम को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी मानते थे। इसके अतिरिक्त इस छानबीन से मार्क्स को सुदूर अतीत की सामाजिक विशेषताओं और संस्थाओं के बारे में ठोस जानकारी प्राप्त हुई। उनका परिचय ऐसी खास सामग्री से हुआ जो 1850 और 1860 दशक की पांडुलिपियों को तैयार करते समय उन्हें उपलब्ध नहीं हो सकी थी। अंतिम बात कि इस शोध से मार्क्स अपने समकालीन सर्वाधिक विशिष्ट विद्वानों के हालिया सिद्धांतों से भी परिचित हुए।

पर्याप्त ऊर्जा और समय लेने वाले इस अध्ययन में मार्क्स उसी दौर में जुटे हुए थे जब उन्हें 'पूँजी' का दूसरा भाग पूरा करना था। मानव विज्ञान में खुद को लगा देने का उनका संकल्प महज किसी बौद्धिक उत्सुकता का परिणाम नहीं था। इसका गहरा राजनीतिक-सैद्धांतिक मकसद था। गहन ऐतिहासिक ज्ञान के आधार पर वे वास्तविकता के सबसे करीब के उस क्रम को रचना चाहते थे जिस क्रम में उत्पादन की विभिन्न पद्धतियाँ इतिहास में एक के बाद एक आती रही हैं। उन्हें विश्वास था कि उनके इस शोध से सम्भावित कम्युनिस्ट सामाजिक रूपांतरण संबंधी सिद्धांत को मजबूत ऐतिहासिक आधार मिल जाएगा।

इसलिए 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' में मार्क्स ने प्रागैतिहास के बारे में, पारिवारिक बंधनों के विकास के बारे में, स्त्रियों की स्थिति के बारे में, संपत्ति संबंधों की उत्पत्ति के बारे में, प्राक-पूँजीवादी समाजों के सामुदायिक आचरण के बारे में, राजसत्ता के गठन और उसकी प्रकृति के बारे में, व्यक्ति की भूमिका के बारे में तथा कुछ मानवशास्त्रीय सिद्धांतों के नस्ली निहितार्थों और उपनिवेशवाद के असर जैसे आधुनिक मसलों के बारे में मजेदार टिप्पणियों और उद्धरणों को एकत्र किया।

प्रागैतिहास और पारिवारिक बंधनों के विकास के खास सवाल पर मार्क्स ने मोर्गन की किताब से अनेक बहुमूल्य निष्कर्ष निकाले। हिंडमैन ने याद किया 'मार्क्स को जब लेविस एच मोर्गन ने अपनी किताब "एनशिएन्ट

सोसाइटी" के जरिए संतोषजनक तौर पर साबित कर दिया कि पुरानी कबीलाई व्यवस्था और प्राचीन समाज में सामाजिक इकाई परिवार नहीं, वंश था तो मार्क्स ने तत्काल अपनी पुरानी मान्यताओं को तिलांजलि दे दी।'

आदिम लोगों की सामाजिक संरचना संबंधी मोर्गन के शोध के चलते ही मार्क्स गोत्र संबंधी जर्मन इतिहासकार बार्थोल्ड नीबूहर (1786-1831) की 'रोमन इतिहास' (1811-12) में प्रस्तुत व्याख्या समेत तमाम पारम्परिक व्याख्याओं पर विजय पाने में कामयाब हुए। पहले की सारी परिकल्पनाओं के विपरीत मोर्गन ने दिखाया कि वंश को 'एकनिष्ठ विवाह आधारित परिवार के बाद उत्पन्न' और 'परिवारों के एक समूह' का नतीजा मानना भारी गलती रही है। प्रागैतिहास और प्राचीन समाज के अपने अध्ययन से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पितृसत्तात्मक परिवार को समाज की मूलभूत बुनियादी इकाई के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि उसे सामाजिक संगठन का ऐसा रूप मानना चाहिए जो आम विश्वास के मुकाबले अधिक अर्वाचीन है। यह संगठन 'जीवन की कठिनाइयों का अकेले मुकाबला करने के लिहाज से बहुत कमजोर' है। इसके मुकाबले अमेरिका के मूलवासियों में प्रचलित सिंदियास्मिक किस्म के परिवार की मौजूदगी मानना अधिक विश्वसनीय होगा।

दूसरी ओर मार्क्स ने लगातार मेन से विवाद किया जिन्होंने 'लेक्चर्स ऑन अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंस्टीच्यूशंस' में कहा कि 'निजी परिवार' ही 'वह आधार है जिस पर कुल और गोत्र का विकास होता है'। विक्टोरियाई युग को प्रागैतिहास में ले जाकर इतिहास के तीर को उलट देने की इस कोशिश से मार्क्स की चिढ़ इतनी गहरी थी कि वे कहने को मजबूर हुए कि यह 'बंदरदिमाग अंग्रेज वंश से नहीं बल्कि पितृसत्ता से शुरू करता है जो बाद में मुखिया बना- क्या बेवकूफी है!' उनका उपहास भाव धीरे धीरे चरम पर पहुँच जाता है 'कुल के बावजूद मेन के दिमाग से अंग्रेज निजी परिवार बाहर नहीं निकल सकता।' वे 'रोमन "पितृसत्तात्मक" परिवार को चीजों की शुरुआत में ढोकर ले जाते हैं।' मार्क्स ने फीयर को भी नहीं बख्शा और उनके बारे में कहा 'यह गधा सब कुछ का आधार निजी परिवार को बना देता है।'

परिवार संबंधी धारणा पर मोर्गन की टिप्पणियों के चलते मार्क्स को कुछ और भी सोचने का मौका मिला क्योंकि 'फ़ेमिली' (परिवार) शब्द के 'मूल अर्थ' का, जो फ़ेमुलस या नौकर शब्द से जुड़ा हुआ है, 'कोई संबंध विवाहित

जोड़े या उनके बच्चों से नहीं है, बल्कि उन गुलामों और सेवकों के समूह से है जो उनके हित में श्रम करते थे और वे परिवार के बुजुर्ग पुरुष मुखिया की मातहती में होते थे।' इस पर मार्क्स ने टीप लिखीः

'आधुनिक परिवार में न केवल गुलामी के बल्कि भूदासता के बीज भी मौजूद होते हैं क्योंकि इसमें शुरू से ही कृषि सेवाओं से जुड़ाव रहा है। इसमें लघुरूप में उन सभी शत्रुताओं के बीज मौजूद रहते हैं जो बाद में समाज और उसके राज्य में व्यापक तौर पर विकसित होते हैं।—परिवार के अन्य रूपों से अपना अलग अस्तित्व बनाए रखने के लिए एकनिष्ठ परिवार को ऐसे घरेलू वर्ग की जरूरत थी जो सर्वत्र सीधे गुलाम हुआ करते थे।'

पूरक के बतौर अपने विचारों को विकसित करते हुए मार्क्स ने अलग से लिखा कि 'घर, जमीन और रेवड़ में संपत्ति' निश्चित रूप से 'एकनिष्ठ परिवार' के साथ जुड़ी हुई है। असल में जैसा 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' में लिखा है यही इतिहास का आरम्भ था अगर वह 'वर्ग संघर्ष का इतिहास' है।

'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' (1884) में एंगेल्स ने 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' के मार्क्स के विश्लेषण को पूरा किया। इस किताब को लेखक ने 'अभिलाषा की पूर्ति' कहा है और 'जो काम पूरा करना' उनके 'दिवंगत मित्र' को न बदा था उसका 'एक तुच्छ विकल्प' मात्र माना है। उनका कहना है कि

> 'किसी एक सेक्स द्वारा दूसरे सेक्स को पराधीन बनाना सेक्सों के बीच ऐसे टकराव की घोषणा है जो अब तक के समूचे इतिहास में देखा नहीं गया। 1846 में मैंने और मार्क्स ने मिलकर जो काम किया था उसकी अप्रकाशित पुरानी पांडुलिपि में यह लिखा मिला– "पहला श्रम विभाजन बच्चे पालने के सवाल पर स्त्री और पुरुष के बीच पैदा हुआ"। और इसमें आज जोड़ सकता हूँ कि इतिहास में जो पहला वर्ग विरोध प्रकट होता है वह एकनिष्ठ विवाह में पुरुष और स्त्री के बीच के विरोध के विकास का अनुवर्ती होता है और पहला वर्ग उत्पीड़न भी पुरुष द्वारा स्त्री का होता है। एकनिष्ठ विवाह सभ्य समाज का वह कोशिकीय रूप (है) जिसमें हम उन विरोधों और अंतर्विरोधों का अध्ययन कर सकते हैं जो बाद में पूरी तरह विकसित हुए।'

मार्क्स ने भी पुरुष और स्त्री की समता संबंधी मोर्गन की बातों पर गहराई से ध्यान दिया। मोर्गन का कहना था कि यूनानी सभ्यता से पहले के प्राचीन समाजों में स्त्रियों के साथ बरताव और आचरण के मामले में अधिक प्रगतिशीलता थी। मार्क्स ने मोर्गन की किताब के कुछ ऐसे अंशों की नकल

तैयार की जिनसे पता चलता था कि कैसे ग्रीक लोगों में 'वंश परम्परा को स्त्री के सिरे से देखने की जगह पुरुष के सिरे से देखने का नया चलन शुरू होने के कारण पत्नी और स्त्री की हैसियत और अधिकारों को नुकसान पहुँचा'। मोर्गन ने ग्रीस की सामाजिक व्यवस्था के बारे में बड़ी नकारात्मक राय जाहिर की। 'ग्रीक लोग अपनी सभ्यता के उत्कर्ष के समय भी औरतों के साथ बरताव के मामले में बर्बर बने रहे; उनकी शिक्षा अत्यंत सतही थी, –उनकी हीनावस्था को उनके दिल में सिद्धांत की तरह बिठाया गया और आखिरकार औरतों ने खुद इस बात को तथ्य की तरह स्वीकार कर लिया'। इसके अतिरिक्त भी 'पुरुषों के भीतर सोचा समझा स्वार्थी सिद्धांत पाया जाता है जिसके चलते वे स्त्रियों के गुणों को कम करके आंकते हैं। यह बात बर्बर लोगों में मुश्किल से मिलती है'। सभ्य समाज के विपरीत पुराने समय के मिथकों के बारे में सोचते हुए मार्क्स ने बहुत तीक्ष्ण सर्वेक्षण दर्ज किया है 'ओलिम्पस में देवियों की स्थिति से औरतों की हैसियत का पता चलता है। वे अधिक आजाद और अधिक प्रभावी थीं। जुनो नामक देवी को सत्ता की लालच थी, ज्ञान की देवी ज़ीयस के कपाल से उत्पन्न हुईं आदि'।

मोर्गन के अध्ययन से मार्क्स को एक और महत्त्वपूर्ण सवाल, संपत्ति संबंधों के उद्भव, पर भी नए तरीके से सोचने का मौका मिला। क्योंकि इस विख्यात मानवशास्त्री ने नातेदारी की विभिन्न संरचनाओं और समाजार्थिक रूपों के बीच कार्य कारण संबंध स्थापित किया था। उनके अनुसार जिन कारकों के चलते पाश्चात्य इतिहास में विवरणात्मक ढाँचा स्थापित हुआ, जिसके तहत खून के रिश्तों और प्रत्येक नातेदारी का विशेष विवरण होता था (मसलन 'भाई का पुत्र भतीजा, पिता का भाई चाचा, पिता के भाई का पुत्र चचेरा भाई'), और वर्गाधारित ढाँचे का पतन हुआ, जिसके तहत अहं के साथ संबंध की निकटता या दूरी का ध्यान दिए बिना खून के संबंधियों को वर्गीकृत किया जाता था ('मसलन मेरा अपना भाई और मेरे पिता के भाइयों के पुत्र समान रूप से मेरे भाई हैं'), उनका संपत्ति और राज्य के विकास के साथ रिश्ता था।

मोर्गन की किताब चार भागों में बँटी हुई थी– 1) खोज और आविष्कार के जरिए बुद्धि का विस्तार, 2) सरकार की धारणा का विकास, 3) परिवार की धारणा का विकास और 4) संपत्ति की धारणा का विकास । मार्क्स ने इस क्रम को बदलकर– 1) खोज, 2) परिवार, 3) संपत्ति और 4) सरकार, कर

दिया ताकि संपत्ति और सरकार के बीच का गठबंधन खुलकर प्रकट हो सके।

मोर्गन की किताब में कहा गया था कि हालांकि 'संपत्ति, पद और आधिकारिक हैसियत से जुड़े अधिकार' हजारों बरस से 'न्याय और बुद्धिमत्ता' के मुकाबले अधिक माने जाते रहे हैं लेकिन इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि 'विशेषाधिकार प्राप्त' वर्गों के प्रभाव को समाज पर 'बोझ' समझा जाता था। मार्क्स ने 'एनशिएन्ट सोसाइटी' के आखिरी पन्नों में से एक पृष्ठ को लगभग पूरी तरह उतार लिया जिसमें संपत्ति जनित सम्भावित विकृतियों का उल्लेख था। जिन धारणाओं का इसमें इस्तेमाल हुआ था उनका गहरा असर उन पर पड़ा थाः

> 'सभ्यता के आरम्भ से ही संपत्ति की वृद्धि इतनी अधिक रही, इसके रूप इतने विविध रहे, इसके उपयोग इतने विस्तारित रहे और उसका प्रबंधन उसके स्वामियों के पक्ष में इतनी चतुराई से होता रहा कि जनता की दृष्टि से यह बेकाबू ताकत में बदल गई। मनुष्य का दिमाग अपनी ही रचना के समक्ष भौंचक्का रह जाता है। बहरहाल ऐसा समय आएगा जब मनुष्य की बुद्धिमत्ता संपत्ति का स्वामित्व हासिल करने में सक्षम होगी। तब संपत्ति की रक्षा करने वाले राज्य के साथ इसके संबंधों को तथा साथ ही इसके स्वामियों के दायित्व और अधिकारों की सीमा को परिभाषित किया जाएगा। समाज के हित व्यक्ति के हितों के ऊपर होते हैं तथा इन दोनों के बीच न्यायोचित और सद्भावपूर्ण रिश्ता कायम करना होगा।'

मोर्गन इस बात पर विश्वास करने से इनकार करते हैं कि 'मानवजाति की अंतिम नियति' केवल धन वैभव की तलाश है। उन्होंने तीखी चेतावनी जारी कीः

> 'ऐसा लगता है कि समाज के बिखराव से उस जीवन की समाप्ति हो जाएगी जिसका लक्ष्य केवल संपत्ति कमाना रह गया है, क्योंकि ऐसे जीवन में आत्म विध्वंस के तत्व निहित रहते हैं। सरकार में लोकतंत्र, समाज में भाईचारा, अधिकारों और विशेषाधिकारों में बराबरी और सार्वभौमिक शिक्षा से समाज के उस आगामी उच्चतर स्तर का आभास मिलता है जिसकी ओर लगातार अनुभव, बुद्धिमत्ता और ज्ञान हमें ले जा रहे हैं। यह (समाज का उच्चतर रूप) प्राचीन साझेदारी के स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का (समाज के) उच्चतर रूप में पुनर्जीवन होगा।'

तो बुर्जुआ 'सभ्यता' खुद ही संक्रमणशील अवस्था साबित होती है। यह दो लम्बे युगों के अंत से पैदा हुई थी जिनका नाम 'जांगल अवस्था' और 'बर्बर युग' था (उस समय ये शब्द ही प्रचलित थे)। इसके चलते सामाजिक संगठन के सामुदायिक रूपों का उन्मूलन हो गया। धन-संपत्ति के संचय तथा

सामाजिक वर्गों और राज्य के उदय के बाद ये रूप ध्वस्त हो गए। लेकिन देर सबेर प्रागैतिहास और इतिहास का फिर से संयुक्त होना तय है।

मोर्गन प्राचीन समाजों को बेहद लोकतांत्रिक और एकजुटता भरे समाज मानते थे। जहाँ तक वर्तमान की बात थी वे मानवता की प्रगति के बारे में अपने आशावाद की घोषणा तक ही सीमित रहते थे, इसके लिए किसी राजनीतिक संघर्ष की जरूरत नहीं महसूस करते थे। बहरहाल मार्क्स ने 'सौम्य जांगल के मिथक' के समाजवादी पुनर्जीवन का सपना नहीं देखा। उन्हें अतीत की वापसी की आशा कभी नहीं रही थी लेकिन मोर्गन की किताब के उद्धरण दर्ज करते हुए उन्होंने साफ किया था कि वे उत्पादन और उपभोग की नई पद्धति पर आधारित 'समाज के उच्चतर रूप'[6] की चाह संजोए हुए थे। इस समाज का आगमन यांत्रिक विकास के जरिए नहीं होना था बल्कि उसके लिए मजदूर वर्ग के सचेत संघर्ष की जरूरत थी।

मार्क्स के समस्त मानवशास्त्रीय अध्ययन का संबंध राज्य की उत्पत्ति और उसके कार्य सम्पादन से था। मोर्गन के उद्धरणों से बर्बरता से सभ्यता में संक्रमण के दौरान इसकी भूमिका संक्षेप में प्रकट हुई, जबकि मेन पर उनकी टिप्पणियों के केंद्र में व्यक्ति और राज्य के बीच संबंध का विश्लेषण है। इस विषय पर उनके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक लेखन– 'हेगेल के विधि दर्शन की आलोचना'[7] (1843) से लेकर 'फ्रांस में गृहयुद्ध'[8] (1871)

---

6. क्रेडर के अनुसार 'मोर्गन ने स्पष्ट नहीं किया था लेकिन मार्क्स ने स्पष्ट किया कि पुनर्संगठन की यह प्रक्रिया पहले के मुकाबले अलग स्तर पर चलेगी, कि यह मनुष्य की ओर से खुद के लिए और खुद का प्रयास है, कि सभ्यता के शत्रुतापूर्ण विरोध स्थिर या निष्क्रिय नहीं होते बल्कि ऐसे सामाजिक हितों से संचालित होते हैं जो पुनर्संगठन के नतीजों के पक्ष या विपक्ष में होते हैं और इस विरोध का निर्धारण सक्रिय और गतिशील ढंग से होता है'।
7. इस किताब में मार्क्स ने 'नागरिक समाज' और 'राज्य' के बीच के 'विरोध' का विश्लेषण किया है। राज्य 'समाज' में मौजूद नहीं होता बल्कि 'उसके विरुद्ध' खड़ा होता है। 'लोकतंत्र में राज्य खासकर बस खास ही होता है।–फ्रांसीसियों ने हाल में इसका यह अर्थ निकाला है कि वास्तविक लोकतंत्र में राजनीतिक राज्य का उन्मूलन हो जाता है। यह बात इस हद तक सही है कि राजनीतिक राज्य का अर्थ–अब सम्पूर्ण नहीं रह गया है।
8. तीस साल बाद आलोचना और भी तीखे ढंग से केंद्रित हो गई है। 'आधुनिक उद्योग

तक- की संगति में 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' में भी राज्य को ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो समाज को अपने अधीन रखती है और व्यक्ति की सम्पूर्ण मुक्ति में बाधा डालने वाली ताकत है। 1881 में दर्ज टीपों में मार्क्स ने राज्य के परजीवी और अस्थायी चरित्र पर जोर दिया थाः

> 'मेन ज्यादा गहरी बात की उपेक्षा कर देते हैं। राज्य का चरम स्वतंत्र लगने वाला अस्तित्व आभास मात्र है और कि अपने सभी रूपों में यह समाज की अपवृद्धि है। जिस तरह इसके बाहरी रूप का आविर्भाव सामाजिक विकास के खास चरण में होता है उसी तरह फिर इसका लोप तब हो जाता है जब समाज ऐसे चरण में पहुँच जाता है जहाँ वह अब तक नहीं पहुँचा था।'

प्रदत्त ऐतिहासिक परिस्थितियों में मनुष्य की हालत की आलोचनात्मक समझ के सहारे वे इसे आगे बढ़ाते हैं। सभ्य समाज के निर्माण ने साझा से निजी संपत्ति में संक्रमण के साथ मिलकर 'स्थिर एकायामी–वैयक्तिकता को जन्म दिया'। यदि '(राज्य का) सच्चा चरित्र तभी प्रकट होता है जब हम उसके सार का विश्लेषण करते हैं' यानी उसके 'हितों' का, तो इसका मतलब है कि ये हित 'कुछ सामाजिक समूहों के साझा' और इसीलिए 'वर्ग हित' होते हैं। मार्क्स के मुताबिक 'राज्य के निर्माण के लिए वर्ग पूर्वावश्यक होते हैं'। इसलिए इस तरह के समाज में जो वैयक्तिकता मौजूद होती है वह 'वर्गीय वैयक्तिकता' होती है जो अंतिम विश्लेषण में 'आर्थिक पूर्वमान्यताओं पर आधारित' होती है।

'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' में मार्क्स ने उन मानवशास्त्रीय रपटों के नस्ली आशयों के बारे में बहुतेरी बातें दर्ज की हैं जिनको वे उस समय पढ़ रहे थे। इस विचारधारा को उन्होंने साफ साफ खारिज किया और जिन लेखकों की अभिव्यक्ति वैसी थी उन पर बेहद कठोर टिप्पणी की। इसलिए मेन ने जब भेदभाव से भरे विशेषण का प्रयोग किया तो मार्क्स ने कड़ाई से दर्ज किया 'फिर वही बेवकूफी!'। इसके अलावा भी बार बार 'शैतान इस "आर्य" से पीछा छुड़ाए' जैसी बातें मिलती हैं।

की प्रगति का जिस रफ़्तार से विकास और विस्तार हुआ उसी रफ़्तार से पूँजी और श्रम के बीच शत्रुता भी तीव्र हुई। इसी रफ़्तार से राज्य ने श्रम के ऊपर पूँजी की राष्ट्रीय सत्ता का चरित्र ग्रहण कर लिया। वह सामाजिक गुलामी के लिए संगठित सरकारी ताकत, वर्गीय निरंकुशता का वाहक बनता गया'।

मनी की 'जावा, ऑर हाउ टु मैनेज ए कोलोनी' और फीयर की 'द आर्यन विलेज इन इंडिया ऐंड सीलोन' के सहारे मार्क्स ने एशिया में यूरोपीय उपस्थिति के नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन किया। औपनिवेशिक नीति के बारे में मनी के विचारों में मार्क्स की कोई रुचि नहीं थी लेकिन उन्हें यह किताब उपयोगी लगी क्योंकि इसमें वाणिज्य के बारे में विस्तृत जानकारी थी[9]। यही रुख उन्होंने फीयर की किताब के बारे में भी अपनाया और उनके कमजोर सैद्धांतिक ढाँचे की उपेक्षा करते हुए बंगाल प्रांत के हालात संबंधी उनके विवरणों पर ध्यान दिया।

मार्क्स ने जिन लेखकों की किताबें पढ़ीं और 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' में उनका सार दर्ज किया वे सभी अपनी विविध बारीकियों के साथ तत्कालीन विकासवादी धारणाओं से प्रभावित थे और उनमें से कुछेक तो बुर्जुआ सभ्यता की श्रेष्ठता के मजबूत समर्थक भी बन चुके थे। लेकिन 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' की परीक्षा करने से साफ हो जाता है कि उनकी वैचारिक प्रतिबद्धताओं का मार्क्स पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

उन्नीसवीं सदी में प्रगति संबंधी सिद्धांत बहुत प्रभावी थे और मानवशास्त्रियों तथा मानविकीविदों में समान रूप से लोकप्रिय थे। उनके मुताबिक घटनाओं का एक पूर्वनिर्धारित विकासक्रम होता है जिसे निर्धारित करने वाले कारक मानव गतिविधि से बाहर होते हैं, और वे उसके अनुसार आगे बढ़ती हैं। विकास के चरणों के कठोर अनुक्रम के अनुसार पूँजीवादी दुनिया ही इस विकास की एकमात्र और सर्वव्यापी नियति है।

कुछेक वर्षों के भीतर द्वितीय इंटरनेशनल में इतिहास की स्वचालित अग्रगति में एक भोला विश्वास जड़ जमा चुका था। बुर्जुआ विचारों से इसका

---

9. मनी के बारे में एंगेल्स का नजरिया देखें 'अच्छा होगा अगर कोई राजकीय समाजवाद के प्रसार पर रोशनी डालने की जहमत उठाए। इसके लिए उसे जावा के इतिहास से काफी सामग्री मिल जाएगी। यह सारी सामग्री उसे 'जावा, हाउ टु मैनेज ए कालोनी' से मिल सकती है।–इसमें दिखाई पड़ता है कि कैसे डच लोगों ने सदियों पुराने सामुदायिक कम्युनिज्म के आधार पर राज्य के लाभ के लिए उत्पादन को संगठित किया और जनता जिसे आरामदेह जीवन मानती थी वैसा जीवन उसे बिताने की गारंटी की। नतीजा यह कि जनता तो आदिम भोलेपन की हालत में रही और डच खजाने में सालाना सात करोड़ मार्क आता रहे'।

अंतर केवल इस भविष्यकथन में था कि इसमें अंतिम चरण में पूँजीवादी व्यवस्था का 'अनिवार्य' उन्मूलन होना था और समाजवाद का आगमन होना था (बाद में इसे 'मार्क्सवादी' भी कहा गया!)।

यह विश्लेषण न केवल ज्ञानात्मक रूप से कमजोर था बल्कि इससे भाग्यवादी निष्क्रियता भी पैदा हो सकती थी। इससे मौजूदा व्यवस्था को स्थिरता हासिल होती थी और सर्वहारा की सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में बाधा पड़ती थी। इसे बहुतेरे लोग 'वैज्ञानिक' मानते थे और इसमें प्रगति संबंधी बुर्जुआ और समाजवादी विचारों का घालमेल हो गया था। इस रुख का विरोध करके मार्क्स ने एक ही दिशा में आगे जाने के इतिहासवाद के आकर्षण को खारिज किया और अपनी जटिल, लचीली और वैविध्यपूर्ण धारणाओं का पक्षपोषण किया।

हालांकि डार्विनीय इलहामों की तुलना में मार्क्स की आवाज अनिश्चित और हिचक भरी लग सकती है लेकिन असल में वे आर्थिक निर्धारणवाद के उस जाल से बच सके जिसमें उनके ढेर सारे अनुयायी और प्रपंची विकासक फंसते रहे हैं। ये लोग मार्क्स से प्रेरित होने का दावा करते हैं लेकिन उनके विचार मार्क्स से अनेक प्रकाश वर्षों की दूरी पर हैं। इसके प्रभाव में उन लोगों ने 'मार्क्सवाद' के भ्रष्टतम रूप तैयार किए हैं।

अपनी पांडुलिपियों, नोटबुकों तथा कामरेडों और कार्यकर्ताओं को लिखे पत्रों, साथ ही पारिवारिक झंझटों और शारीरिक क्षमता में गिरावट की पृष्ठभूमि के बावजूद किए कुछेक सार्वजनिक हस्तक्षेपों में मार्क्स ने प्राचीन काल से पूँजीवाद तक की यात्रा के जटिल इतिहास के पुनर्सृजन की कोशिश जारी रखी। जिन मानवशास्त्रीय किताबों का उन्होंने अध्ययन किया और सार उतारा उनसे निश्चय हुआ कि कृषि के जन्म के बाद से भरण पोषण के संसाधनों में विस्तार के चलते युगों के मामले में मानव प्रगति तेजी से हुई। उन्होंने ऐतिहासिक सूचनाओं और आंकड़ों को तो महत्त्व दिया लेकिन मानव इतिहास में अलंघ्य चरणों के अनुक्रम के कठोर ढाँचे से अपनी सहमति नहीं जताई।

मार्क्स ने सामाजिक बदलावों को केवल आर्थिक रूपांतरणों से यांत्रिक तरीके से जोड़ने की बात भी ठुकरा दी। इसकी जगह उन्होंने ऐतिहासिक परिस्थितियों की विशेषता, समय बीतने के साथ उपजी अनेकानेक सम्भावनाओं और यथार्थ को आकार देने तथा बदलाव हासिल करने में मानवीय हस्तक्षेप

की केंद्रीयता को उजागर किया। मार्क्स के जीवन के आखिरी वर्षों में उनके सैद्धांतिक भाष्य की ये सब ही लाक्षणिक विशेषताएँ रहीं।

मानवशास्त्रीय शोध के साथ ही मार्क्स 1881 के पूर्वार्ध में गणित के अध्ययन की ओर लौटे। इस भारी चुनौती को उन्होंने पहले भी कई मौकों पर आजमाया था। 1858 के शुरू में उन्होंने एंगेल्स को लिखा था कि ग्रुंड्रिस लिखने के दौरान गिनती में उनसे इतनी भूलें हुईं कि 'निराशा में (मैंने) बीजगणित को तेजी से दुहरा लिया'। उन्होंने माना कि 'अंकगणित के साथ कभी मुझे सहजता नहीं रही' फिर भी 'बीजगणित के सहारे थोड़ा चक्कर काटकर मैं जल्दी ही सही जगह पहुँच जाऊंगा'। इसलिए संख्याओं के विज्ञान में मार्क्स की रुचि राजनीतिक अर्थशास्त्र संबंधी उनके अध्ययनों और उनसे उत्पन्न कुछ सैद्धांतिक समस्याओं को हल करने की तात्कालिक जरूरत से जुड़ी हुई थी। लेकिन जब एक बार उन्होंने इसे शुरू किया तो फिर उनके नजरिए में बुनियादी बदलाव आया। 'पूँजी' के लिए उपयोगी होने के अलावे गणित अपने आपमें सांस्कृतिक रुचि का एक स्रोत हो गया और उनकी बौद्धिक गतिविधियों में उसकी सचमुच खास जगह बन गई।

1860 में जब उनकी पत्नी को चेचक निकल आई थी और उनकी पुत्रियाँ भी दूर दूर रहती थीं कि कहीं उनको भी संक्रमण न हो जाए तो मार्क्स ने 'नर्स' की जिम्मेदारी निभाते हुए एंगेल्स को लिखा था 'लेख (*न्यू यार्क ट्रिब्यून* के लिए) लिखने का तो सवाल ही नहीं उठता। एकमात्र पेशा जिससे दिमाग में शांति बरकरार रखने में मदद मिलती है वह गणित है'। यह आदत उन्होंने आखिरी दिनों तक बनाए रखी। एंगेल्स को लिखे अनेक पत्रों में उन्होंने इससे प्राप्त सुख का जिक्र किया है। 1865 के वसंत में उन्होंने लिखा कि 'पूँजी' को पूरा करने के लिए वे 'घोड़े की मानिंद काम कर रहे हैं' और फोड़े भी साथ ही लगे हुए हैं लेकिन चूँकि वे 'दिमाग के सामान' में व्यवधान नहीं डालते इसलिए लेखन के बीच बीच में वे 'अंतर-कलन (डिफ़रेन्शियल कैलकुलस) पर भी कुछ' हाथ आजमा ले रहे हैं। 'किसी भी दूसरे किस्म की पढ़ाई से फिर मेज पर बैठने को मजबूर होना पड़ता है'। 1870 दशक के दौरान मार्क्स ने इसे जारी रखा[10]। दशक के अंत से व्यवस्थित रूप से यह काम शुरू किया।

10. एंगेल्स ने बाद में बताया कि 'पूँजी' संबंधी मार्क्स के काम में कुछेक वर्षों का व्यवधान आया था '1870 के बाद एक और अंतराल आया था। वजह मुख्य रूप

नतीजतन सैकड़ों पृष्ठ लिख मारे जिन्हें बाद में 'मैथमेटिकल मैनुस्क्रिप्ट्स' कहा गया।

1881 में मार्क्स ने आइजक न्यूटन (1643-1727) और गाटफ्राइड विल्हेल्म लाइबनित्ज़ (1646-1716) के गणितीय सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया। इन दोनों ने एक दूसरे से एकदम अलग, न्यूटन इंग्लैंड और लाइबनित्ज़ जर्मनी, रहते हुए अंतर-कलन और समाकलन गणित का आविष्कार किया[11]। ये दोनों अत्यणुकलन विद्या के दो घटक हैं। इन अध्ययनों के आधार पर मार्क्स ने दो पतली पांडुलिपियाँ तैयार कीं। एक 'व्युत्पन्न कार्य' की धारणा के बारे में' और दूसरी 'अंतर के बारे मे'– इनमें व्यवस्थित रूप में अंतर-कलन की उनकी व्याख्या प्रस्तुत की गई थी और उनकी आविष्कृत पद्धति को समझाया गया था। ये दोनों पाठ एंगेल्स को समर्पित थे और जैसे ही उन्होंने इनका लेखन पूरा किया, एंगेल्स को उनकी राय जानने के लिए भेज दिया।

अंतर-कलन के इतिहास के बारे में मार्क्स के अध्ययन में शुरुआत उसकी उत्पत्ति से हुई। इसमें उनके विभिन्न नोट और आरम्भिक मसौदे शामिल हैं। इनका सटीक मकसद था अत्यणुकलन विद्या की बुनियाद की आलोचना करना, किसी ऐसी आदि गणित के अस्तित्व का खंडन करना जिसमें dx और dy का अंतर मौजूद हो। इस शोध के क्रम में उन्होंने न्यूटन और लाइबनित्ज़ द्वारा विकसित अंतर-कलन के 'रहस्यमय' आधार पर खास ध्यान दिया क्योंकि उनमें से किसी ने इसकी औपचारिक व्याख्या नहीं दी कि ऐसा कैसे हुआ था। मार्क्स ने बिना इसे परिभाषित किए इसका प्रयोग करने के लिए उनकी आलोचना की।

इस नकारात्मक पहलू को पहले भी ज्याँ द'लेम्बर्ट (1717-83) और जोसेफ लुई-लारांज (1736-1813) जैसे अन्य गणितज्ञों ने पकड़ा था। इनके शोध को मार्क्स ने बहुत रुचि के साथ पढ़ा। बहरहाल ये दोनों ही- ज्याँ

से मार्क्स की सेहत थी। इस समय का इस्तेमाल मार्क्स ने कृषि विज्ञान, अमेरिका में ग्रामीण संबंध, रूस, मुद्रा बाजार और बैंकिंग, और अंततः भूविज्ञान और भौतिकी जैसे प्राकृतिक विज्ञानों तथा सबसे आगे बढ़कर स्वतंत्र गणित आदि के अध्ययन में लगाया। उस दौर की उनकी असंख्य नोटबुकों में उनके अध्ययन के सार दर्ज हैं'।

11. न्यूटन और लाइबनित्स के बीच काफी गर्मागर्म बहस चली जिसमें दोनों ने एक दूसरे पर चोरी का आरोप लगाया और दावा किया कि उन्होंने 'उस बात को पहले सोचा'।

द'लेम्बर्ट के तार्किक पद्धति के इस्तेमाल और सीमा की धारणा तथा जोसेफ लुई-लारांज की शुद्ध बीजगणितीय पद्धति और व्युत्पन्न कार्य की धारणा के चलते– उस समस्या का कोई समाधान न कर सके जिसे मार्क्स ने चिन्हित किया था।

अपने अध्ययन के अंत में भी मार्क्स असंतुष्ट ही रहे और उन्होंने फैसला किया कि अंतर-कलन की ऐसी श्रमसाध्य औपचारिक परिभाषा निकाली जाए जो 'रहस्यमयता' की जगह धारणाओं पर आधारित हो। इस विषय पर हालिया शोधों से लेकिन वे परिचित नहीं थे क्योंकि इस विषय विशेष में लेखन का उनका ज्ञान उन्नीसवीं सदी के शुरू में हुई खोजों तक ठहर गया था। अपने समकालीन दो गणितज्ञों– आगस्तीन काउची (1789-1857) तथा एरिक वेइरस्त्रास (1815-97)– द्वारा प्राप्त समाधानों की जानकारी पाने में वे सफल न हो सके अन्यथा शायद वे उस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जिसे उन्होंने खुद के लिए तय कर रखा था।

आखिरकार एंगेल्स अगस्त 1881 में मार्क्स की 'मैथमेटिकल मैनुस्क्रिप्ट्स' को 'गहराई से पढ़ने' की 'हिम्मत जुटा सके'। सबसे पहले उन्होंने अपनी बधाई लिख भेजी। 'इसमें आखिरकार वह बात साफ दिखाई दे रही है जिसे बहुतेरे गणितज्ञ लम्बे समय से मानते रहे हैं लेकिन कोई तार्किक आधार प्रस्तुत करने में अक्षम रहे हैं। बात यह थी कि अंतर भागफल ही आदि प्ररूप (प्रोटोटाइप) है, dx और dy जैसे अंतर उससे व्युत्पन्न हैं'। एंगेल्स इस प्रकरण में इतना डूब गए कि न केवल 'दिन भर यह बात दिमाग में घूमती रही' बल्कि उनको 'रात में एक सपना भी आया जिसमें (उन्होंने) किसी व्यक्ति को अंतर हल करने को कहा और उसने हल कर भी लिया'।

इस सवाल पर मार्क्स, एंगेल्स और उनके साझा मित्र सैमुएल मूर (1838-1911) के बीच बातचीत अगले साल के अंत तक चलती रही। नवम्बर 1882 में भी मार्क्स को इतना यकीन था कि वे 'विश्लेषण के इस तमाम ऐतिहासिक विकास को यह कहकर खारिज कर दे सकते हैं कि व्यावहारिक रूप से अंतर-कलन के ज्यामितीय उपयोग में, यानी ज्यामितीय प्रतीकीकरण में कोई बुनियादी बदलाव नहीं लाया जा सका है'। बहरहाल मार्क्स को उम्मीद के विपरीत आगे ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय में बैठकर अपने शोध को बढ़ाने और 'विभिन्न पद्धतियों की फिर से विस्तृत छानबीन' का मौका नहीं मिला।

जीवन के इस दौर में अंतर-कलन में मार्क्स की रुचि 'पूँजी' के दूसरे खंड के काम से ही जुड़ी न रही। उन्होंने अर्थशास्त्र में उसके विनियोग की जगह शुद्ध गणित पर अधिक ध्यान दिया जबकि 1870 दशक के पूर्वार्ध में वे आर्थिक 'संकटों को शासित करने वाले प्रमुख नियमों को गणितीय तौर पर निर्धारित' ही करना चाहते थे। न ही उनका इरादा, ढेर सारे विशेषज्ञों के तर्कों के बावजूद, इस समय गणित की कोई किताब लिखने का था।

बहरहाल 'मैथमेटिकल मैनुस्क्रिप्ट्स' से पता चलता है कि गणित के साथ मार्क्स के लगाव की सबसे विशेष बात क्या थी। सबसे पहले, खासकर द्वंद्ववाद और 'सम्पूर्ण' के प्रतिनिधित्व के सिलसिले में सामाजिक विश्लेषण की सही पद्धति की उनकी खोज के क्रम में यह एक उपयोगी बौद्धिक प्रेरणा थी। अंत में तो गणित उनके लिए लगभग एक स्वतंत्र भौतिक दुनिया बन गया, कभी कभी इसमें उलझन होती थी लेकिन सबसे अधिक वह ऐसी दुनिया थी जिसमें व्यक्तिगत भारी विपत्तियों के समय वे शरण लिया करते थे।

3. विश्व नागरिक

मार्क्स हालांकि गहन सैद्धांतिक अध्ययन में पूरी तरह डूबे हुए थे फिर भी उन्होंने तत्कालीन आर्थिक और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घटनाओं में रुचि लेना कभी बंद नहीं किया। प्रमुख 'बुर्जुआ' अखबारों को पढ़ने के अतिरिक्त वे मजदूर वर्ग के जर्मन और फ्रांसिसी प्रकाशन नियमित रूप से देखते थे। उत्सुकता उनमें हमेशा से थी, दिन की शुरुआत हमेशा समाचारों और रपटों को चाट जाने से होती ताकि दुनिया में जो भी चल रहा है उसकी जानकारी ठीक से हो। सूचना का एक अन्य मूल्यवान स्रोत विभिन्न देशों के अगुआ राजनीतिक और बौद्धिक हस्तियों के साथ अक्सर होने वाला पत्राचार था। इससे उन्हें तमाम तरह के विषयों के बारे में गहन ज्ञान और नई प्रेरणा प्राप्त होती थी।

1881 के आरम्भ में नीदरलैंड्स में उस समय की मुख्य समाजवादी राजनीतिक शक्ति, सोशल डेमोक्रेटिक लीग के एक प्रमुख नेता फ़र्दिनान्द न्यूवेनहुइस (1846-1919) ने मार्क्स को एक बार फिर कम्युनिज्म में संक्रमण संबंधी अपने विचारों को व्याख्यायित करने का अवसर दिया। उसी साल बाद में एक समाजवादी कांग्रेस होने जा रही थी जिसका मकसद यूरोपीय

सर्वहारा की सबसे बड़ी पार्टियों को एक नये इंटरनेशनल में एकताबद्ध करना था। ऐसे में न्यूवेनहुइस ने मार्क्स के सामने ऐसा सवाल रखा जिसे वे निर्णायक महत्त्व का समझते थे– किसी क्रांतिकारी सरकार को सत्ता में आने के बाद समाजवाद की सफलता की गारंटी के लिए राजनीतिक और आर्थिक प्रकृति के कौन से कानूनी कदम उठाने चाहिए?

पहले की तरह ही मार्क्स ने कहा कि इस तरह के सवालों का उत्तर वे किसी आम सूत्र के सहारे नहीं दे सकते। असल में वे इसे 'निरर्थक' मानते थे क्योंकि 'भविष्य के किसी भी खास, प्रदत्त क्षण में क्या करना होगा, और तत्क्षण करना होगा, यह केवल और पूरी तरह से उन वास्तविक ऐतिहासिक परिस्थितियों पर निर्भर है जिनमें उस कृत्य को किया जाना है'। इस सवाल को अमूर्त तरीके से उठाना 'प्रश्नाभास है जिसका एकमात्र उत्तर खुद सवाल की ही आलोचना हो सकता है'। इसलिए मार्क्स ने न्यूवेनहुइस को अनुल्लंघनीय तरीके से जवाब दिया कि 'ऐसे समीकरण को हल करना' असम्भव है 'जिसके निबंधन में ही उसके समाधान के तत्व न मौजूद हों'। इसके अतिरिक्त उन्हें यकीन था कि

'किसी भी देश में समाजवादी सरकार तब तक सत्ता में नहीं आएगी जब तक चीजें ऐसी स्थिति में न पहुँच जाएँ कि सब कुछ से पहले प्रभावी कार्यवाही का पहला मौका मिलते ही अपना अभीष्ट हासिल करने के लिए वह पूँजीपति वर्ग को भयभीत करने वाले कड़े कदम उठाना शुरू न कर दे'।

मार्क्स के दिमाग में यह स्पष्ट था कि उत्पादन और उपभोग की समाजवादी व्यवस्था की स्थापना लम्बी और जटिल प्रक्रिया होगी। निश्चय ही इसे केवल सत्ताकेंद्र की बागडोर हासिल करने के जरिए नहीं पूरा किया जा सकता। असल में 'किसी लोकप्रिय विजय के सहारे अचानक अस्तित्व में आने वाली सरकार की मुश्किलों में कुछ खास समाजवादी' नहीं होगा। क्रांतिकारी सरकार का एकमात्र वास्तविक अनुभव पेरिस कम्यून था लेकिन किसी भी स्थिति में उसे अनुकरणीय माडल नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह तो अति विशेष मामला था 'अत्यंत अपवादस्वरूप परिस्थितियों में केवल एक शहर में जन विद्रोह' जिसका अधिकांश राजनीतिक नेतृत्व 'किसी भी अर्थ में न तो समाजवादी था, न ही हो सकता था'।

अपने समय के मजदूर वर्ग की स्थिति की तुलना सामंती अतीत के पतन

के पहले के पूँजीपति वर्ग से करते हुए मार्क्स ने माना कि सर्वहारा मोर्चा उतना पिछड़ा हुआ नहीं है:

> '1789 से पहले की फ्रांसिसी पूँजीपति वर्ग की आम मांगों को समयानुसार यथोचित सुधार के साथ आज की हालत में परिभाषित करें तो काफी समानता के साथ वे वही होंगी जो उन सभी देशों के सर्वहारा वर्ग की प्राथमिक, तात्कालिक मांगें हैं जहाँ पूँजीवादी उत्पादन होता है। लेकिन क्या अठारहवीं सदी के किसी फ्रांसिसी को पहले से जरा भी यह अनुमान रहा होगा कि फ्रांसिसी पूँजीपति वर्ग की मांगों को किस तरह अमल में लाया जाएगा?'

आम तौर पर मार्क्स ने अपने विश्वास को कभी नहीं छोड़ा:

> 'कोई भी जड़सूत्र और तात्कालिक जरूरत के चलते भावी क्रांति के व्यावहारिक कार्यक्रम के बारे में कल्पनाजन्य अनुमान सिर्फ़ वर्तमान संघर्ष से ध्यान भटकाने के काम आते हैं। दुनिया के आसन्न विनाश के सपने के चलते शुरुआती ईसाइयों को रोमन साम्राज्य से लड़ने की प्रेरणा मिली थी और उन्हें अपनी जीत का भरोसा पैदा हुआ था। वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि से हम देख रहे हैं कि मौजूदा सामाजिक व्यवस्था का आज हमारी आंखों के सामने लगातार अनिवार्य बिखराव हो रहा है। पुराने सरकारी हौआ के कोड़े तले जनता के उभार के साथ उसका गुस्सा भी बढ़ रहा है। उत्पादन के साधनों के विकास के मामले में विराट और सकारात्मक अग्रगति साथ साथ हो रही है। यह सब इस बात की पर्याप्त गारंटी हैं कि असली सर्वहारा क्रांति जिस क्षण भी फूट पड़ेगी, उसकी तात्कालिक आरम्भिक कार्यविधि की स्थितियाँ (निश्चय ही उतनी रमणीय नहीं) भी मौजूद होंगी।'

अपने पत्र का अंत करते हुए मार्क्स ने न्यूवेनहुइस द्वारा उल्लिखित आगामी समाजवादी कांग्रेस के बारे में भी कुछ टिप्पणियाँ कीं। एक दशक तक जिस इंटरनेशनल का उन्होंने संयोजन किया था उसके नक्शे कदम पर नए पारदेशीय संगठन के तत्काल गठन की सम्भावना के बारे में अपना संदेह उन्होंने छिपाया नहीं:

> 'मेरा अपना यकीन है कि एक नए इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन के गठन का निर्णायक समय अभी नहीं आया है। इसलिए मुझे लगता है कि वे सभी लेबर कांग्रेसें और/या समाजवादी कांग्रेसें जो इस या उस देश विशेष की वास्तविक, तात्कालिक स्थितियों से संबद्ध नहीं हैं, न केवल व्यर्थ बल्कि नुकसानदेह साबित होंगी। वे सभी अनिवार्य रूप से तमाम आम तुच्छताओं को फिर से नया रूप देकर बेजान हो जाने को बाध्य हैं।'

मार्क्स को पत्र लिखने वाले कुछ लोगों ने उनके सामने अमेरिकी अर्थशास्त्री हेनरी जार्ज (1839-97) द्वारा प्रस्तुत एक प्रस्ताव की भी चर्चा की है। उनकी लिखी 'प्रोग्रेस ऐंड पावर्टी' शीर्षक किताब 1879 में छपी थी और एकाधिक भाषाओं में उसकी लाखों प्रतियाँ बिकी थीं। जार्ज के तर्क की उस समय के अखबारों में बहुत चर्चा थी और वह था कि तमाम किस्म के मौजूदा टैक्सों को हटाकर अकेले जमीन की कीमत पर टैक्स की वसूली होनी चाहिएः

> 'सरकार पहले से ही किराये की शक्ल में कुछ टैक्स लेती है। अपने टैक्स के कानूनों में कुछ बदलाव करके हम लगभग पूरा ले सकते हैं।–इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि सार्वजनिक उपयोग के लिए जमीन का किराया हम वसूल करें।–ऊपर से जमीन का मालिकाना वही रहेगा जैसा इस समय है। जमीन के किसी भी मालिक को बेदखल नहीं किया जाएगा। जमीन के मालिकाने में मात्रा की बंदिश किसी पर कुछ भी नहीं होगी। अगर राज्य द्वारा टैक्स की शक्ल में किराया लिया जाएगा तो जमीन वास्तव में साझा संपत्ति हो जाएगी- चाहे वह जिसके भी नाम पर हो या जैसा भी टुकड़ा हो। इसके स्वामित्व के लाभ में समुदाय के प्रत्येक सदस्य की हिस्सेदारी होगी।–असल में जब किराया वर्तमान सरकारी राजस्व से अधिक हो जाएगा तो अतिरिक्त किराये को खपाने के लिए जमीन का टैक्स बढ़ाना वास्तव में जरूरी होगा। अन्य टैक्सों को समाप्त करने से किराये का टैक्स बढ़ेगा इसलिए हम अपनी मान्यता को इस व्यावहारिक प्रस्ताव की शक्ल में पेश कर सकते हैं– जमीन की कीमत पर टैक्स के अलावा सभी टैक्सों को समाप्त करो'।

जब जर्मन क्रांतिकारी प्रवासी फ्रेडरिक जोर्गे (1828-1906), साथ ही जान स्विंटन (1829-1901) और अमेरिकी समाजवादी विलार्ड ब्राउन (?) ने उनसे प्रगति और दरिद्रता के सह-अस्तित्व के विरोधाभास को हल करने वाले इस प्रस्ताव के बारे में उनकी राय जाननी चाही तो मार्क्स को जवाब देना जरूरी लगा। उनका 'किताब के बारे में अति संक्षिप्त मूल्यांकन' जैसा अक्सर होता था तिरस्कारपूर्ण था। मार्क्स ने माना कि जार्ज 'प्रतिभाशाली लेखक' हैं और अमेरिका में किताब की जो इतनी प्रशंसा हो रही है उसका कारण यह है कि इसमें 'पारम्परिक रूढ़िबद्ध राजनीतिक अर्थशास्त्र से छुटकारे की असफल ही सही, पहली कोशिश' हुई है। लेकिन इन दो छोटी रियायतों के अलावा मार्क्स ने समुद्र के उस पार के अर्थशास्त्री के विचारों का प्रचंड विरोध किया क्योंकि सिद्धांतकार के बतौर वे उन्हें 'पूरी तरह पिछड़े' महसूस हुए। वे 'अतिरिक्त मूल्य की प्रकृति के बारे में कुछ नहीं समझ सके' और 'अतिरिक्त

मूल्य के उन हिस्सों के बारे में अनुमान' लगाने में भटक गए हैं 'जो स्वतंत्र हो चुके हैं– यानी मुनाफ़ा, किराया, ब्याज आदि के बीच संबंध के बारे में'।

मार्क्स ने न केवल जार्ज के 'बुनियादी सिद्धांत' का विरोध किया बल्कि उसकी मौलिकता से भी इनकार किया। युवावस्था में खुद मार्क्स और एंगेल्स ने 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' में 'भूसंपत्ति का उन्मूलन और जमीन के समस्त किराये का सार्वजनिक प्रयोजन के लिए उपयोग' का तर्क दिया था। इसे मजदूर वर्ग द्वारा सबसे आगे बढ़े हुए देशों में सत्ता पर कब्जा करने के बाद उठाए जाने वाले दस कदमों में शामिल किया गया था।

मार्क्स ने स्विंटन को ध्यान दिलाया कि 'रिकार्डो के कुछ क्रांतिकारी किस्म के पुराने अनुयायी भी कल्पना करते थे कि जमीन के किराये के सार्वजनिक अधिग्रहण से सब कुछ सही हो जाएगा'।[12] मार्क्स ने 1847 में 'दर्शन की दरिद्रता' में इस धारणा की आलोचना की थी जब उन्होंने स्पष्ट किया था कि अगर 'मिल, चेर्बुलिए, हिल्डिच और इनके जैसे अन्य अर्थशास्त्री मांग करते हैं कि टैक्स की जगह राजकीय सेवाओं के लिए जमीन के किराये का अधिग्रहण होना चाहिए' तो यह 'औद्योगिक पूँजीपति के मन में जमीन के मालिक प्रति मौजूद नफ़रत की खुली अभिव्यक्ति है' जो 'उन्हें बेकार की

12. एंगेल्स के लिए भी 'राज्य=समाजवाद' का समीकरण पूरी तरह अस्वीकार्य था। मार्च 1881 में उन्होंने बर्नस्टाइन को लिखा 'राज्य की ओर से मुक्त प्रतियोगिता में किए जाने वाले प्रत्येक हस्तक्षेप– संरक्षात्मक कराधान, गिल्ड, तम्बाकू पर एकाधिकार, उद्योगों की शाखाओं का राष्ट्रीकरण, समुद्र पार व्यापार कंपनी, राजकीय पोर्सीलेन कारखाना- को 'समाजवाद' के रूप में पेश करना मानचेस्टर के पूँजीपति वर्ग की ओर से स्वार्थी गलतबयानी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इनकी आलोचना तो करनी चाहिए लेकिन उन पर यकीन नहीं करना चाहिए। अगर हम यकीन कर लें और उसके आधार पर सैद्धांतिक तर्क खड़ा करें तो वह तर्क पूर्वाधारों समेत भहरा जाएगा। केवल यह सिद्ध होने की जरूरत होगी कि यह तथाकथित समाजवाद एक तरफ सामंती प्रतिक्रिया और दूसरी तरफ उगाही के बहाने के अलावे और कुछ नहीं है। इसका आनुषंगिक मकसद होगा जितने अधिक सर्वहारागण को सम्भव हो, उतने को राज्य पर निर्भर अधिकारियों और पेंशनभोगियों में बदल देना, जो नौकरशाहों और सैनिकों की अनुशासनबद्ध सेना की तरह ही मजदूरों की सेना होगी। अनिवार्य मताधिकार कारखाना निरीक्षकों की जगह बड़े अधिकारियों की ओर से थोपा जाएगा। बेहतरीन समाजवाद!'

चीज, चतुर्दिक व्याप्त पूँजीवादी उत्पादन के शरीर पर उगी रसौली मानता है'। तत्कालीन समाज में मौजूद विषमता को दूर करने के लिए यह उपाय निश्चय ही पर्याप्त नही था।

जोर्गे को लिखे जवाब में मार्क्स ने ऐसे अन्य लेखकों का जिक्र किया जिन्होंने पहले भी इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे। उदाहरण के लिए ज्याँ इपोलाइत कोलिन्स (1783-1859) ने 'अंग्रेज क्रांतिकारी बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों के इस अभीष्ट का समाजवादी रामबाण नुस्खा' तैयार करने की कोशिश की थी और 'घोषित किया था कि इस प्रक्रिया से वर्तमान उत्पादन पद्धति में अंतर्निहित शत्रुताओं का जरूर समाधान हो जाएगा'। और 'उथले हिस्से वाले प्रशियाई बैंकर तथा लाटरी संग्राहक' और जोहान्न रॉबर्टस (1805-75) के अनुयायी अर्थशास्त्री एडोल्फ़ सामटेर (1824-83) ने 'विशालकाय ग्रंथ (1875 में 'सोशल डॉक्ट्रिनः ऑन द सैटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ नीड्स इन ह्यूमन सोसाइटी' नाम से प्रकाशित) को भरने के लिए इस "समाजवाद" को फुलाया' था।

मार्क्स के अनुसार जार्ज की किताब चिंतन की इसी परम्परा में रखने लायक थी हालांकि अन्य उदाहरणों की तुलना में यह 'और अधिक अक्षम्य' थी। अमेरिका 'जहाँ (एक वक्त) जमीन जनता की बड़ी आबादी के लिए अपेक्षाकृत सुलभ थी और कुछ हद तक अब भी है' के किसी नागरिक को यह बताना चाहिए था कि ऐसा कैसे हुआ कि 'किसी भी अन्य देश के मुकाबले तेजी से और बेशर्मी के साथ पूँजीवादी अर्थतंत्र और तदनुसार मजदूर वर्ग की दासता का विकास हो गया'। बहरहाल उन्होंने घोषित कियाः

> 'इन सभी "समाजवादियो" में एक बात साझा है– वे पगारजीवी श्रमिक और फलस्वरूप पूँजीवादी उत्पादन को भी कायम रखते हैं और इसके साथ ही खुद को और दुनिया को इस धोखे में उल्लू बनाए रखने की कोशिश करते हैं कि किराये को बदलकर उसे राज्य को टैक्स का भुगतान कर देने से पूँजीवादी उत्पादन की सभी बुराइयों का अपने आप लोप हो जाएगा।'

तो, उनकी मंशा चाहे जो भी हो, जार्ज और उनके जैसे लेखकों के सिद्धांत 'समाजवाद के नाम पर पूँजीवादी शासन को बनाए रखने और असल में उसे वर्तमान से भी अधिक व्यापक आधार पर पुनःस्थापित करने के प्रयास भर

हैं'।[13] अंत में मार्क्स ने जार्ज की 'विद्रोहजनक गुस्ताखी और हेकड़ी' पर हमला किया जिसे वे 'ऐसे सभी नुस्खेबाजों की अचूक निशानी' मानते थे।[14]

1881 के पूरे साल मार्क्स दुनिया भर की घटनाओं पर नजर रखे रहे और कामरेडों या परिवारी सदस्यों के समक्ष उन पर टिप्पणी करते रहे। खासकर उन्होंने फ़रवरी में डैनिएल्सन को एक लम्बी चिट्ठी लिखी जिसमें अनेक देशों की स्थिति के बारे में अमूल्य निरीक्षण दर्ज हैं।

आर्थिक संकटों का अध्ययन मार्क्स की नजर में हमेशा वरीयता पर रहा आया था और 1873 में अनेक देशों खासकर इंग्लैंड को जकड़ लेने वाली महामंदी ने उनके भीतर के अध्येता की रुचि जगा दी और योद्धा की आशाओं को तीव्र कर दिया। ब्रिटेन की वित्तीय घटनाओं के बारे में उन्होंने लिखा 'अगर वह भीषण औद्योगिक और वाणिज्यिक संकट जिससे होकर इंग्लैंड गुजरा है,

---

13. इस सवाल पर हिंडमैन का बयान देखें 'मार्क्स ने इसे देखा और कुछ दोस्ताना तिरस्कार के साथ बोले 'पूँजीपतियों की अंतिम कोशिश!' इस नजरिये से मैं सहमत न था। किताब में असाधारण सैद्धांतिक अंतराल थे और अर्थशास्त्र संबंधी प्रबल भूलें थीं लेकिन कुछ हद तक मैंने माना, जिसे मार्क्स न मानते न मान सकते थे कि इसकी प्रतिभापूर्ण उच्चस्तरीय पत्रकारिता के चलते यह किताब सहानुभूति रखने वाली अर्ध-शिक्षित भीड़ के लिए बहुत ही आकर्षक साबित होगी।–इस बात को मार्क्स कोई गम्भीर तर्क मानने को राजी नहीं थे। उनका मत था कि गलती का प्रचार लोगों के लिए कभी भी अच्छा नहीं हो सकता। "गलती का खंडन नहीं करना बौद्धिक अनैतिकता को बढ़ावा देना है। दस लोग तो आगे चले जाएंगे लेकिन सौ लोग आसानी से जार्ज के पास रुक जाएंगे और इस खतरे को देखते हुए भागना उचित न होगा"'।

14. मार्क्स के बारे में जार्ज की टिप्पणियाँ भी मजेदार हैं। मार्क्स के देहांत के बाद उन्होंने कहा कि हालांकि उन्होंने उनका लेखन नहीं पढ़ा लेकिन 'उस व्यक्ति के लिए गहरा सम्मान' महसूस करते हैं 'जिसका जीवन सामाजिक हालात में सुधार की कोशिशों के लिए समर्पित रहा'। बहरहाल अगले साल हिंडमैन को लिखे पत्र में उन्होंने जोर दिया कि मार्क्स में 'विश्लेषणात्मक शक्ति और तार्किक चिंतन की आदत का अभाव' था। इसके अतिरिक्त मासाचुसेट्स के चांसलर फ्रांसिस वाकर (1840-97) को लिखे दो पत्रों में उन्होंने मार्क्स को 'भ्रमित बुद्धि वालों का सरताज' और 'सतही चिंतक' कहा। 1883 में जब मार्क्स का देहांत हुआ तो राय डगलस ने लिखा कि 'इस प्रशियाई समाजवादी के बारे में जानने वाले प्रत्येक के पीछे हेनरी जार्ज की चर्चा करने वाले दर्जनों अंग्रेज रहे होंगे। कुछ साल बाद ही चीजें पूरी तरह उलट गईं।

लंदन में वित्तीय गिरावट को जन्म नहीं देता तो केवल फ्रांसिसी धन के चलते यह आपवादिक परिघटना पैदा होगी'।

इन विचारों के साथ ही आम आर्थिक संदर्भ का विवरण भी मिलता है। मंदी ने अपने आपको उत्पादकता में उल्लेखनीय गिरावट और निर्यात के नाटकीय ठहराव में व्यक्त किया है। ब्रिटेन अब दुनिया की कार्यशाला नहीं रह गया है और पिछले दशकों की 'विक्टोरियाई समृद्धि' याद से अधिक कुछ नहीं रह गई है। खासकर मार्क्स ने देखाः

> 'इंग्लैंड की रेल व्यवस्था उसी झुकाव के स्तर पर चल रही है जिस पर यूरोपीय सार्वजनिक कर्ज प्रणाली चल रही है। विभिन्न रेलवे संजालों के निदेशकों में दबंग धन्नासेठ न केवल अधिकाधिक बढ़ते हुए नए कर्ज हासिल कर रहे हैं ताकि वे अपना जाल, अर्थात इलाका, विस्तारित करें, जहाँ वे बादशाहों की तरह राज करते हैं, बल्कि वे अपना जाल विस्तारित ही इसलिए करते हैं ताकि नए कर्ज हासिल करने के नए बहाने पैदा हो सकें। इन कर्जों के जरिए वे दायित्वों, वरीयता प्राप्त अंशधारकों आदि को देय ब्याज चुकाने में सक्षम होते हैं और धोखा खाए हुए आम अंशधारकों को भी समय समय पर थोड़ा बढ़े हुए लाभांश की शक्ल में कुछ टुकड़े फेंक पाते हैं। यह सुखदायी पद्धति किसी न किसी दिन बुरी तबाही में परिणत होगी'।

अटलांटिक के दूसरे छोर की घटनाओं में भी मार्क्स ने कुछ कम रुचि नहीं दिखाई। इनमें से एक थी जे गूल्ड (1836-92) का वित्तीय पतन। गूल्ड रेल लाइनों के बड़े निर्माता थे। भारी सट्टेबाजी के जरिए वे अपने समय के सबसे धनी और बेशरम मनुष्य बन गए थे। उन्हें 'लुटेरे धनकुबेरों का बादशाह' व्यर्थ ही नहीं कहा जाता था। वे इरी रेलरोड कंपनी के मालिक थे जिसे न्यू यार्क और उत्तर पूर्व के बीच की ऐतिहासिक लाइन चलाने का काम मिला था। 1879 में वे प्रशांत महासागर के तटवर्ती अनेक राज्यों में यूनियन पैसिफ़िक रेलरोड और मिसीसिपी नदी के पूरब रेलगाड़ियाँ चलाने वाली मिसूरी पैसिफ़िक रेलरोड समेत तीन बड़े रेल संजालों के नियंत्रक हो गए। इन सबको मिलाकर वे 16,000 किलोमीटर पटरी के मालिक बन बैठे जो देश की कुल पटरियों का नवां हिस्सा था। 1881 में उन्होंने अपना साम्राज्य और विस्तारित किया तथा वेस्टर्न यूनियन पर भी कब्जा जमा लिया।

चूँकि मार्क्स को अमेरिकी समाज के बदलावों में रुचि रहती थी इसलिए मार्क्स गूल्ड की उन्नति को समझने से चूक नहीं सकते थे या जिस तरह

उन्होंने सार्वजनिक हमलों से खुद को बचाने की कोशिश की उस टिप्पणी किए बिना नहीं रह सकते थेः

> 'अमेरिका में रेलवे के बादशाहों पर हमला शुरू हो गया है। यह हमला पहले की तरह न केवल किसानों और पश्चिम के अन्य औद्योगिक "उद्यमियों" की ओर से हुआ है, बल्कि इसमें वाणिज्य का विराट प्रतिनिधि, न्यू यार्क चैम्बर ऑफ़ कामर्स भी शामिल हो गया है। रेलवे के अष्टभुज बादशाह और वित्तीय घोटालेबाज गूल्ड ने अपनी ओर से न्यू यार्क के वाणिज्यिक धन्नासेठों से कहा "आप अभी रेलवे पर हमला कर रहे हैं क्योंकि उनकी वर्तमान अलोकप्रियता के चलते वे आपको सर्वाधिक वेध्य लगती हैं। लेकिन ध्यान दीजिए रेलवे के बाद सभी किस्म के कारपोरेशनों–का नम्बर आएगा। फिर उसके बाद सभी तरह की मिश्रित पूँजी का और आखिरकार समस्त पूँजी का नम्बर आएगा। इस तरह तो आप कम्युनिज्म का रास्ता हमवार कर रहे हैं जिसकी प्रवृत्तियाँ जनता के बीच अधिकाधिक पहले से ही फैल रही हैं।'

मार्क्स ने मजाक किया 'गूल्ड साहब की नाक बहुत संवेदनशील है'। उन्हें उम्मीद थी कि यह प्रवृत्ति अमेरिका में अभी और उभार पाएगी। इसी पत्र में उन्होंने भारत की घटनाओं का भी जिक्र किया और यह भविष्यवाणी करने की हद तक पहुँच गए कि 'अंग्रेज सरकार के लिए अगर आम विद्रोह नहीं तो गम्भीर जटिलताएँ इंतजार कर रही हैं'। शोषण की मात्रा अधिकाधिक असहनीय होती जा रही हैः

> 'हर साल अंग्रेज भारतीयों से लगानों, रेलों के लाभांश- जिन रेलों से भारतीयों को कोई लाभ नहीं पहुँचता– सैनिक तथा असैनिक कर्मचारियों की पेंशनों, अफ़गानिस्तान की लड़ाई, तथा अन्य लड़ाइयों के खर्चों आदि के रूप में भारी रकमें वसूल करते हैं। इन रकमों के बदले में भारतीयों को कुछ भी नहीं मिलता। ये रकमें उन रकमों से अलग हैं जिनसे अंग्रेज भारत के अंदर हर साल अपनी जेबें भरते हैं। इस संबंध में पहले प्रकार की रकमों के मूल्य का ही– अर्थात केवल उस सामान के मूल्य का, जो भारतीयों को हर साल इंग्लैंड में भेंटस्वरूप भेजना पड़ता है– उल्लेख कर देना काफी होगा। कुल मिलाकर यह धन कृषि और उद्योगों में काम करने वाले 6 करोड़ भारतीयों की कुल आय से अधिक है। यह तो खून निचोड़ने वाली बात है! यह तो हृदयविदारक बात है! भारत में एक के बाद अकाल फूट रहे हैं और उनके विस्तार के बारे में यूरोप वाले अभी तक अनुमान तक नहीं लगा सकते। सचमुच वहाँ एक षड़यंत्र चल रहा है, जिसमें हिंदू और मुसलमान एक दूसरे से सहयोग कर रहे हैं। अंग्रेज सरकार इतना तो जानती है कि कुछ "पक" रहा है, लेकिन ये छिछले लोग (मेरा मतलब है सरकारी अधिकारी लोग), जो बोलने और सोचने के अपने संसदीय ढंग के मोह में अपनी बुद्धि खो चुके हैं, वास्तविक स्थिति को स्पष्टता से

न तो देखना चाहते हैं और न ही आने वाले खतरे के विस्तार का अनुमान लगाना चाहते है! लोगों को बहकाना और उन्हें बहकाते हुए खुद बहक जाना– यह है संसदीय विवेक का वास्तविक मतलब! अच्छा ही है!'

1860 दशक से ही मार्क्स ने आयरलैंड के सवाल पर भी गहराई से ध्यान देना शुरू कर दिया था। उनके कुछ विचार उनकी पुत्री जेनी लांग्वे को 11 अप्रैल को लिखे पत्र में देखे जा सकते हैं जो विगत कई सालों से फ़ेनियन आंदोलन की समर्थक बन चुकी थी। मार्क्स आयरलैंड पर इंग्लैंड के कब्जे और अंग्रेजों द्वारा वहाँ भयंकर अन्याय को बढ़ावा देने के विरोध में पूरी तरह से थे। इसीलिए जब- पूरी तरह पाखंडी और पुराने किस्म के धूर्त विलियम ग्लैडस्टोन (1809-98) के बारे में 1868 में जब सुनाई पड़ा कि प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ है तो उन्होंने घोषित किया कि उसका राजनीतिक 'मिशन' तो 'आयरलैंड को शांत' करना है।

ग्लैडस्टोन ने पहला कदम भूसंपत्ति के निर्णयक सवाल को हल करने के लिए उठाया लेकिन जो अपेक्षाएँ उन्होंने जगाई थीं उन पर वह एकदम खरा नहीं उतरा। मौजूदा कानून में संशोधन के बतौर 1870 में पारित लैंडलार्ड ऐंड टीनैन्ट (आयरलैंड) ऐक्ट के चलते हालात और खराब हो गए। दशक का अंत आते आते जमींदारों के भयंकर शोषण के विरुद्ध असंख्य विरोध प्रदर्शन आयरलैंड में फूट पड़े और वहाँ अंग्रेजी शासन के विरोध में विद्रोह सचमुच 'खदबदाने' लगा।

अप्रैल 1881 में जब लिबरल लोग दूसरा कानून, लैंड लॉ (आयरलैंड) ऐक्ट, लेकर आए तो मार्क्स ने फिर सरकार को घेरा कि इसके समर्थकों के दावों के विपरीत किरायेदारों पर अंग्रेज जमींदारों की मनमानी शक्तियों को खत्म करने के लिए कुछ नहीं किया है। उन्होंने जेनी को लिखा कि असल में 'ग्लैडस्टोन ने अपने कुख्यात शुरुआती कदमों (निचले सदन के सदस्यों की अभिव्यक्ति की आजादी के उन्मूलन समेत) से ऐसे हालात पैदा कर दिए हैं कि उनके चलते आयरलैंड में बड़े पैमाने पर बेदखली हो रही है'। मार्क्स की निगाह में प्रस्तावित सुधार 'शुद्ध पाखंड हैं, इसे देखते हुए कि ऊपरी सदन के सदस्य, ग्लैडस्टोन से जो भी चाहें प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें लैंड लीग के समक्ष कांपने की अब कोई जरूरत नहीं है, इसे बिना शक उखाड़ फेंकेंगे या उसका हुलिया इतना बिगाड़ देंगे कि आयरलैंड के लोग ही उसके विरोध में

मत दे बैठेंगे'।[15] जहाँ तक ब्रिटेन की संसद द्वारा इन कदमों की संस्तुति की बात है तो इस मामले में मार्क्स गलत साबित हुए लेकिन उनका यह अनुमान सही साबित हुआ कि इनसे आयरलैंड की समस्याओं का समाधान नहीं होगा। नए कानून के फलस्वरूप कुछ सौ किसान ही जमीन खरीदने में कामयाब हुए और आंदोलन कुछ ही साल बाद फिर से शुरू हो गया।

कुछ हफ़्ते बाद जेनी को भेजे गए एक और पत्र में मार्क्स ने फिर यह आरोप लगाया। उन्हें लगा कि ग्लैडस्टोन की ओर से यह 'बहुत बेहतरीन चाल' रही कि 'अमेरिका से मक्के और पशुओं के आयात के चलते जब आयरलैंड में (तथा उसी तरह इंग्लैंड में) भूसंपत्ति की कीमत गिर (रही थी) उस समय' बड़े जमींदारों को 'अपनी संपत्ति को उस कीमत पर बेचने की' सम्भावना प्रदान की 'जो उसकी कीमत रह नहीं गई थी'। उन्होंने जेनी से कहा कि वह अपने पति चार्ल्स लांग्वे (1839-1903) से यार्क में दिया गया आयरिश संसदीय दल के प्रमुख नेता चार्ल्स पार्नेल (1846-91) का भाषण पढ़ने को कहे 'उसमें उनको वह सब मिलेगा जो ग्लैडस्टोन के नए लैंड ला के बारे में कहा जाना चाहिए'। अंत में मार्क्स के तईं:

> 'आयरिश भूमि समस्या की वास्तविक उलझनें, जो असल में केवल आयरिश नहीं हैं, इतनी बड़ी हैं कि उनके समाधान का एकमात्र सही रास्ता, आयरलैंड को स्वशासन देना और इस तरह खुद ही उन्हें हल करने के लिए बाध्य करना है। लेकिन जान बुल[16] इतना बेवकूफ है कि इसे समझेगा नहीं।'

आम तौर पर निश्चय ही कहा जा सकता है कि मार्क्स अंग्रेजी बादशाहत के तहत जीवन बिताने के लिए बहुत उत्साहित नहीं हैं। दो बार के प्रधान मंत्री और अनेक सालों तक कन्जर्वेटिव पार्टी के नेता रहे बेंजामिन डिजराइली (1804-81) का निधन 19 अप्रैल को हुआ और उनके 'गुणगान' का

---

15. मार्क्स की प्रतिक्रिया के लिए उसी समय हिंडमैन की हुई एक मुलाकात का ब्यौरा देख सकते हैं। 'खासकर आयरलैंड के प्रसंग में लिबरल पार्टी की नीति के बारे में भयंकर रोष के साथ बोलते हुए इस प्राचीन योद्धा की धंसी हुई छोटी आँखें चमक उठीं, उनकी बरौनियों में बल पड़ गए और उनकी जोरदार नाक तथा चेहरा आवेग से धधकने लगे। धिक्कार युक्त निंदा की धारा ही उन्होंने बहा दी।'
16. जीवन के अंतिम दिनों में मार्क्स ब्रिटेन के लिए जान बुल शब्द का इस्तेमाल करने लगे थे।

अभियान शुरू हुआ। यह चीज मार्क्स को 'लंदन का अंतिम उन्माद' प्रतीत हुई जिसने 'जान बुल को अपनी ही उदारता की प्रशस्ति का संतोष प्रदान किया'। असल में तो डिजराइली की दूसरी सरकार (1874-80) के दौरान एक के बाद एक नकारात्मक घटनाएँ– विदेश नीति में, दूसरे अफ़गान युद्ध में, अंग्ल-ज़ुलू युद्ध के नाम से मशहूर दक्षिण अफ्रीका के खूनी टकराव में, तथा अर्थतंत्र में, कृषि और औद्योगिक उत्पादन की गिरावट में– दिखाई पड़ीं। 1880 के आम चुनावों में उनकी शर्मनाक पराजय की यही वजहें थीं।

डिजराइली की मरणोपरांत लोकप्रियता पर सोचते हुए मार्क्स ने टिप्पणी की 'जिस मरे हुए आदमी के पिछवाड़े लात मारने से ठीक पहले आपने उसे सड़े सेबों और गंदे अंडों से नवाजा था उसके चापलूस की भूमिका निभाना "शौर्य" का काम नहीं है?' उन्होंने व्यंग्य के साथ लिखा कि शायद इससे 'निम्न वर्गों' को सीख दी जा रही थी कि 'उनके स्वाभाविक 'बड़े" चाहे "जगह पाने की" लड़ाई के दौरान एक दूसरे की जितनी भी टांग खिंचाई करें, मौत के बाद यह सच बाहर आता है कि "शासक वर्गों" के नेता हमेशा "महान और अच्छे लोग" होते हैं'।

इंग्लैंड की जलवायु से भी उन्हें नफ़रत थी। 6 जून को पुत्री से उन्होंने कड़वाहट के साथ शिकायत की 'आज और कल नारकीय बारिश और ठंड का मौसम' था जिसके साथ ही राजधानी में आयरलैंड के सवाल पर विरोध प्रदर्शन भी हो रहे थे। मानो 'आसमानी खुदा हमेशा ही अपनी जनतांत्रिक ढोरों और भेड़ों के लिए कोई न कोई बुरी चाल सोचकर रखता है। कल उसने बारिश से हाइड पार्क में पार्नेल के प्रदर्शन को बरबाद कर दिया'।

इसका मतलब यह नहीं कि मार्क्स ने महाद्वीप के दो प्रमुख देशों, जर्मनी और फ्रांस, की उपेक्षा की। विगत दिनों की तरह ही जब कभी सम्भव होता वे इनमें भी सक्रिय रुचि लेते, वामपंथी राजनीतिक नेताओं, समाजवादी सिद्धांत के लेखकों और सर्वहारा आंदोलन के समर्थन में समाचार और समीक्षा लिखने वाले अन्य लेखकों से मिलते। लंदन में गुजारे तीस से अधिक सालों के दौरान और जो कुछ यात्राएँ वे कर सके उनमें मार्क्स का परिचय मजदूर वर्ग के लक्ष्य से प्रतिबद्ध सैकड़ों योद्धाओं और बुद्धिजीवियों से हुआ। युवा लोगों से मिलने में वे खास आनंद अनुभव करते क्योंकि, जैसा वे कहते थे 'मुझे ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करना होगा जो मेरे बाद कम्युनिस्ट प्रचार को जारी रखें'।

1881 में ही मार्क्स पहली बार काउत्सकी से मिले लेकिन उनके बारे में मार्क्स की छवि सकारात्मक नहीं बनी। हालांकि वे 'अपनी ही तरह के भले आदमी' थे लेकिन वे बुनियादी रूप से 'औसत बुद्धि के, संकीर्ण नजरिए के, अकाल पक्व (उम्र केवल 26 साल), बहुज्ञ, प्रचलन के पीछे पागल, सांख्यिकी की बात बहुत करने वाले लेकिन जिसकी समझ नहीं है और स्वभाव से अशिक्षितों की जमात के सदस्य' लगे। इसलिए मार्क्स ने मजाक के साथ अपनी पुत्री जेनी से राज बताया कि उन्होंने काउत्सकी को 'एंगेल्स के हवाले करने का' फैसला किया है। साथ ही जोड़ा कि एंगेल्स उनके प्रति थोड़ा 'अधिक सहनशील' हो गए हैं क्योंकि उन्हें काउत्सकी की 'पीने की क्षमता का पर्याप्त सबूत' मिल चुका है।[17]

उन गर्मियों में मार्क्स ने फ्रांस में चुनाव से जुड़ी घटनाओं पर बारीक नजर बनाए रखी। ल्यों गाम्बेत्ता (1838-82) के प्रधान मंत्री बनने और संसद में उनकी रिपब्लिकन यूनियन के बहुमत पाने की उम्मीद थी। चुनाव से दो हफ़्ते पहले उन्होंने अपना अनुमान एंगेल्स को बताया:

> 'लगता है कि चरम वामपंथी अपनी सीटें कुछ हद तक बढ़ा सकेंगे लेकिन इसकी सबसे बड़ी खबर शायद गाम्बेत्ता की जीत होगी। फ्रांस में हालात अगर वही रहे जो हैं, तो चुनाव की संक्षिप्त अवधि पाखंडियों के पक्ष में मामले को तय कर देगी। उनके हाथ में असंख्य मजबूत पद जाएंगे, जो सरकारी तंत्र में ऊंची जगहों पर पहुँचाते हैं और जो "खजाने" को नियंत्रित करते हैं। "ग्रेवी के अवसरवादी अनुयायी" तो गाम्बेत्ता को चाट गए होते अगर उसकी हालिया असफलताओं के चलते वे उसके पुछल्लों,

17. असल में एंगेल्स भी काउत्सकी के बारे में बहुत उत्सुक न थे। जर्मन पार्टी के एक युवा दिमाग एडुआर्ड बर्नस्टाइन को वे अधिक पसंद करते थे। जैसा कि उन्होंने अगस्त बेबेल, इस जर्मन समाजवादी नेता की दोनों बहुत इज्जत करते थे, को बताया बर्नस्टाइन को 'सच्ची रणनीति आती है, काउत्सकी के एकदम विपरीत चीजों पर सीधी पकड़ है। काउत्सकी ईमानदार हैं लेकिन उनमें आडम्बर बहुत है। वे जन्मजात प्रलापी हैं। उनके हाथों में जटिल मामले आसान नहीं होते बल्कि आसान चीजें भी जटिल हो जाती हैं'। एंगेल्स के मुताबिक 'किसी विशेषांक के लम्बे लेखों में वे सचमुच कुछ बेहतर बातें लिख जाते हैं लेकिन वे चाहे जितना जोर लगा लें अपनी आदत पर काबू नहीं पा सकते। उनकी आदतें उनसे अधिक ताकतवर हैं। अखबार के लिए इस तरह का पंडिताऊ व्यक्ति नुकसानदेह होगा।' इसी आधार पर एंगेल्स साप्ताहिक अखबार का संपादक बर्नस्टाइन को बनाए रखने में कामयाब हुए।

> काज़ो, कोंस्तान्स और फ़ॉरे, को मंत्रिमंडल के बाहर फेंक सकने की ऊर्जा जुटा पाते। चूँकि वे ऐसा नहीं कर सके इसलिए पदों के शिकारी, सट्टा बाजार के सटोरिये आदि खुद से ही कह रहे हैं कि "गाम्बेत्ता ही जीतेगा!" –क्रांतिकारी और प्रतिक्रियावादी अखबार उस पर रोज जो आम हमले कर रहे हैं उनसे तमाम बेवकूफियों के बावजूद उसका कद बढ़ ही रहा है। इन सबके अतिरिक्त किसान गाम्बेत्ता को सम्भावित गणतंत्र में सबसे बेहतर विकल्प मानते हैं।'

उसी महीने बाद में मार्क्स ने एंगेल्स को 'पेरिस में "फ़ेडरेशन ऑफ़ द सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी ऑफ़ फ्रांस" नामक मजदूरों की पार्टी का हाल' बताया। 'हिस्ट्री ऑफ़ द पेरिस कम्यून ऑफ़ 1871 (1876)' के लेखक और क्रांतिकारी प्रास्पर-ओलिविए लिसागरी (1838-1901) को मार्क्स 'इस मामले में पूरी तरह निष्पक्ष' मानते थे और उन्होंने बताया था कि 'हालांकि फिलहाल यह बीज रूप में ही मौजूद है फिर भी यही अकेले तमाम किस्म की बुर्जुआ पार्टियों के समक्ष किसी काम लायक गिनी जा सकती है'। इसका संगठन 'हालांकि अब भी बहुत नाकाफी और कमोबेश खयाली' है 'फिर भी यह इतनी अनुशासित है कि प्रत्येक इलाके में प्रत्याशी खड़ा कर सकती है ताकि सभाओं में इसकी मौजूदगी महसूस हो सके और आधिकारिक समाज के लोग खुन्नस खाएँ'। मार्क्स ने 'हरेक रंग के पेरिस के अखबारों को' पढ़कर इन बातों को परख लिया था और देखा था कि 'कोई भी ऐसा अखबार नहीं है जो सबके काम में बाधा डालने वाली मजदूरों की इस पार्टी पर दांत न पीस रहा हो'।

अपने कमरे में जब वे अपनी मेज पर बैठते तो पूरी दुनिया उनके सामने होती। अमेरिका में सामाजिक बदलाव का अध्ययन, भारत में औपनिवेशिक उत्पीड़न की समाप्ति की आशा, फ़ेनियन मकसद के लिए समर्थन, ब्रिटेन के आर्थिक संकट का विश्लेषण और फ्रांस के चुनावों में रुचि से पता चलता है कि मार्क्स लगातार दुनिया भर के प्रत्येक अक्षांश और देशांतर में विकासमान सामाजिक टकरावों के संकेतों को गौर से देख रहे थे। जहाँ कहीं उनका उदय होता, वे उनकी खोज खबर लेने की कोशिश करते। वे अपने बारे में अकारण नहीं कहते थे 'मैं विश्व नागरिक हूँ और जहाँ कहीं रहता हूँ वहीं कुछ करता हूँ'।

3

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और रूसी विवाद

1. ग्रामीण कम्यून के भविष्य के बारे में

अपने राजनीतिक लेखन में मार्क्स ने हमेशा रूस को मजदूर वर्ग की यूरोप व्यापी मुक्ति की एक बड़ी बाधा के रूप में चिन्हित किया। *न्यू यार्क ट्रिब्यून* के लेखों और 'सीक्रेट डिप्लोमैटिक हिस्ट्री ऑफ़ द एटीन्थ सेन्चुरी (1856-57)' में तथा अपने भारी भरकम पत्रागार में भी उन्होंने जोर देकर कहा कि जार का विशाल साम्राज्य अपने सामाजिक पिछड़ेपन, धीमे आर्थिक विकास, तानाशाह राजनीतिक शासन और कट्टर विदेश नीति के चलते प्रतिक्रांति की अग्रिम चौकी बना हुआ है।

मार्क्स ने यह राय बहुत दिनों तक बनाए रखी। लेकिन जिंदगी के आखिरी सालों में रूस को थोड़ा अलग नजर से देखना शुरू किया और माना कि वहाँ कुछ ऐसे गहरे बदलाव हो रहे हैं जो किसी बड़े सामाजिक रूपांतरण की पूर्वशर्त साबित हो सकते हैं। रूस में ब्रिटेन के मुकाबले क्रांति की अधिक संभावना दिखी क्योंकि पूँजीवाद ने हालांकि ब्रिटेन में आनुपातिक रूप से दुनिया भर में सबसे अधिक कारखाने के मजदूरों को जन्म दिया था लेकिन आंशिक रूप से औपनिवेशिक शोषण पर आधारित बेहतर जीवन स्थितियों के चलते मजदूर वर्ग आंदोलन कमजोर पड़ा था और उसमें ट्रेड यूनियन सुधारवाद की नकात्मक प्रवृत्तियों ने जड़ जमा ली थी।[1]

---

1. 1882 में 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' के दूसरे रूसी संस्करण की भूमिका में मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा था '1848-49 की क्रांति के दौरान यूरोपीय राजाओं ने ही नहीं, वरन यूरोपीय पूँजीपतियों ने भी सर्वहारा वर्ग से, जो अभी जाग ही रहा था, अपनी मुक्ति मात्र रूसी हस्तक्षेप में पाई। ज़ार को यूरोपीय प्रतिक्रियावाद का

पाँचवें दशक के उत्तरार्ध से ही मार्क्स ने 1861 में भूदास प्रथा के खात्मे से पहले के रूसी किसान आंदोलनों का उत्साह के साथ स्वागत करना शुरू कर दिया था।[2] इसके बाद सातवें दशक में जब रूसी सीख ली तो आंकड़ों को देखकर और समाजार्थिक बदलाव संबंधी लेखों को पढ़कर[3] तथा प्रमुख रूसी विद्वानों के साथ पत्र व्यवहार के जरिए वहाँ के घटनाक्रम पर नजर लगाए रहे।

1881 में प्राचीन सामुदायिक रूपों में रुचि पैदा होने पर उन्होंने समकालीन मानवशास्त्रियों को पढ़ना शुरू किया और चूँकि उनके सरोकार लगातार यूरोप के परे पहुँच रहे थे इसलिए मौका मिलते ही उन्होंने रूस के बारे में अपनी जानकारी पुख्ता करनी शुरू की।

1881 के मध्य फ़रवरी में उन्हें सेंट पीटर्सबुर्ग के पुलिस प्रमुख की जान लेने की कोशिश करने वाले पापुलिस्ट ब्लैक रीडिस्ट्रीब्यूशन समूह की सदस्य वेरा जासूलिच (1848-1919) का संक्षिप्त लेकिन तीखा और लगाव भरा पत्र मिला। फ्रांसिसी में लिखी हुई यह चिट्ठी 16 फ़रवरी को जेनेवा से भेजी गई थी। जार की पुलिस से भागकर उन्होंने जेनेवा में शरण ली थी।

सरदार घोषित कर दिया गया। आज वह गातचिना (वही किला जहाँ पिता की हत्या के बाद अलेक्सांद्र तृतीय ने शरण ली थी) में क्रांति का युद्धबंदी है और रूस यूरोप में क्रांतिकारी कार्यकलाप का अगुआ दस्ता है'।

2. 29 अप्रैल 1858 को एंगेल्स को लिखे पत्र में मार्क्स ने लिखा 'रूस में भूदासों की मुक्ति का आंदोलन मुझे इसलिए महत्त्वपूर्ण लगता है कि इससे ऐसे आंतरिक विकास का संकेत मिलता है जो इस देश की पारम्परिक विदेश नीति के विपरीत भी जा सकता है'। उस समय रूस की कुल आबादी का 38 प्रतिशत भूदास ही थे।

3. 1877 में अपनी ही विकास यात्रा पर निगाह डालते हुए उन्होंने लिखा 'रूस के आर्थिक विकास के बारे में समझदार फैसला लेने के लिए मैंने रूसी सीखी और फिर बहुत सालों तक सरकारी और इस सवाल से जुड़े अन्य प्रकाशन पढ़ता रहा, उनका परिचय दार्शनिक और क्रांतिकारी निकोलाई चेर्नीशेव्सकी (1828-89) के लेखन से हुआ। मार्क्स ने उनकी बहुत सारी किताबें हासिल कीं। चेर्नीशेव्सकी की मशहूर किताब 'ए क्रिटीक ऑफ़ फिलासफिकल प्रीज्यूडिशेज अगेंस्ट कम्युनल ओनरशिप' के उद्धरण दर्ज किए। रूस संबंधी उनका अध्ययन इतना गहन होने लगा कि एंगेल्स को इससे परेशानी होने लगी। पाल लाफ़ॉर्ग के मुताबिक एंगेल्स ने उनसे कहा कि 'रूस में संपत्ति के उदय संबंधी कागजपत्र उन्होंने स्वेच्छा से सौंप दिए क्योंकि इनके चलते "पूँजी" को पूरा करने का काम बरसों से रुका पड़ा था'।

वे मार्क्स की जबर्दस्त प्रशंसक थीं और समझती थीं कि रूस में पूँजी की लोकप्रियता का उनको पता होगा और जानना चाहती थीं कि 'कृषि प्रश्न और ग्रामीण कम्यून' के बारे में सोचने वाले रूसी कामरेडों पर भी अपनी किताब के प्रभाव के बारे में जानते हैं या नहीं। जोर देकर कहा कि वे 'किसी और के मुकाबले बेहतर' इस सवाल की तात्कालिकता को समझ सकते हैं। यह सवाल रूसी क्रांतिकारियों के लिए 'जीवन मरण' का सवाल है और कि उनके जवाब पर 'हमारे क्रांतिकारी समाजवादियों का निजी भाग्य भी निर्भर' है। इसके बाद जासूलिच ने बहस के दो अलग अलग दृष्टिकोणों का सार प्रस्तुत कियाः

> 'ग्रामीण कम्यून या तो अतिशय टैक्स वसूली, कुलीनों को भुगतान और मनमाने प्रशासन से मुक्त होकर समाजवादी दिशा में विकसित हो यानी उत्पादन और वितरण को धीरे धीरे सामूहिक आधार पर संगठित किया जाए। ऐसी हालत में क्रांतिकारी समाजवादी लोग कम्यून की मुक्ति और विकास में अपनी सारी ताकत लगाएँगे।'

'बहरहाल यदि कम्यून का लोप निश्चित है तो समाजवादी के लिए इसकी गिनती करने के अतिरिक्त कोई अन्य काम नहीं रह जाएगा कि कितने दशकों में रूसी किसान की जमीन बुर्जुआजी के हाथ में पहुँचेगी और कितनी सदियों में रूसी पूँजीवाद विकास के उस स्तर पर पहुँचेगा जिस स्तर पर पश्चिमी यूरोप का पूँजीवाद पहुँच चुका है। तब उनका कार्यभार केवल शहरी मजदूरों के बीच प्रचार चलाना रह जाएगा जबकि ये मजदूर लगातार किसानों की बाढ़ में डूबते रहेंगे क्योंकि कम्यून के विनाश के चलते किसान समुदाय मजदूरी की खोज में बड़े शहरों की गलियों में भटकता फिरेगा।'

जासूलिच ने यह भी कहा कि बहस में शामिल कुछ लोगों का तर्क है कि 'ग्रामीण कम्यून ऐसा प्राचीन रूप है जिसका अंत इतिहास या वैज्ञानिक समाजवाद के समक्ष निश्चित है और इस मामले में कोई बहस नहीं हो सकती'। जिन लोगों का यह मत है वे खुद को मार्क्स का 'योग्य शिष्य, मार्क्सवादी' कहते हैं। उनका सबसे मजबूत तर्क अक्सर होता है कि 'मार्क्स ने यह कहा है'।

इसी वजह से उन्होंने मार्क्स से दिली गुजारिश की। 'हमारे साथ आप अत्यंत भला करेंगे अगर हमारे ग्रामीण रूसी कम्यून के सम्भव भविष्य के बारे में और इस सिद्धांत के बारे में कि दुनिया के प्रत्येक देश का पूँजीवादी

उत्पादन के सभी चरणों से गुजरना ऐतिहासिक अनिवार्यता है अपने विचार प्रकट करेंगे।' सवाल इतना जरूरी था और जासूलिच सबसे मशहूर जीवित समाजवादी से जवाब सुनने के लिए इस कदर बेचैन थीं कि अंत में उन्होंने 'कम से कम चिट्ठी की शक्ल में' उत्तर का अनुरोध किया। विस्तृत प्रबंध के लिए समय का अभाव होने पर इस चिट्ठी को ही रूसी में अनुवाद करके छापा जाएगा।

जासूलिच का सवाल सही समय पर आया था। उसी समय मार्क्स पूँजीवाद से पहले के समुदायों के बारे में अध्ययनरत थे। इसलिए जासूलिच के संदेश ने उन्हें अपनी तत्कालीन सैद्धांतिक रुचि से गहराई से जुड़े इस ऐतिहासिक ठोस मामले के विश्लेषण की प्रेरणा दी जिसकी भारी तात्कालिक प्रासंगिकता थी। उनके उत्तर की पूरी जटिलता को पूँजीवाद और समाजवाद में उसके संक्रमण संबंधी उनके चिंतन के संदर्भ में ही समझा जा सकता है।

2. क्या पूँजीवाद कम्युनिस्ट समाज की अनिवार्य पूर्वशर्त है?

मार्क्स के समूचे लेखन में यह मान्यता विद्यमान है कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति का प्रसार कम्युनिस्ट समाज के जन्म की अनिवार्य पूर्वशर्त है। 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' में उन्होंने और एंगेल्स ने घोषित किया था कि सामंती समाज के उन्मूलन के समय मजदूर-वर्गीय क्रांति की कोशिशों का असफल होना तय था 'सर्वहारा की उस समय की अविकसित अवस्था के कारण, और साथ ही उसकी मुक्ति के लिए आवश्यक आर्थिक अवस्थाओं के अभाव के कारण- उन अवस्थाओं के, जिन्हें अभी उत्पन्न होना था और जो आसन्न पूँजीवादी युग द्वारा ही उत्पन्न हो सकती थीं'।

नए भौगोलिक आविष्कारों और विश्व बाजार के जन्म का लाभ उठाकर बुर्जुआजी ने 'प्रत्येक देश में उत्पादन और उपभोग को सार्वदेशिक चरित्र दे दिया' था। इससे भी महत्त्व की बात कि इसने 'अपनी मौत के हथियारों' को जन्म दिया और ऐसे मनुष्यों को भी उत्पन्न किया जो इन हथियारों का उपयोग करेंगे यानी 'आधुनिक मजदूर वर्ग, सर्वहारा'। इनकी बढ़ोत्तरी उसी गति से हो रही थी जिस गति से पूँजीवाद का प्रसार हो रहा था। मार्क्स और एंगेल्स के मुताबिक 'उद्योग की उन्नति, जिसे पूँजीपति वर्ग अनिवार्यतः अग्रसर करता है, होड़ के कारण उत्पन्न मजदूरों के अलगाव की जगह पर उनका संसर्गजनित क्रांतिकारी एका कायम कर देती है'।

मार्क्स ने इसी तरह की बात थोड़ा और राजनीतिक स्वर में 'पीपुल्स पेपर की सालगिरह के मौके पर अपने वक्तव्य' (1856) में कही। इसे याद करते हुए कि ऐतिहासिक रूप से अभूतपूर्व औद्योगिक और वैज्ञानिक ताकतों का जन्म पूँजीवाद के साथ हुआ है उन्होंने उस मौके पर मौजूद जुझारू साथियों से कहा 'भाप, बिजली और स्वचालित वाहन ने श्रीमान बार्ब्स, रास्पाइल और ब्लांकी तक के मुकाबले अधिक ही खतरनाक क्रांतिकारी बदलावों को जन्म दिया है'।

ग्रुंड्रिस में मार्क्स ने इस विचार को कई बार दुहराया कि पूँजीवाद 'बुर्जुआ समाज' को जन्म देता है और प्रकृति तथा सामाजिक तंत्र का सार्वभौमिक अधिग्रहण समाज के सदस्यों द्वारा खुद ही किया जाता है'। उक्त वक्तव्य में उन्होंने साफ साफ मंजूर किया कि

> 'पूँजी राष्ट्रीय सीमाओं और पूर्वाग्रहों तथा प्रकृति पूजा के परे ले जाती है। इसके साथ ही वह वर्तमान जरूरतों की पारम्परिक संतुष्टि और बहुत दीर्घकाल से स्थापित तथा संतोषपूर्वक मान्य सीमाओं में आबद्ध पुरानी जीवन शैली के पुनरुत्पादन से भी बाहर खींच लाती है। पूँजी इन सबके लिए विध्वंसकारी होती है और इनमें लगातार क्रांतिकारी बदलाव करती रहती है। वह उत्पादक शक्तियों के विकास में, जरूरतों के सीमा विस्तार में, उत्पादन के विविधीकरण में तथा सभी प्राकृतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के शोषण और विनिमय की रुकावटों को तोड़ फेंकती है।'

पूँजीवादी उत्पादन के सकारात्मक परिणामों के बारे में सर्वाधिक विश्लेषणात्मक विवरण 'पूँजी' के पहले खंड के अंत में 'पूँजीवादी संचय की ऐतिहासिक प्रवृत्ति' शीर्षक अनुभाग में नजर आता है। संदर्भित अंश में वे पूँजीवाद द्वारा पैदा की गई छह परिस्थितियों का सार प्रस्तुत करते हैं। खासकर केंद्रीकरण की प्रवृत्ति जिससे कम्युनिस्ट समाज के जन्म की बुनियादी पूर्वापेक्षाओं की पूर्ति होती है। ये हालात हैं– 1) सहकारी श्रम प्रक्रिया; 2) उत्पादन में वैज्ञानिक-तकनीकी योग; 3) उत्पादन द्वारा प्राकृतिक शक्तियों का अधिग्रहण; 4) ऐसी मशीनों का निर्माण जिनका संचालन मजदूर मिलकर ही कर सकते हैं; 5) उत्पादन के सभी साधनों का मितव्ययीकरण; और 6) विश्व बाजार के निर्माण की प्रवृत्ति। मार्क्स कहते हैं :

> 'कुछ पूँजीपतियों द्वारा बहुत से पूँजीपतियों के इस संपत्ति हरण के साथ साथ, अधिकाधिक बढ़ते हुए पैमाने पर श्रम-प्रक्रिया का सहकारी रूप विकसित होता

> जाता है, तकनीकी विकास के लिए सचेतन ढंग से विज्ञान का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है, भूमि को उत्तरोत्तर अधिक सुनियोजित ढंग से जोता-बोया जाता है, श्रम के औजार ऐसे औजारों में बदलते जाते हैं, जिनका केवल सामूहिक ढंग से ही उपयोग किया जा सकता है, उत्पादन के साधनों का संयुक्त, समाजीकृत श्रम के साधनों के रूप में उपयोग करके हर प्रकार के उत्पादन के साधनों का मितव्ययिता के साथ इस्तेमाल किया जाता है, सभी लोग संसारव्यापी मंडी के जाल में फंस जाते हैं और इसलिए पूँजीवादी शासन का स्वरूप अधिकाधिक अंतर्राष्ट्रीय होता जाता है।'

मार्क्स अच्छी तरह से जानते थे कि मुट्ठी भर स्वामियों के हाथ में उत्पादन के संकेंद्रण से मजदूर वर्ग की 'गरीबी, अत्याचार, गुलामी, पतन और शोषण' की बढ़ोत्तरी होती जाती है लेकिन वे यह भी जानते थे कि 'मजदूरों में सहकार भी वही पूँजी पैदा करती है जो उनकी नियोक्ता होती है'। उनको यकीन था कि पूँजीवाद के तहत उत्पादक शक्तियों की जो असाधारण वृद्धि हुई वह पहले की सभी उत्पादन पद्धतियों से वृहत्तर और तीव्रतर थी तथा उसने ऐसी स्थितियाँ तैयार कर दी हैं जिनके चलते खुद पूँजीवाद द्वारा उत्पन्न समाजार्थिक संबंधों पर विजय पाई जा सके और समाजवादी समाज की ओर संक्रमण हासिल हो सके।

मार्क्स ने 'पूँजी' में लिखा कि 'पूँजीवादी उत्पादन पद्धति अपने आपको हमारे समक्ष श्रम प्रक्रिया को एक सामाजिक प्रक्रिया में बदलने के लिए ऐतिहासिक अनिवार्य शर्त के रूप में पेश करती है'। उनकी नजर में 'कामगारों को जब कभी खास तरह की स्थितियों में रखा जाता है तो श्रम की सामाजिक उत्पादक शक्ति पूँजी के लिए मुफ़्त उपहार बन जाती है और पूँजी ही उन्हें ऐसी स्थितियों में डालती है'। मार्क्स को लगा कि कम्युनिज्म के लिए सबसे अनुकूल स्थितियाँ पूँजी के प्रसार के जरिए ही साकार हो सकती हैं:

> 'मूल्य को ही विस्तारित करने की सनक में (पूँजीपति) निर्ममता के साथ मानव जाति को उत्पादन के लिए उत्पादन के काम में झोंक देता है; इस तरह वह समाज की उत्पादक शक्तियों को विकास के लिए मजबूर करता है और उन भौतिक स्थितियों को पैदा करता है जिनके आधार पर ही समाज के उच्चतर रूप का निर्माण हो सकता है, एक ऐसा समाज जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का पूर्ण और स्वतंत्र विकास ही नियामक सिद्धांत होगा।'[4]

---

4. 7 दिसम्बर 1867 का मार्क्स का पत्र देखें जिसमें वे एंगेल्स को वे तर्क बता रहे हैं जिन्हें उनके मित्र की ओर से लिखी जा रही 'पूँजी' की समीक्षा में वे उल्लिखित देखना

कम्युनिज्म की राह हमवार करने में पूँजीवादी उत्पादन पद्धति की निर्णायक भूमिका संबंधी सोच विचार राजनीतिक अर्थशास्त्र की मार्क्सी आलोचना में लगातार बना रहा। जैसा कि उन्होंने ग्रुंड्रिस में लिखा, हालांकि पूँजी की एक प्रवृत्ति ऐसे 'प्रयोज्य समय का सृजन' है जिसे बाद में वह 'अतिरिक्त श्रम में बदल देती है'। यह श्रम का अधिकतम मूल्यवर्धन करती है जबकि 'किसी वस्तु के उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम की मात्रा को घटाकर असल में न्यूनतम कर देती है'। मार्क्स के लिए यह बात बेहद जरूरी थी। इससे 'स्वतंत्र श्रम के लाभ' में सहायता मिलनी थी और इसे 'श्रम की मुक्ति की शर्त' होना था। इस तरह पूँजी 'खुद के बावजूद सामाजिक रूप से प्रयोज्य समय के सृजन में सहायक बनी, समूचे समाज के लिए श्रम के समय को घटाकर न्यूनतम कर दिया और इस तरह सबके निजी विकास के लिए मुक्त समय को जन्म दिया।'

मार्क्स न केवल इस बात में यकीन करते थे कि पूँजीवाद, उत्पादक शक्तियों की अधिकतम वृद्धि की अपनी क्षमता के चलते, अब तक की सर्वोत्तम व्यवस्था है; वे यह भी मानते थे कि, मनुष्यों के निर्मम शोषण के बावजूद उसमें अनेक सम्भावित प्रगतिशील तत्व हैं जिनके चलते, पहले के समाजों के मुकाबले इसके तहत मनुष्य की क्षमता का मूल्यवर्धन बहुत अधिक होता है। हालांकि वे पूँजीवाद के उत्पादनवादी सिद्धांत से, अतिरिक्त श्रम के उत्पादन की अपरिहार्यता से गहराई से नफरत करते थे फिर भी वे

चाहते थे। उन्होंने अपनी किताब को इस बात का मुजाहिरा बताया कि 'आर्थिक रूप से विचार करने पर वर्तमान समाज एक नए, उच्चतर रूप से भरा हुआ है'। अपनी खोजों और उद्विकास संबंधी डार्विन के सिद्धांत के बीच खतरनाक तुलना करते हुए उन्होंने सुझाया कि उनकी किताब में दिखाया गया है कि 'जहाँ आधुनिक आर्थिक संबंधों के प्रत्यक्ष डरावने नतीजे निकले हैं वहाँ भी अदृश्य प्रगति मौजूद' है और कि 'अपने इस आलोचनात्मक रुख के चलते' उन्होंने 'शायद न चाहते हुए भी तमाम समाजवाद अर्थात यूटोपिया आधारित समाजवाद के ताबूत में हमेशा के लिए कील ठोंक दी है'। अंततः एंगेल्स को सुझाए वाक्यों में अपने इस गहरे यकीन पर फिर से जोर दिया कि 'जहाँ श्रीमान लासाल पूँजीपतियों को तो गाली देते हैं लेकिन प्रशियाई जमींदारों की जी हुजूरी करते हैं उसके विपरीत श्रीमान मार्क्स पूँजीवादी उत्पादन की ऐतिहासिक जरूरत बताते हैं'।

उत्पादक क्षमता में बढ़ोत्तरी को व्यक्ति की क्षमता में वृद्धि से जुड़ा हुआ मानते थे। असल में ग्रुंड्रिस में उन्होंने तर्क दियाः

> 'पुनरुत्पादन की क्रिया में ही न केवल आत्मगत स्थितियाँ बदलती हैं, मसलन गांव शहर हो जाता है, जंगल उपजाऊ मैदान बन जाते हैं आदि, बल्कि उत्पादक भी बदलते हैं। वे इस अर्थ में रूपान्तरित हो जाते हैं कि अपने भीतर नए गुणों का विकास करते हैं। उत्पादन के जरिए वे नई शक्तियों और नए विचारों, अंतःक्रिया के नए तरीकों, नई जरूरतों और नई भाषा का विकास करते हैं।'

उत्पादक शक्तियों की इस गहनतर और जटिलतर प्रगति के चलते 'व्यक्ति का सर्वाधिक समृद्ध विकास' होता है और मनुष्यों के बीच संबंधों की 'सार्वभौमिकता' का जन्म होता है।

'पूँजी' में भी मार्क्स ने बताया था कि 'मालों के विनिमय के चलते वे सभी स्थानीय और निजी संबंध टूट जाते हैं जो प्रत्यक्ष वस्तु विनिमय से अभिन्न तौर पर जुड़े थे और ऐसे सामाजिक संबंधों का पूरा संजाल विकसित हो जाता है जो स्वतःस्फूर्त रूप से बढ़ता है और मनुष्यों के नियंत्रण से पूरी तरह बाहर होता है'। इसके चलते 'अत्यावश्यक' हो जाता है कि उत्पादन 'मानव जाति के सम्पूर्ण विकास के लिए समुचित रूप के तहत' संचालित हो।

अंतिम बात, मार्क्स को लगा कि पूँजीवाद की कुछ प्रवृत्तियाँ स्त्री की मुक्ति तथा घर के भीतर के संबंधों के आधुनिकीकरण के लिए अनुकूल होती हैं। इंटरनेशनल की पहली कांग्रेस के लिए लिखित अस्थायी जनरल कौंसिल के प्रतिनिधियों हेतु महत्त्वपूर्ण निर्देशों के तहत विभिन्न सवालों पर उन्होंने बताया कि हालांकि 'पूँजी के तहत इसे घृणास्पद हद तक विकृत कर दिया जाता है' फिर भी 'आधुनिक उद्योग द्वारा सामाजिक उत्पादन के महान काम में स्त्री के साथ ही पुरुष बच्चों और किशोरों को भी सहकार में लगा देने की प्रवृत्ति प्रगतिशील, गम्भीर और न्यायोचित प्रवृत्ति थी।'

इसी तरह की राय उन्होंने 'पूँजी' में भी व्यक्त किया। उदाहरण के लिएः

> 'पूँजीवादी व्यवस्था के तहत पुराने पारिवारिक बंधनों का बिखराव जितना भी भयानक और वीभत्स प्रतीत हो, आधुनिक उद्योग ने उत्पादन की प्रक्रिया में स्त्रियों को, युवाओं को और बच्चों-बच्चियों को घरेलू सीमा के बाहर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करके परिवार के और स्त्री-पुरुष संबंधों के एक उच्चतर रूप की नई आर्थिक बुनियाद पैदा कर दिया है।'

मार्क्स ने आगे कहा कि जहाँ 'पूँजीवादी उत्पादन ने कृषि और हस्तशिल्प को उनके शैशव में जोड़े रखने वाले एकता के पुराने बंधनों को पूरी तरह तोड़ दिया है', वहीं उसने 'आबादी को विराट केंद्रों में एकत्र कर दिया है,–शहरी आबादी की अधिकाधिक प्रधानता को स्थापित किया है (और) समाज की ऐतिहासिक चालक शक्ति का संकेंद्रण कर दिया है।'

कुल मिलाकर, 'पूँजी' और उसके मसौदा पांडुलिपियों में मार्क्स ने जिस द्वंद्वात्मक पद्धति का उपयोग किया था उसके आधार पर उन्होंने माना कि 'नए समाज के निर्माण के तत्व' परिपक्व होते हैं 'भौतिक परिस्थितियों और उत्पादन की प्रक्रिया के सामाजिक स्तर से उनके जुड़ाव' के साथ। ये 'भौतिक पूर्वाधार' निर्णायक हैं 'भविष्य में उच्चतर संश्लेषण' की प्राप्ति के लिए और हालांकि क्रांति कभी केवल आर्थिक गतिकी से नहीं पैदा होती बल्कि उसके लिए हमेशा राजनीतिक कारक की भी जरूरत पड़ती है फिर भी कम्युनिज्म के आगमन के लिए 'समाज में एक भौतिक आधारभित्ति या कुछ ऐसी परिस्थितियों की' जरूरत पड़ती है 'जो खुद विकास की लम्बी और कष्टसाध्य प्रक्रिया की स्वतःस्फूर्त उपज होती हैं।'

'पूँजी' के बाद के राजनीतिक चरित्र के संक्षिप्त लेकिन महत्त्वपूर्ण लेखन में भी मार्क्स के चिंतन में इसी किस्म के विचारों की निरंतरता का सबूत मिलता है। बाकुनिन की 'राज्य और अराजकता' के उद्धरणों और आलोचनात्मक टिप्पणियों में इस रूसी क्रांतिकारी से उनके बुनियादी भेद की अभिव्यक्ति हुई है। मुद्दा पूँजीवादी समाज का विकल्प तैयार करने की पूर्वावश्यकता से जुड़ा हुआ था। इस संघर्ष का नेतृत्व करने वाली सामाजिक शक्ति के बारे में मार्क्स ने लिखाः

> 'कोई भी बुनियादी सामाजिक क्रांति आर्थिक विकास की तयशुदा ऐतिहासिक परिस्थितियों से जुड़ी होती है। इसलिए यह वहीं सम्भव हो सकती है जहाँ पूजीवादी उत्पादन के साथ साथ औद्योगिक सर्वहारा कुल जनसंख्या का कम से कम अच्छा खासा हिस्सा हो जाए।'

'गोथा कार्यक्रम की आलोचना' में उन्होंने और आगे बढ़कर तर्क दिया कि इसे 'ठोस रूप से साबित करने की' जरूरत है कि 'वर्तमान पूँजीवादी समाज में अंततः वे भौतिक आदि परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं जो मजदूरों को इस ऐतिहासिक अभिशाप से ऊपर उठने को मजबूर करती हैं और इसकी क्षमता

भी प्रदान करती हैं'। आखिरी समय की प्रकाशित कुछ संक्षिप्त टीपों में से एक, फ्रेंच सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी के चुनाव कार्यक्रम की 'प्रस्तावना' (1880) में भी उन्होंने जोर देकर कहा कि उत्पादकों द्वारा उत्पादन के साधनों पर कब्जा करने के लिए बुनियादी जरूरत वह 'सामूहिक रूप (है) जिसके भौतिक और बौद्धिक तत्व पूँजीवादी विकास से ही उत्पन्न हो चुके हैं'।

अपने लेखन में मार्क्स ने सावधानी के साथ समाजवादी समाज के किसी सार्वभौमिक माडल के निर्माण से परहेज किया। इस काम को वे अनावश्यक और नुकसानदेह मानते थे। इसीलिए 'पूँजी' के दूसरे जर्मन संस्करण के पश्चलेख में उन्होंने सूचित किया कि 'पका पकाया परोसने वालों के लिए भविष्य की पाकविधि लिखना' किसी भी तरह उनकी रुचि का अंग नहीं है; और 1879-80 में जर्मन अर्थशास्त्री एडोल्फ वागनेर (1835-1917) की आलोचना के जवाब में उन्होंने साफ साफ लिखा 'मैंने कभी किसी "समाजवादी व्यवस्था" की स्थापना नहीं की'।

जिस तरह मार्क्स ने कभी यह दिखाना नहीं चाहा कि समाजवाद कैसा होना चाहिए उसी तरह पूँजीवाद संबंधी अपने चिंतन लेखन में उन्होंने दावा नहीं किया कि सर्वत्र मानव समाज एक ही रास्ते पर चलने को मजबूर है या उन्हें समान चरणों से होकर गुजरना होगा। बहरहाल उन्हें बेहद कृतज्ञता महसूस हुई कि जो बात, कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति सर्वत्र ऐतिहासिक अनिवार्यता है, उनके नाम से प्रचारित की जाती है उसका खंडन कर सकेंगे। रूस में पूँजीवादी विकास की सम्भावना पर विवाद इसका साफ सबूत था।

शायद 1877 में मार्क्स ने ओतेचस्त्वेन्ये ज़ापिस्की (देशभक्त टिप्पणी) के संपादक मंडल के नाम एक लम्बी चिट्ठी तैयार की थी जिसमें उन्होंने रूस में ग्रामीण कम्यून (ओबश्चिना) के भविष्य पर साहित्य समीक्षक और समाजशास्त्री निकोलाई मिखाइलोव्सकी (1842-1904) के 'कार्ल मार्क्स बिफ़ोर द ट्रिब्यूनल ऑफ़ मिस्टर ज़ुकोव्स्की' शीर्षक एक लेख का जवाब देना चाहा था। मार्क्स ने चिट्ठी को एकाधिक बार दुरुस्त किया लेकिन आखिरकार वह अंतिम रूप न ग्रहण कर सकी (काट कूट के निशानों समेत) और कभी भेजी नहीं गई। बहरहाल इसमें कुछ ऐसे तर्कों का पूर्वाभास मिलता है जिनका इस्तेमाल बाद में वेरा जासूलिच को लिखे अपने जवाब में मार्क्स ने किया।

मिखाइलोव्सकी ने कई लेख लिखकर कुछेक बारीकियों को छोड़कर

लगभग वही सवाल उठाए थे जिन्हें चार साल बाद जासूलिच ने उठाया। असल में जासूलिच के लिए मूल मामला इस बात से जुड़ा हुआ था कि समाजवादी आंदोलन की प्रचारात्मक गतिविधि पर ग्रामीण कम्यून के सम्भावित बदलावों का क्या असर पड़ेगा। दूसरी ओर मिखाइलोव्सकी का सरोकार सैद्धांतिक स्तर पर ओबश्चिना के भविष्य के बारे में विभिन्न मतों का विवेचन था। इन मतों में एक छोर पर उदारपंथी अर्थशास्त्रियों की थीसिस थी कि रूस को ओबश्चिना को छोड़कर सीधे पूँजीवादी निजाम को अपनाना चाहिए तो दूसरे छोर पर यह तर्क था कि यह कम्यून आगे विकसित हो सकता है और इससे ग्रामीण आबादी पर पूँजीवादी उत्पादन पद्धति के नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है।

जहाँ जासूलिच ने मार्क्स से सम्पर्क करके उनकी राय और व्यावहारिक काम के लिए सलाह मांगी वहीं मिखाइलोव्सकी ने रूसी लोकप्रियतावाद के मशहूर प्रतिनिधि होने के नाते कम्यून समर्थक थीसिस का पक्ष लिया और माना कि मार्क्स कम्यून के नाश के पक्षधर होंगे। जासूलिच ने लिखा कि 'मार्क्सवादी' कह रहे हैं कि पूँजीवाद का विकास अपरिहार्य है। मिखाइलोव्सकी ने और आगे बढ़कर दावा कि इस थीसिस का लेखन खुद मार्क्स ने 'पूँजी' में किया है। लेकिन अपनी बात के समर्थन में ठीक ठीक उद्धरण नहीं पेश कर सके और इसकी जगह 'पूँजी' के पहले जर्मन संस्करण के एक परिशिष्ट में अलेक्सांद्र हर्ज़ेन (1812-70) के साथ मार्क्स के विवाद के संदर्भ का उल्लेख किया। असल में मार्क्स ने हमेशा हर्ज़ेन की मान्यता का विरोध इस आधार पर किया कि वे रूसी कम्यून का इस्तेमाल केवल यह कहने के लिए करते हैं 'कि पुराने, सड़े-गले यूरोप का पुनर्जीवन सर्व-स्लाववाद की विजय के जरिए ही हो सकती है'। उन्होंने रूखे तरीके से कहा कि हर्ज़ेन के विरुद्ध उनकी बात का इस्तेमाल उनके अपने फैसलों को झूठा साबित करने के लिए नहीं किया जा सकता या जैसा मिखाइलोव्सकी ने कहा था, इसको खारिज करने के लिए नहीं किया जा सकता था कि 'पश्चिमी यूरोप जिस रास्ते पर चला या अब भी चल रहा है विकास के उस रास्ते से अलग रास्ता रूसी लोग अपनी मातृभूमि के लिए निकालने की कोशिश करें'।

चूँकि मार्क्स सैद्धांतिक अस्पष्टता से चिढ़ते थे इसलिए ओतेचस्त्वेन्ये ज़ापिस्की के संपादक मंडल के लिए अपनी वांछित चिट्ठी में 'साफ बोलना'

और उन निष्कर्षों को व्यक्त करना चाहते थे जिन पर वे अनेक वर्षों के अपने अध्ययन के बाद पहुँचे थे। उन्होंने निम्नलिखित वाक्य से शुरू किया जिसे पांडुलिपि में बाद में काट दिया 'अगर रूस उसी रास्ते पर चलता रहा जिस पर वह 1861 से चलता आ रहा है तो जनता को इतिहास द्वारा प्रदत्त कुछेक बेहतरीन अवसरों में से एक को खो देगा और पूँजीवादी निजाम के दुर्भाग्यपूर्ण उलटफेर को उसे बर्दाश्त करना पड़ेगा'।

मार्क्स ने सबसे पहले उन मामलों की सफाई पेश की जिनके विश्लेषण में उनका उल्लेख किया गया था। उन्होंने याद दिलाया कि 'पूँजी' के 'तथाकथित आदिम संचय' अनुभाग में उन्होंने बताना चाहा कि 'सामंती समाज की आर्थिक संरचना के लोप से' कैसे 'पश्चिमी यूरोप' में 'पूँजीवादी समाज की आर्थिक संरचना' के तत्व आजाद हो गए। यह प्रक्रिया पूरी दुनिया में नहीं चली, बल्कि केवल पुराने महाद्वीप यानी यूरोप में चली थी।

मार्क्स ने 'पूँजी' के फ्रांसिसी संस्करण के एक अंश का जिक्र किया जिसमें उन्होंने बताया था कि उत्पादकों से उत्पादन के साधनों के अलगाव का आधार 'कृषि उत्पादकों का संपत्तिहरण' था। साथ ही यह भी जोड़ा कि 'केवल इंग्लैंड में इस काम को मूलगामी तरीके से अंजाम दिया गया' लेकिन 'पश्चिमी यूरोप के सभी अन्य देशों ने उसी रास्ते का अनुकरण किया'।[5]

अपने तर्क को जारी रखते हुए मार्क्स ने संकेत किया कि 'पूँजी' में व्यक्त उनके विश्लेषण में पूँजीवादी उत्पादन की ऐतिहासिक प्रवृत्ति इस तथ्य में निहित है कि इसने 'नई आर्थिक व्यवस्था के घटक तत्वों का सृजन किया, सामाजिक श्रम की उत्पादक शक्तियों के साथ प्रत्येक उत्पादक के समग्र विकास को भी महानतम प्रेरणा प्रदान की'। असल में तो यह 'सामूहिक उत्पादन पद्धति' पर आधारित है और इसे सिर्फ़ 'सामाजिक संपत्ति में ही रूपांतरित किया जा सकता है'।

तो मिखाइलोव्सकी इस ऐतिहासिक ढाँचे को केवल एक तरीके से रूस में लागू कर सकते थे। अगर रूस 'पश्चिमी यूरोप के देशों की तरह एक पूँजीवादी देश' बनने की ओर अग्रसर है, और मार्क्स की नजर में पिछले कुछ

5. जोसेफ राय जब फ्रांसिसी अनुवाद कर रहे थे तो उसमें जोड़े गए इस महत्त्वपूर्ण विंदु को एंगेल्स ने 1890 के चौथे जर्मन संस्करण में शामिल नहीं किया था। बाद में यही संस्करण 'पूँजी' के अन्य अनेक अनुवादों का आधार बना।

सालों से उसी दिशा में बढ़ रहा है तो उसे 'पहले अपने किसानों के बड़े हिस्से को सर्वहारा में बदले बिना' सफलता नहीं मिलेगी। बाद में 'पूँजीवादी निजाम की गिरफ़्त में एक बार आ जाने पर उसे भी अन्य अपवित्र लोगों की तरह ही इसके निर्मम नियमों से होकर गुजरना होगा'।

मार्क्स को सबसे अधिक गुस्सा इस बात पर आया कि उनके मुताबिक उनके आलोचक ने 'पश्चिमी यूरोप में पूँजीवाद की उत्पत्ति का (उनका) ऐतिहासिक खाका सामान्य विकास पथ के ऐसे ऐतिहासिक-दार्शनिक सिद्धांत में बदल दिया है जिसे सभी लोगों पर घातक रूप से थोपा जाए, चाहे जिन भी ऐतिहासिक परिस्थितियों में वे अपने आपको (पाएँ)'। थोड़े व्यंग्य के साथ उन्होंने जोड़ा 'लेकिन वे मुझे माफ़ करें। यह करके उन्होंने मुझे अतिशय सम्मान तो दिया ही है, अतिशय बदनामी भी सौंपी है'।

प्राचीन रोम में किसानों के संपत्तिहरण और उत्पादन के साधनों से उनके अलगाव के उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने ध्यान दिया कि कैसे ये किसान 'पगारजीवी श्रमिक की जगह आलसी भीड़' बन गए। उस समय जो विकसित हुआ वह पूँजीवाद नहीं बल्कि गुलाम उत्पादन पद्धति थी। इससे मार्क्स ने निष्कर्ष निकाला कि 'भिन्न ऐतिहासिक संदर्भों में घटित होने वाली बहुत समान भी घटनाओं के नतीजे पूरी तरह से अलग होते हैं'। वास्तविक ऐतिहासिक रूपांतरणों को समझने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक परिघटना का अध्ययन अलग से किया जाए। इसके बाद ही उनकी तुलना एक दूसरे से की जा सकती है। उन्हें किसी 'सामान्य ऐतिहासिक-दार्शनिक सिद्धांत की ऐसी गुरु किल्ली से' व्याख्यायित करना सम्भव नहीं 'जिसकी सबसे बड़ी खूबी उसका इतिहासोपरि' होना हो।

असल में मिखाइलोव्सकी मार्क्स की वास्तविक सैद्धांतिक स्थिति के बारे में नहीं जानते थे। इसलिए उन्होंने उसकी आलोचना इस तरह से की कि उससे बीसवीं सदी के मार्क्सवाद के एक महत्त्वपूर्ण विंदु का पूर्वानुमान होता है। वह बात रूस और अन्य जगहों पर मार्क्स के अनुयायियों में फैल रही थी। मार्क्स द्वारा इस धारणा की अलोचना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसका रिश्ता न केवल वर्तमान से बल्कि भविष्य से भी बनता है।

3. सम्भव वैकल्पिक रास्ता

मार्क्स लगभग तीन हफ़्तों तक अपने कागजों में डूबे रहे। उन्हें अच्छी तरह पता था कि एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक सवाल का जवाब देना है और एक जरूरी राजनीतिक मामले में अपनी राय जाहिर करनी है।[6] उनकी मेहनत का नतीजा तीन लम्बे मसौदे, जिनमें कभी कभी अंतर्विरोधी तर्क भी आए हैं और जासूलिच को भेजा गया जवाब हैं। ये सभी फ्रांसिसी भाषा में हैं और एक ही तरीके से उनकी शुरुआत हुई है।

'सामंती उत्पादन से पूँजीवादी उत्पादन' की ओर यात्रा संबंधी अपने विश्लेषण को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए मार्क्स ने 'पूँजी' के फ्रांसिसी संस्करण से वही उद्धरण चुना जिसे उन्होंने नवम्बर 1877 में ओतेचस्त्वेन्ये ज़ापिस्की के संपादक मंडल को लिखी (अप्रेषित) चिट्ठी में घुसाया था। दूसरी पंक्ति में मार्क्स ने दुहराया कि सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण की 'ऐतिहासिक अपरिहार्यता' को 'पश्चिमी यूरोप के देशों' तक 'सीमित' रखा था।

इस बात को एक किस्म की आधारभित्ति के रूप में लेकर फिर उन्होंने ओबश्चिना को भविष्य के समाजवादी समाज का बीज मानने के बारे में विस्तार से बहुत समृद्ध चिंतन किया और उन ठोस सम्भावनाओं की परीक्षा की जिनका सामना असलियत में करना पड़ सकता है।

जो तीन मसौदे उन्होंने तैयार किये उनमें पहला वाला सबसे लम्बा था। इसमें मार्क्स ने जिसे 'एकमात्र गम्भीर तर्क' माना उसका विश्लेषण किया। यह तर्क था कि 'रूसी किसान कम्यून का बिखराव' क्यों अपरिहार्य है। 'अगर बहुत दूर तक वापस जाया जाए तो कमोबेश आदिम किस्म की साझा संपत्ति समूचे पश्चिमी यूरोप में पाई जा सकती है। सामाजिक विकास की बढ़ोत्तरी के

---

6. बुबेर का कहना है 'जिस गहराई और कर्तव्यपरायणता के साथ उन्होंने सही जवाब देने का परिश्रम किया वह काबिले तारीफ़ है। इससे पहले भी इसी गुत्थी को सुलझाने में उन्होंने समय लगाया था, अब फिर से विशेष तीव्रता के साथ उस पर हमला किया। बार बार हम देखते हैं कि एक नाजुक और सटीक सूत्र को खारिज करके वे दूसरा और भी सही सूत्र तैयार करते हैं। हालांकि यह लिखावट टुकड़े टुकड़े में है फिर भी रूसी ग्रामीण समुदाय को समेकित भाव से समझने के लिए अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयास इसमें नजर आता है'।

साथ सभी जगहों पर इसका लोप हो गया। केवल रूस में वह इस नियति से क्यों बचने में सक्षम हो?' इसके जवाब में मार्क्स ने दुहराया कि वे 'इस तर्क को केवल उतना ही सही मानते हैं जिस हद तक यह यूरोपीय अनुभवों पर आधारित है'। जहाँ तक रूस की बात हैः

'अगर रूस में पूँजीवादी उत्पादन अपनी व्याप्ति कर लेता है तो किसानों अर्थात रूसी जनता की बहुसंख्या को पगारजीवियों में बदलना होगा और इसके फलस्वरूप वे अपनी सामुदायिक संपत्ति से अधिकाधिक बेदखल होते जाएंगे। लेकिन जो भी हो, पश्चिमी पूर्वानुभव से कुछ भी साबित नहीं होता!'

मार्क्स ने ग्रामीण कम्यून के टूटने और उसके दीर्घकालीन अस्तित्व की समाप्ति की सम्भावना से इनकार नहीं किया। लेकिन ऐसा हुआ तो इसका कारण कोई ऐतिहासिक पूर्वनियति नहीं होगी। पूँजीवाद की अपरिहार्यता का तर्क देने वाले अपने स्वयंभू अनुयायियों का जिक्र करते हुए उन्होंने जासूलिच को अपने चिर परिचित व्यंग्य के साथ लिखा 'जिन रूसी "मार्क्सवादियो" की बात आपने की है उन्हें मैं एकदम नहीं जानता। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, जिन रूसियों के साथ मेरा निजी सम्पर्क है उनके विचार इसके पूरी तरह विपरीत हैं'।

लगातार पश्चिमी अनुभवों के इस जिक्र के साथ बहुत ही मूल्यवान राजनीतिक प्रेक्षण जुड़ा हुआ है। *न्यू यार्क ट्रिब्यून* के पचास दशक के पूर्वार्ध में लिखे अपने लेख 'भारत में अंग्रेजी राज के भावी परिणाम' (1853) में उन्होंने माना था कि 'इंग्लैंड को भारत में दोहरे ध्येय की पूर्ति करनी हैः एक विनाशकारी, दूसरा सृजनात्मक- पुराने एशियाई समाज को तोड़ना और पश्चिमी समाज के भौतिक आधार को एशिया में स्थापित करना', लेकिन रूस के बारे में उनकी सोच का परिप्रेक्ष्य साफ बदला हुआ है।

1853 में भी उन्हें पूँजीवाद की बुनियादी विशेषताओं के बारे में कोई भ्रम नहीं था। वे अच्छी तरह जानते थे कि पूँजीवाद ने कभी कोई 'प्रगति व्यक्ति और जन समुदाय को खून और गंदगी, दुख और अवनति में धकेले बिना नहीं हासिल की' लेकिन उन्हें यह भी पता था कि विश्व व्यापार के जरिए, उत्पादक शक्तियों के विकास के सहारे और उत्पादन को ऐसी चीज में बदलकर, जो प्रकृति की शक्तियों को काबू करने में वैज्ञानिक रूप से सक्षम हो, 'बुर्जुआ उद्योग और वाणिज्य ने एक नई दुनिया की भौतिक परिस्थिति पैदा कर दी है'।

सीमित और कभी कभी सतही पाठ के चलते यह बात मार्क्स की यूरोप-केंद्रीयता या पौर्वत्यवाद के सबूत के बतौर समझी जाती है। लेकिन इसमें महज पैंतीस साल की उम्र के एक युवा के पत्रकारीय लेखन में व्यक्त उपनिवेशवाद की सरल और आंशिक दृष्टि से अधिक कुछ भी नहीं है। 1881 में 'एथनोलॉजिकल नोटबुक्स' की विशाल परिकल्पनाओं की बात तो जाने दीजिए, तीन दशक के गम्भीर सैद्धांतिक शोध और सूक्ष्म निरीक्षण के उपरांत प्राक पूँजीवादी रूपों को अपनाने की सम्भावना के बारे में उनका नजरिया बदल गया था। इसी वजह से 'ईस्ट इंडीज' का उल्लेख करते हुए उन्होंने दर्ज किया 'सर हेनरी मेन और उनके कुनबे के कुछेक लोगों को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति को लगता है कि सामुदायिक भूस्वामित्व का उन्मूलन अंग्रेजों की बर्बरता के अलावे और कुछ नहीं है। इसने स्थानीय लोगों को आगे ले जाने की जगह पीछे धकेल दिया है।' कुल मिलाकर अंग्रेज 'बस स्थानीय कृषि को बरबाद कर सके और अकालों की संख्या तथा भीषणता दोगुनी हो गई।'

इस प्रकार रूसी ओबश्चिना का उसी नियति से गुजरना पूर्वनिश्चित नहीं था जिससे इससे पहले की सदियों में पश्चिमी यूरोप के इसी तरह के रूप गुजरे थे। पश्चिमी यूरोप में 'सामुदायिक संपत्ति पर आधारित समाज से निजी संपत्ति पर आधारित समाज में संक्रमण' कमोबेश समरूप रहा था। इस सवाल पर कि क्या रूस के लिए यह अपरिहार्य है मार्क्स ने सीधे जवाब दिया 'एकदम नहीं'।

मार्क्स ने भिन्न संदर्भों में उसी ऐतिहासिक माडल को इस्तेमाल करने से तो मजबूती से मना किया ही, यह भी सुझाया कि क्यों ओबश्चिना की लाक्षणिक विशेषताओं का गहनतर अध्ययन वांछित है। पश्चिमी यूरोप में 'खेतिहर उत्पादकों के संपत्तिहरण से–मजदूरों की व्यक्तिगत और टुकड़ों में बिखरी संपत्ति को पूँजीपतियों की निजी और संकेंद्रित संपत्ति में बदलने में मदद मिली'। लेकिन इस बात पर जोर देना होगा कि रूस में 'पूँजीवादी संपत्ति का नाश करके कम्युनिस्ट संपत्ति की स्थापना का मामला होगा'। इसके अतिरिक्त 'पश्चिमी यूरोप में सामुदायिक संपत्ति के विनाश और पूँजीवादी उत्पादन का जन्म–एक दूसरे से विराट मध्यावकाश से अलगाए हुए (थे) जिसमें आर्थिक क्रांतियों और उद्विकासों की एक समूची श्रृंखला चली'।

अपने सुपरिचित लचीलेपन और किसी पूर्वयोजनाहीनता के साथ मार्क्स

ने ग्रामीण कम्यून में बदलाव की सम्भावना पर विचार किया। उनके मुताबिक ओबश्चिना का दो दिशाओं में विकास हो सकता है– 'या तो निजी संपत्ति का तत्व–सामूहिक तत्व पर बरतरी हासिल कर लेगा या सामूहिक तत्व निजी तत्व पर विजय पाएगा।–यह सब कुछ इस पर निर्भर है कि वह किस ऐतिहासिक वातावरण में खुद को पाएगा'। उस समय जैसी स्थितियाँ मौजूद थीं उनमें इसके समाजवादी विकास की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता था।

जिस पहली बात को मार्क्स ने रेखांकित किया वह यह कि ग्रामीण कम्यून, अधिक विकसित आर्थिक रूपों के साथ मौजूद है। मार्क्स ने देखा कि रूस

> 'उच्च संस्कृति के साथ समकालिक है, पूँजीवादी उत्पादन के प्रभुत्व वाले विश्व बाजार से जुड़ा है। इस उत्पादन पद्धति के सकारात्मक परिणामों को समाहित करते हुए वह अपने ग्रामीण कम्यून के प्राचीन रूप को नष्ट करने की बजाए रूपांतरित और विकसित करने की स्थिति में है।'

किसान समुदाय 'इस तरह पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा खोजी गई सकारात्मक उपब्धियों को बिना उसके घायल कर देने वाले चंगुल में फंसे समाहित कर सकेगा'। जो लोग छलांगों की सम्भावना को खारिज करते थे और रूस के लिए भी पूँजीवाद को अपरिहार्य चरण समझते थे उनको संबोधित करते हुए मार्क्स ने व्यंग्यपूर्वक पूछा कि क्या रूस को 'इंजीनियरिंग उद्योग की लम्बी गर्भावस्था से गुजरना पड़ेगा–ताकि वह मशीनों, भाप के इंजनों, रेलों आदि का इस्तेमाल कर सके।' उसी तरह क्या 'पलक झपकते ही विनिमय की उस समूची यांत्रिकी (बैंक, कर्जदाता संस्था आदि) का प्रवेश' सम्भव नहीं हो गया 'जिनकी खोज में पश्चिम को सदियों का समय लगा था?'

रूस को गुलाम की तरह उन सभी ऐतिहासिक चरणों को दुहराना नहीं होगा जिनसे होकर इंग्लैंड और अन्य पश्चिम यूरोपीय देश गुजरे थे। इसलिए तार्किक बात तो यही है कि ओबश्चिना का भी समाजवादी रूपांतरण उसे अनिवार्य तौर पर पूँजीवाद से गुजारे बिना भी सम्भव है।

अंत में मार्क्स को जरूरी लगा कि जिस ऐतिहासिक मौके पर इस परिकल्पना की बात हो रही है उसका भी जायजा ले लिया जाए। 'इस युग की ऐतिहासिक प्रवृत्ति के अनुरूप' ग्रामीण कम्यून का समाजवादी विकास होगा इसका 'सर्वोत्तम सबूत' वह 'घातक (मार्क्स के राजनीतिक आशावाद ने

उनसे बहुत बार "घातक" लिखवाया था) संकट है जिससे पूँजीवादी उत्पादन उन यूरोपीय और अमेरिकी देशों में गुजर रहा है जहाँ वह चरम ऊंचाई पर पहुँच चुका है'। मानवशास्त्री लेविस हेनरी मोर्गन (1818-81) के अध्ययन से प्राप्त विचारों के सहारे उन्हें उम्मीद थी कि उस समय जारी आर्थिक संकट पूँजीवाद के 'विनाश' और 'अत्यंत आद्यकालीन सामूहिक उत्पादन और अधिग्रहण की उच्चतर व्यवस्था में आधुनिक समाज की वापसी' के लिए अनुकूल हालात पैदा कर सकता है।

इससे स्पष्ट है कि मार्क्स 'अलग थलग पड़े व्यक्तियों की कमजोरी से (उत्पन्न) आदिम किस्म के सहकारी या सामूहिक उत्पादन' की बात नहीं कर रहे थे बल्कि इसे वे 'उत्पादन के साधनों के समाजीकरण' का नतीजा मानते थे। उन्होंने कहा कि यह ओबश्चिना सामूहिक संपत्ति का 'सबसे आधुनिक आद्य रूप' है जो खुद ही 'तमाम बदलावों से गुजर चुका' है।

अमूर्त सूत्रों ने नहीं, इन अध्ययनों और विश्लेषणों ने मार्क्स के चुनाव को प्रभावित किया। रूसी ग्रामीण कम्यून 'अपने सदस्यों के बीच रक्त संबंधों पर आधारित' नहीं थे, बल्कि सम्भवतः वे 'रक्त संबंधों से एक साथ न बंधे हुए स्वतंत्र व्यक्तियों का पहला सामाजिक समूह' थे।

मार्क्स ने पुराने ग्रामीण कम्यूनों की आलोचना 'अलगाव' के लिए की थी क्योंकि बाहरी दुनिया से कोई सम्पर्क रखे बिना अपने आपमें सिमटे हुए ये कम्यून, राजनीतिक रूप से कहा जाए तो प्रतिक्रियावादी ज़ारशाही निजाम के लिए सबसे मुफ़ीद आर्थिक ढाँचा थे। 'एक कम्यून के जीवन से शेष कम्यूनों का कोई सम्पर्क-संबंध न होने से यह स्थानीकृत लघुविश्व—हमेशा केंद्रीय स्तर पर ऐसी तानाशाही को जन्म देता था जो कम्यूनों के ऊपर निरंकुश शासन करती थी'।

मार्क्स ने निश्चय ही कम्यूनों के बारे में अपने जटिल आलोचनात्मक मूल्यांकन को नहीं बदला और उनके विश्लेषण में व्यक्ति के विकास और सामाजिक उत्पादन का महत्त्व पूर्ववत कायम रहा। जासूलिच को लिखे पत्र के मसौदों से उनकी पूर्ववर्ती मान्यताओं में ऐसे किसी नाटकीय बदलाव की झलक नहीं मिलती जिसकी गंध बहुतेरे विद्वानों को लगी है।[7] नया तत्व

7. थियोडोर शानिन का कहना है कि 1867 में 'पूँजी' के प्रकाशन के बाद उनके चिंतन में आए 'महत्त्व के बदलाव' इन मसौदों में प्रकट हुए हैं। इसी तरह एनरिक डसेल

समाजवाद की ओर जाने वाले अन्य सम्भव रास्तों के प्रति सैद्धांतिक खुलापन है जिन पर पहले कभी उन्होंने विचार नहीं किया था या जिन्हें अगम्य माना था।[8]

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ज़ार अलेक्जेंडर द्वितीय (1818-81) के सुधारों के बाद ओबश्चिना की हालत बहुत कुछ बदल चली थी और उनके कई अंतर्विरोधी पहलू प्रकट हो रहे थे[9]:

> 'प्राकृतिक नातेदारी, जमीन के सामुदायिक स्वामित्व और तज्जनित सामाजिक संबंधों के चलते इसके ठोस आधार की गारंटी थी। अब वह उनसे आजाद हो चुका है। लेकिन पहले भी इनके साथ ही अलग घर और आवास, वैयक्तिक परिवार का निजी घेरा, खेती के लिए जमीन का अलग टुकड़ा और उसकी फसलों के निजी अधिग्रहण के चलते निजता का ऐसा वातावरण भी मौजूद था जो आदिम समुदायों की संरचना से मेल नहीं खाता था।'

यह 'दोहरापन' उसे 'सड़ाने वाला रोगाणु' साबित हो सकता था और पता चलता कि 'कम्यून के क्षरण के तत्व उसके सीने में ही मौजूद थे'। लेकिन इसके जीवन को खतरा बाहर के 'विध्वंसक प्रभावों' से भी था। उदाहरण के लिए, सरकारी कानून 'पश्चिमी पूँजीवादी व्यवस्था की कुछ शाखाओं' के समर्थन में थे जिनसे 'कृषि क्षेत्र में उत्पादक शक्तियों का कोई विकास तो

भी इसे 'छलांग' बताते हैं। अन्य लेखकों ने इस मार्क्स के 'तीसरी दुनियावादी' पाठ की वकालत की है जिसमें क्रांतिकारी ताकत कारखाने का मजदूर नहीं बल्कि देहात और हाशिए के जनगण हो गए थे।

8. मरियान साएर कहते हैं 'खासकर 1870 दशक में जो हुआ वह यह नहीं कि मार्क्स ने ग्रामीण समुदायों के चरित्र के बारे में अपने विचार बदल लिये या तय कर लिया कि वे जस का तस समाजवाद का आधार बन जाएंगे। उन्होंने बस इस सम्भावना पर विचार किया कि इन समुदायों में क्रांतिकारी बदलाव पूँजीवाद नहीं, समाजवाद ले आएगा।—लगता है उन्होंने गम्भीरता के साथ यह उम्मीद लगाई कि सामाजिक संचार की तीव्रता और उत्पादन पद्धति के आधुनिकीकरण से ग्राम व्यवस्था को समाजवादी समाज में समाहित किया जा सकता है। 1882 में मार्क्स को लग रहा था कि पूँजीवाद के प्रभाव के तहत ओबश्चिना के पूर्ण बिखराव का यह वास्तविक कारगर विकल्प हो सकता है'।

9. 1861 की मुक्ति के बाद किसान जमीन तो हासिल कर सकता था लेकिन खिराज की भरपाई के बाद ही।

नहीं होता था–नए पूँजीवादी कीड़े की समृद्धि में सहयोग जरूर मिलता था जो "ग्रामीण कम्यून" का पहले से ही सूख चुका खून चूसे डाल रहा था'"।

इसलिए अंत में मार्क्स ने कहा कि रूसी लोकप्रियतावादियों द्वारा कल्पित विकल्प हासिल किया जा सकता हैः

> 'तो सैद्धांतिक रूप से रूसी "ग्रामीण कम्यून" अपने आधार को और विकसित करके, जमीन के सामुदायिक स्वामित्व के सहारे और खुद में अंतर्निहित निजी पूँजी के नियम का उन्मूलन करके अपने आपको बचा ले जा सकता है। आधुनिक समाज जिस आर्थिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है उसमें सीधे पहुँचने की सीढ़ी बन सकता है। यह खुद को नष्ट किए बिना नए पत्ते खिला सकता है। पूँजीवादी उत्पादन ने जिन फलों से मानव प्रजाति को समृद्ध किया है उन्हें यह, पूँजीवादी निजाम से गुजरे बिना, हासिल कर सकता है'।

बहरहाल अगर ऐसा होना है तो उसके लिए इस परिकल्पना को 'शुद्ध सिद्धांत से नीचे उतकर रूसी यथार्थ बनना होगा'। इस काम के लिए मार्क्स ने ओबश्चिना की 'आगे विकास की क्षमता' पहचानने की कोशिश की। ठीक इस समय यहः

> 'अश्रुतपूर्व स्थिति में है जिसकी कोई मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। यूरोप में अकेले, अब भी यह एक विशाल साम्राज्य भर में ग्रामीण जीवन का प्रभावी आंगिक रूप बना हुआ है। इसे जमीन का सामुदायिक स्वामित्व सामूहिक अधिग्रहण का स्वाभाविक आधार मुहैया कराता है। इसकी ऐतिहासिक अवस्थिति, पूँजीवादी उत्पादन के साथ इसकी सहकालिकता के चलते इसे ऐसी भौतिक परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं कि पूरी तरह विकसित होने पर इसे बहुत बड़े पैमाने पर सहकारी श्रम के संगठन में बदला जा सकता है। इस प्रकार यह पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आविष्कृत सकारात्मक उपलब्धियों को समाहित कर सकता है।–धीरे धीरे इसमें टुकड़ों में बंटी खेती की जगह मशीनों की सहायता से समन्वित खेती लाई जा सकती है।–आधुनिक समाज जिस आर्थिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है उसके लिए यह सीधी शुरुआत हो सकता है और खुद को नष्ट किए बिना नए पत्ते खिला सकता है'।

यह विकल्प सम्भव था और रूस के समाजार्थिक संदर्भ में 'अंग्रेजी ढंग की पूँजीवादी खेती' के मुकाबले निश्चय ही अधिक कारगर था। लेकिन यह तभी जीवित रह सकता है जब 'निजी अधिग्रहण के स्रोत टुकड़ों में श्रम की जगह सामूहिक श्रम ले ले'। ऐसा होने के लिए दो चीजों की जरूरत है– 'इस बदलाव की आर्थिक जरूरत और बदलाव लाने की भौतिक परिस्थितियाँ'।

रूस में कृषि कम्यून और यूरोप में पूँजीवाद समकालीन हैं इस तथ्य के चलते उसे 'सामूहिक श्रम के लिए आवश्यक सभी स्थितियाँ' उपलब्ध हैं जबकि सहकारिता की स्थानीय धारणा 'आर्तेल' से किसानों का पूर्व परिचय 'सहकारी श्रम' में वास्तविक संक्रमण को सहज बनाएगा।

जहाँ तक कम्यूनों के एक दूसरे से अलग रहने की बात है, जो रूस के तानाशाह राजनीतिक शासन के अनुकूल पड़ता है, तो इसे 'आसानी से दूर किया' जा सकता है। 'इसके लिए बस यह जरूरी होगा कि सरकारी संस्था वोलोस्त की जगह इन कम्यूनों द्वारा निर्वाचित किसानों की विधायिका कायम कर दी जाए' जो उनके हितों के लिए आर्थिक और प्रशासनिक जिम्मेदारी निभाएगी।

इस तरह ओबश्चिना के बचे रहने और उसके क्रांतिकारी रूपांतरण के लिए राजनीतिक इच्छा शक्ति और अनुकूल ऐतिहासिक परिस्थितियाँ बुनियादी पूर्वशर्तें हैं। दूसरे शब्दों में पूँजीवाद जनित तमाम उथल पुथल के खतरों के बावजूद ओबश्चिना जैसे पुराने सामुदायिक रूप के समाजवादी रूपांतरण की सम्भावना मौजूद थीः

> 'मामला किसी समस्या के समाधान का है ही नहीं, यह तो बस दुश्मन को पीट देने का मामला है। रूसी कम्यून को बचाने के लिए रूसी क्रांति की जरूरत है।–अगर क्रांति सही समय पर हो जाती है और अगर वह अपनी सारी शक्तियों को ग्रामीण कम्यून को सम्पूर्णतया कायम रखने हेतु केंद्रित कर देती है तो यह कम्यून जल्दी ही रूसी समाज के नए जागरण के तत्व के बतौर और पूँजीवादी व्यवस्था के गुलाम देशों से बरतरी के तत्व के बतौर विकसित होगा।'

1882 में भी मार्क्स इस विषय की ओर लौटे। एंगेल्स के साथ मिलकर लिखे 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' के नए रूसी संस्करण की भूमिका में रूसी ग्रामीण कम्यून के भाग्य को पश्चिमी यूरोप के सर्वहारा संघर्षों के साथ जोड़ा गया हैः

> 'रूस में हम तेजी से विकसित हो रही पूँजीवादी ठगी तथा पूँजीवादी भूस्वामित्व के, जिसने अभी अभी विकसित होना आरम्भ किया है, साथ ही आधी अधिक ऐसी भूमि पाते हैं जिस पर किसानों का साझा स्वामित्व है। सवाल यह है– क्या रूसी ओबश्चिना जो बुरी तरह अंतर्ध्वस्त होते हुए भी भूमि के आदिम सामुदायिक स्वामित्व का एक रूप है, सीधे कम्युनिस्ट ढंग के साझा स्वामित्व के उच्चतर रूप में प्रवेश कर सकता है? या इसके विपरीत उसे भी क्या विघटन की उसी प्रक्रिया से गुजरना

> पड़ेगा जो पश्चिम के ऐतिहासिक विकासक्रम के लिए लाक्षणिक है? इस समय इस सवाल का एकमात्र जवाब यह है– यदि रूसी क्रांति पश्चिम में सर्वहारा क्रांति के लिए इस तरह का संकेत बन जाए कि वे दोनों एक दूसरे की पूरक बन सकें तो जमीन का वर्तमान रूसी सामुदायिक स्वामित्व कम्युनिस्ट विकास के लिए प्रस्थान विंदु बन सकता है।'

जहाँ तक जासूलिच को लिखे जवाब की बात है तो उसकी इतनी लम्बी तैयारी के बाद आखिरकार उसे 8 मार्च 1881 को भेज दिया। हालांकि उन्होंने कई लम्बे और मिलते जुलते तर्कों वाले मसौदे तैयार किए थे लेकिन उन्हें बहुत ही संक्षिप्त संस्करण भेजने का फैसला किया। इसमें उन्होंने माफ़ी मांग ली कि वे 'प्रकाशन के लिए वांछित दस्तावेज नहीं तैयार कर सके' जिसका अनुरोध उन्होंने किया था।[10] इसके साथ ही उन्होंने बताया कि 'पीपुल'स विल' नामक लोकप्रियतावादी संगठन की पीटर्सबर्ग समिति के साथ इस मामले में हस्तक्षेप किया है जबकि असल में उन्होंने ऐसा नहीं किया था।

फिर भी उनकी 'कुछेक पंक्तियों' का मकसद 'मेरे तथाकथित सिद्धांत के किसी भी भ्रम के सिलसिले में' जासूलिच के सम्भावित 'संदेहों को दूर करना' था। मार्क्स ने उनका ध्यान 'पूँजी' के फ्रांसिसी संस्करण के 'कृषि उत्पादकों का संपत्तिहरण' में मौजूद उद्धरण की ओर खींचा। यह वही उद्धरण था जिसे उन्होंने ओतेचस्त्वेन्ये ज़ापिस्की के संपादक मंडल को लिखी मसौदा चिट्ठी में घुसाया था, और जोर दिया कि उनका विश्लेषण 'पश्चिमी यूरोप के देशों तक ही सीमित' है जिसमें 'एक किस्म की व्यक्तिगत संपत्ति का दूसरे किस्म की निजी संपत्ति में रूपांतरण' प्रदर्शित है। इसके एकदम विपरीत रूस के मामले में 'सामुदायिक संपत्ति को निजी संपत्ति में रूपांतरित किया जाना है'। इसलिए निष्कर्ष के बतौरः

> ' 'पूँजी' में उपलब्ध विश्लेषण ग्रामीण कम्यून के कारगर होने के पक्ष या विपक्ष में कोई तर्क नहीं प्रस्तुत करते। लेकिन मैंने इसका जो विशेष अध्ययन किया है और

---

10. रियाज़ानोव को इन मसौदों का पहली बार पता चला था। उनका मानना था कि कार्यक्षमता घट जाने के कारण मार्क्स उस तरह का जवाब जासूलिच को नहीं भेज सके जैसा वे चाहते थे लेकिन पोजियो का तर्क सही लगता है कि मार्क्स 'ऐसे सवाल के बारे में जोरदार राय जाहिर करने से हिचके जिसके राजनीतिक और सैद्धांतिक नतीजे बेहद विस्फोटक थे'।

मूल स्रोतों से जो सामग्री जुटाई है उसके आधार पर मुझे यकीन है कि यह कम्यून रूस में नए सामाजिक जागरण का आधार बनेगा। लेकिन वह इस भूमिका को निभा सके इसके लिए सबसे पहले जरूरी है कि उस पर चारों ओर से हमला करने वाले हानिकर प्रभावों को दूर किया जाए और तब फिर इसके स्वतःस्फूर्त विकास के लिए सामान्य हालात की गारंटी की जाए।'

इस प्रकार मार्क्स की द्वंद्ववादी समझ ने उन्हें यह दावा नहीं करने दिया कि सहकारी उत्पादकों पर आधारित नई अर्थव्यवस्था पूर्वपरिभाषित चरणों के पूर्वनिश्चित अनुक्रम के जरिए प्रकट होगी। साथ ही उन्होंने इससे भी इनकार किया कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति का विकास दुनिया के किसी भाग में ऐतिहासिक अपरिहार्यता है।

ओबश्चिना के भविष्य के सवाल पर जो सघन तर्कपूर्ण विचार व्यक्त किए वे उत्पादक शक्तियों के साथ समाजवाद का सीधा समीकरण बिठाने वालों से बहुत अधिक अलग है। उत्पादक शक्तियों से समाजवाद को जोड़ने वाली धारणा में राष्ट्रवाद कुछ ज्यादा ही है और उपनिवेशवाद के प्रति सहानुभूति भी मिलती है। यह धारणा दूसरे इंटरनेशनल के साथ ही सामाजिक जनवादी पार्टियों में भी मिलती है। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर भी यह प्रवृत्ति तथाकथित 'वैज्ञानिक पद्धति' की दुहाई देती पाई जाती है।[11]

मार्क्स ने इस मौके का लाभ उठाते हुए रूस की तत्कालीन विभिन्न क्रांतिकारी प्रवृत्तियों पर टिप्पणी की। लोकप्रियतावादियों के सिलसिले में उनकी राजनीतिक गतिविधियों के जमीनी सम्पर्क की उन्होंने प्रशंसा की। इस तथ्य की भी उन्होंने प्रशंसा की कि अपने विचारों के प्रसार में वे मूर्खतापूर्ण

---

11. एंगेल्स को भी इतिहास की गति के निष्क्रिय स्वीकार का दोषी कहा जा सकता है। अपने अनेक लेखों, भाषणों और पत्रों में उन्होंने वही राय अपनाई है जिसे 24 फ़रवरी 1893 के निकोलाई दानिएल्सन को लिखे पत्र में व्यक्त किया है 'जमीन के पाँच लाख मालिकों और लगभग आठ करोड़ किसानों की जगह जमीन के बुर्जुआ मालिकों के एक नए वर्ग को प्रतिष्ठित करना बिना अपार तकलीफ और टूट फूट के सम्भव ही नहीं है। लेकिन इतिहास तो सभी देवियों से अधिक क्रूर होता है और उसका विजय रथ लाशों के ढेर के ऊपर से न केवल युद्ध के समय बल्कि "शांतिपूर्ण" आर्थिक विकास के समय भी गुजरता है। दुर्भाग्य से हम स्त्री पुरुष इतने बेवकूफ होते हैं कि वास्तविक प्रगति के रास्ते पर चलने की हिम्मत तब तक जुटा नहीं पाते जब तक हमें लगभग अननुमेय तकलीफें इसके लिए मजबूर ही न कर दें'।

अतिक्रांतिकारी अलंकारों या उलटा नतीजा देने वाले सरलीकरणों का सहारा नहीं लेते।

1880 के अंत में जोर्गे को भेजे एक पत्र में अनेक समाजवादी संगठनों के बारे में मार्क्स का मूल्यांकन बताता है कि उनके सदस्यों के साथ अपने व्यक्तिगत लगाव से वे एकदम प्रभावित नहीं होते थे। अपने सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा की घोषणा से प्रभावित होने का तो सवाल ही नहीं उठता। रूस में सक्रिय ताकतों का उन्होंने निम्नवत वर्णन कियाः एक ओर तो हमारे पास आलोचक हैं (ज्यादातर विश्वविद्यालयों के युवा प्रोफ़ेसर, जिनमें से कुछ मेरे व्यक्तिगत मित्र हैं, कुछ साहित्यिक भी हैं)। दूसरी ओर 'आतंकी केंद्रीय कमेटी', अर्थात पीपुल'स विल के लोकप्रियतावादी। लोकप्रियतावादियों के कार्यक्रम के परिणामवादी चरित्र को मार्क्स पसंद करते थे लेकिन उनसे आलोचक समूह क्रोधित रहता था जिनमें ब्लैक रीडिस्ट्रिब्यूशनवादी लड़ाकू लोग थे। इनमें ही वेरा जासूलिच और प्रथम रूसी 'मार्क्सवादियों' में से एक ज्यार्जी प्लेखानोव (1856-1918) भी शामिल थे। इन्हें मार्क्स ने 'अराजकतावादी' कहा। इन स्वैच्छिक प्रवासियों (अधिकतर) के बारे में उन्होंने कहाः

> 'आतंकवादी तो अपने जीवन और शरीर का खतरा उठाते हैं लेकिन उनके विपरीत (ये लोग) तथाकथित प्रचार दल हैं। (रूस में प्रचार चलाने के लिए वे जेनेवा चले जाते हैं। क्या मुआवजा है!) ये सज्जन लोग सब के सब राजनीतिक क्रांतिकारी कार्यवाही का विरोध करते हैं। रूस को उछल उछल कर अराजक-कम्युनिस्ट-नास्तिक युग में दाखिल हो जाना चाहिए! तब तक वे लोग दिलचस्प सूत्रों के जरिए इस छलांग की राह हमवार करेंगे'।

अप्रैल 1881 में पुत्री जेनी को लिखे पत्र में उन्होंने एक बार फिर रूसी बुद्धिजीवियों, जो स्विट्ज़रलैंड में शरण लिये हुए हैं, के रुख पर जमकर हमला बोला। वे 'महज जड़सूत्री हैं, भ्रमित अराजक समाजवादी हैं और रूस की "युद्धभूमि" पर उनका प्रभाव शून्य है'। सेंट पीटर्सबर्ग की हत्या का मुकदमा जिन पर चल रहा था उन्होंने उनकी राजनीतिक मान्यताओं और प्रचार के तरीकों की संस्तुति कीः

> 'सर से पाँव तक वे सच्चे बच्चे हैं। उनमें कोई नाटकीयता नहीं है। सरल, सादा और असली बहादुर हैं। जोर जोर से घोषणा करना और काम करना एकदम विपरीत

बातें हैं, उनमें कोई मेल नहीं। पीटर्सबर्ग एक्जीक्यूटिव कमेटी जिसने ऐसी साहसिक कार्यवाही की है उसने अति सुंदर "नरमी" का घोषणापत्र जारी किया है। यह तो सचमुच उस तरीके से काफी अलग है जिससे मोस्ट और अन्य बचकाने शेखीबाज "सिद्धांत" और रामवाण के बतौर निरंकुशता की वकालत करते हैं।–दूसरी ओर वे यूरोप को बताने की कोशिश कर रहे हैं कि उनकी कार्यपद्धति विशेष तौर पर रूसी है और ऐसी कार्यविधि ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य है। इसमें नैतिकता के पक्ष या विपक्ष का उसी तरह कोई सवाल नहीं है जिस तरह चियोस में भूकम्प का कोई नीतिशास्त्र नहीं होता'।

रूस में समाजवाद की सम्भावना संबंधी मार्क्स के विचार केवल वहाँ की आर्थिक स्थिति पर ही आधारित नहीं हैं। 1881 में रूसी लोकप्रियतावादियों के साथ उनके सम्पर्क ने, एक दशक पहले के पेरिस के कम्युनार्डों की तरह ही, उनमें नया यकीन विकसित करने में मदद की। अब वे क्रांतिकारी घटनाओं के विस्फोट और उन्हें आकार देने वाली आत्मगत शक्तियों तथा साथ ही इतिहासक्रम में उत्पादन पद्धतियों के अनुवर्ती क्रम के सवाल पर अधिक लचीले तरीके से सोचने लगे थे। इससे वे केवल यूरोपीय स्तर के मुकाबले सचमुच वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रवाद के और अधिक करीब आए।[12]

अपनी पूर्ण बौद्धिक परिपक्वता के वर्षों में मार्क्स ने जिस बहुरेखीय धारणा का विकास किया उसके चलते अलग अलग देशों और सामाजिक संदर्भों में राजनीतिक और आर्थिक विकास की ऐतिहासिक विशेषताओं और असमानताओं को उन्होंने और अधिक ध्यान से देखा। इस रुख ने निश्चय

---

12. ब्रूनो बोनजियोवानी का कहना है कि 'मार्क्स की बौद्धिक विकास यात्रा में– रूस के प्रसंग में हमें अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षितिज को कम करके नहीं आंकना चाहिए'। 'मार्क्स के लेखन को सम्पूर्णता में देखने पर' पता चलता है कि उन्होंने घटनाओं का निम्न अनुक्रम कल्पित किया था- 'रूस के विरुद्ध युद्ध, रूस की सैनिक पराजय, रूसी क्रांति (समाजवादी नहीं, जैकोबिन), यूरोप के प्रतिक्रियावादी जेन्दार्मे का (अस्थायी या स्थायी?) अभाव, यूरोप में समाजवादी रूपांतरण–, रूस में फिर से क्रांति, तब और केवल तभी यह सम्भावना कि ओबश्चिना को समाजवादी संक्रमण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है'। बहरहाल बोनजियोवानी जिसे 'क्रांति के विकास की यांत्रिकी' के रूप में परिभाषित करते हैं वह तत्व मार्क्स के चिंतन में कमजोर नजर आता है। परिस्थितियों के जोर से क्रांति की शुरुआत यूरोप में और केवल 'दूसरे चरण' में रूस में उसका पहुँचना तय नहीं है।

ही 'पूँजी' के दूसरे और तीसरे भागों को पूरा करने की तकलीफदेह यात्रा का कष्ट और भी बढ़ा दिया होगा।

लेकिन मार्क्स ने ग्रुंड्रिस में कम्युनिस्ट समाज की जो रूपरेखा निरूपित की थी उस सपने को उन्होंने नहीं बदला। साथ ही अमूर्त काल्पनिकता के चक्कर में भी नहीं फंसे। संदेह से संचालित और अपने नाम पर पैदा होने वाले पुराने नियतिवाद और नए कठमुल्लावादों से लड़ते हुए उन्होंने सम्भव समझा कि क्रांति ऐसी स्थितियों और रूपों में भी फूट सकती है जिस पर उन्होंने पहले कभी विचार नहीं किया था। भविष्य मजदूर वर्ग के हाथों में है और गहरे सामाजिक उथल पुथल पैदा करने की इसके संगठनों और संघर्षों की क्षमता पर निर्भर है।

4

बुजुर्ग की मकबूलियत

1. 'पूँजी' का यूरोप में प्रसार

1881 में मार्क्स अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के लिए अब भी वैसे सैद्धांतिक संदर्भ नहीं बने थे जिस तरह का संदर्भ वे बीसवीं सदी में बनने वाले थे। 1848 की क्रांतियों की पराजय के बाद बहुत कम राजनीतिक नेता या बुद्धिजीवी उनसे जुड़े रह गए थे। उसके अगले दशक में भी हालात में कोई खास सुधार नहीं आया था।

इंटरनेशनल के विकास और पेरिस कम्यून की यूरोपव्यापी अनुगूंज ने तस्वीर बदल दी थी और उनका नाम फैल गया तथा उनके लेखन का ठीक ठाक प्रसार होने लगा। 'कैपिटल' का प्रसार जर्मनी में शुरू हुआ (वहाँ 1873 में एक नया संस्करण छपा था), रूस (जहाँ 1872 में इसका अनुवाद छपा) और फ्रांस (जहाँ 1872 से 1875 के बीच टुकड़ों में इसका प्रकाशन हुआ) में भी इसकी बिक्री होने लगी। बहरहाल इन जगहों पर भी मार्क्स के विचारों को समकालिक अन्य समाजवादियों के विचारों के साथ अल्पमत में रहते हुए होड़ करनी पड़ती थी।

जर्मनी में मार्क्स से जुड़ी सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर'स पार्टी (SDAP) और फ़र्दिनान्द लासाल द्वारा स्थापित जनरल एसोसिएशन ऑफ़ जर्मन वर्कर्स (ADAV) ने गोथा विलय कांग्रेस के जरिए 1875 में एक ऐसा कार्यक्रम अपनाया जिस पर लासाल के अधिक मजबूत निशान थे। फ्रांस और बेल्जियम में मजदूर वर्ग के भीतर पियरे-जोसेफ प्रूधों के विचार अधिक प्रभावी थे और मार्क्स के विचारों से प्रेरित समूह संख्याबल या राजनीतिक पहलकदमी के लिहाजन अगस्त ब्लांकी से प्रभावित समूहों के मुकाबले कुछ खास अधिक

न थे। रूस में एक खास जटिलता यह थी कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति की मार्क्सी आलोचना को पिछड़े समाजार्थिक और राजनीतिक माहौल में पढ़ा और व्याख्यायित किया जा रहा था जो पूँजीवादी विकास के पश्चिम यूरोपीय माडल से खासा अलग था। दूसरी ओर ब्रिटेन में मार्क्स लगभग अज्ञात बने हुए थे[1] तथा इटली, स्पेन और स्विट्ज़रलैंड में उनकी रचनाओं के पाठक मुश्किल से मिलते थे क्योंकि वहाँ 1870 दशक में मिखाइल बाकुनिन का असर गहरा था। अटलांटिक सागर के दूसरे किनारे अमेरिका में बहुत कम लोगों ने उनके बारे में सुना भी था।

इसका एक और कारण यह था कि 'पूँजी' समेत उनका अधिकांश लेखन अपूर्ण था। 1881 में जब उनसे कार्ल काउत्सकी ने पूछा कि आपकी सम्पूर्ण रचनाओं को छापने का समय आ गया है या नहीं तो उन्होंने व्यंग्य से जवाब दिया कि 'पहले तो उन्हें लिखा जाना होगा'।

हालांकि मार्क्स अपने विचारों के विश्वव्यापी प्रसार को देखने के लिए तो जिंदा नहीं रहे लेकिन जीवन के आखिरी सालों के दौरान यूरोप के अनेक हिस्सों में उनके सिद्धांतों, खासकर उनके महान ग्रंथ में रुचि अधिकाधिक बढ़ती गई। इसके चलते परस्पर विरोधी प्रतिक्रियाओं का जन्म हुआ। 1881 के उत्तरार्ध में कभी एंगेल्स ने एडुअर्ड बर्नस्टाइन (1850-1932) को लिखा कि 'मार्क्स से ईर्ष्या' ने भी सिर उठा लिया है। उदाहरण के लिए सोशलिस्ट वर्कर्स' पार्टी फ़ेडरेशन ऑफ़ फ्रांस (FPTSF) के भीतर ही दो धाराओं का टकराव चल रहा था। इस टकराव में एक ओर पूर्व अराजकतावादी पाल ब्रूस (1844-1912) के नेतृत्व में 'सम्भववादी' थे तो दूसरी ओर जूल्स गुदे (1845-1922) के नेतृत्व में मार्क्स के विचारों का एक समर्थक समूह था। विभाजन अनिवार्य था जिसके चलते दो नई पार्टियाँ अस्तित्व में आईं। एक, सुधारवादी सोशलिस्ट वर्कर्स' फ़ेडरेशन ऑफ़ फ्रांस (FTSF) और दूसरी, फ्रेंच वर्कर्स पार्टी (POF) जो फ्रांस की पहली 'मार्क्सवादी' पार्टी थी।

---

1. हेनरी हिंडमैन ने बाद में बताया है कि '1880 में यह कहना शायद मुश्किल ही था कि अंग्रेज जनता के लिए क्रांति के खतरनाक और उन्मादी वकील के अतिरिक्त किसी और रूप में मार्क्स जाने जाते थे। इंटरनेशनल का उनका संगठन भयावह पेरिस कम्यून का कारण बताया जाता था। उसके नाम से सभ्य और सम्मानित लोग कांपते थे और डरकर बात करते थे'।

लेकिन इस विभाजन से पहले अंदर ही दोनों समूहों के बीच तीखी वैचारिक लड़ाई होती रही थी। कुछ समय बाद मार्क्स को भी इसमें खींच लिया गया और जून 1880 में गुदे और पाल लाफ़ॉर्ग के साथ मिलकर उन्होंने फ्रांस के वाम राजनीतिक मंच, फ्रेंच वर्कर्स पार्टी का चुनावी कार्यक्रम भी लिखा।

ऐसे माहौल में ब्रूस और कम्यून के योद्धा तथा समाजवादी लेखक बेनोइत मालों (1841-93) ने मार्क्स के सिद्धांतों को बदनाम करने के लिए हरेक साधन का सहारा लिया। उनका कड़ा जवाब देते हुए एंगेल्स ने खासकर मालों पर आरोप लगाया जो उनके मुताबिक 'मार्क्स की खोजों का जनक साबित करने के लिए तमाम (लासाल, शाफ़्ले और असल में द पाएपे!) अन्य पूर्वजों को खोजने या थोपने का परिश्रम कर रहे हैं'। इसके बाद उन्होंने द *प्रोलेतारियन* नामक साप्ताहिक के संपादकों की खबर ली जिन्होंने गुदे और लाफ़ॉर्ग पर मार्क्स का 'भोंपू' बजाने और 'बिस्मार्क के हाथ फ्रांसिसी मजदूरों को बेचने की चाहत' का आरोप लगाया था। मालों और ब्रूस की शत्रुता को एंगेल्स ने अंध राष्ट्रवाद का लक्षण माना।

'अधिकांश फ्रांसिसी समाजवादियों के लिए यह अभिशाप है कि जिस देश ने दुनिया भर को फ्रांसिसी विचारों का वरदान दिया उसे--और ज्ञानोदय के केंद्र पेरिस को अब अचानक अपने समाजवादी विचार एक जर्मन व्यक्ति, मार्क्स से तैयारशुदा शक्ल में आयातित करने होंगे। लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता और इससे भी आगे मार्क्स की प्रतिभा, उनके जबर्दस्त वैज्ञानिक परिश्रम और उनके अविश्वसनीय पांडित्य ने उन्हें हम सबसे इतना आगे पहुँचा दिया है कि जो कोई भी उनकी खोजों की आलोचना करने की कोशिश करेगा उसकी उंगली ही सबसे पहले झुलस जाएगी। इस काम को थोड़ा और विकसित युग के लिए छोड़ देना होगा।'

एंगेल्स समझ नहीं सके कि 'कोई प्रतिभा से कैसे ईर्ष्या' कर सकता है इसलिए आगे कहाः

> 'लेकिन छोटे दिमाग वाले छिद्रान्वेषी, जिनका अन्यथा कोई माने मतलब नहीं फिर भी खुद को बेहद महत्त्वपूर्ण लगाते हैं, उन्हें खासकर इस बात पर गुस्सा आता है कि अपनी सैद्धांतिक और व्यावहारिक उपलब्धियों के चलते मार्क्स को विभिन्न देशों के समस्त मजदूर आंदोलन के सर्वोत्तम लोगों का सच्चा भरोसा हासिल है। संकट की किसी भी स्थिति में वे उनसे ही सलाह मांगते हैं और आम तौर पर उनकी सलाह

> सर्वोत्तम साबित होती है। उनको यह भरोसा छोटे छोटे देशों की तो जाने दीजिए, जर्मनी में, फ्रांस में और रूस तक में हासिल है। इसलिए मार्क्स उन पर अपनी राय, मर्जी का तो सवाल ही नहीं, थोपते नहीं हैं, बजाय इसके ये लोग ही उनके पास स्वेच्छा से आते हैं। और ठीक इसी अर्थ में उनका प्रभाव पड़ता है, आंदोलन के लिए इस प्रभाव का महत्त्व सबसे अधिक होता है।'

ब्रूस और उनके समर्थक जैसा समझते थे उसके विपरीत मार्क्स के मन में उनके प्रति कोई खास दुराव नहीं था। एंगेल्स ने स्पष्ट किया कि 'फ्रांसीसियों के प्रति मार्क्स का वही रुख (था) जो अन्य देशों के आंदोलनों के प्रति' था जिनके साथ उनका 'निरंतर सम्पर्क था—उस हद तक जिस हद तक उसका कोई मूल्य महत्त्व होता और जिस हद तक अवसर उपलब्ध होता' था। निष्कर्ष के रूप में एंगेल्स ने जोर दिया कि 'लोगों की इच्छा के विपरीत उन्हें प्रभावित करने की चेष्टा से हमें नुकसान (ही) होगा (और) इंटरनेशनल के दिनों से कायम पुराना भरोसा टूटेगा'।

गुदे और लाफ़ॉर्ग से स्वतंत्र भी अनेक फ्रांसिसी लड़ाकू मार्क्स के सम्पर्क में थे। 1881 के शुरू में उन्होंने अपने दामाद चार्ल्स लांग्वे (1839-1903) को सूचित किया कि उनसे एक समाजवादी योद्धा और प्रकाशक एडुअर्ड फ़ोर्तिन (1854-1947) ने सम्पर्क किया है।

'(उन्होंने) मुझे ढेर सारे पत्र 'मेरे प्यारे स्वामी' संबोधन के साथ लिखे हैं। उनकी मांग बेहद 'साधारण' है। उनका प्रस्ताव है कि 'पूँजी' को पढ़ते हुए वे उसका मासिक सार तैयार करेंगे और जिसे अत्यंत उदारता के साथ उन्होंने मुझे हरेक महीने भेजने का वादा किया है। वे यह भी चाहते हैं कि मैं मासिक दर से उन्हें सुधार दूं ताकि अगर किसी विंदु को उन्होंने गलत समझा हो तो वह स्पष्ट हो जाए। इस चुप्पा तरीके से जब वे आखिरी मासिक किस्त भेज दें और मैं सुधारकर वापस भेज दूं तो उनके पास प्रकाशन योग्य ऐसी पांडुलिपि होगी जिससे, उनके मुताबिक, फ्रांस प्रकाशवर्षा से नहा उठेगा।'

चूँकि वे कुछ और महत्त्वपूर्ण मामलों में व्यस्त थे इसलिए मार्क्स ने फ़ोर्तिन को सूचित किया कि उनके अनुरोध को स्वीकार करना फिलहाल असम्भव है। लेकिन इस सम्पर्क के चलते एक अन्य बेहतर काम हो गया जब बाद में फ़ोर्तिन ने 'लुई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर' का फ्रांसिसी अनुवाद किया और इसे 1891 में छपवाया।

1881 में 'पूँजी' का एक लोकप्रिय सारांश डच भाषा में प्रकाशित हुआ। 1873 में जोहान मोस्ट (1846-1906) और 1879 में कार्लो काफ़िरो (1846-92) वाले सारांशों के छपने के बाद यह तीसरा इस किस्म का प्रकाशन था। इसे लिखने वाले फ़र्दिनांद न्यूवेनहुइस ने परिशिष्ट जोड़ा 'लेखक इस कृति को अत्यंत विनीत श्रद्धा के प्रतीक के रूप में कार्ल मार्क्स को समर्पित करता है जो गहन चिंतक और मजदूरों के अधिकारों के प्रबल योद्धा हैं'। उन्होंने प्रशंसा के भाव से मार्क्स के काम को मान्यता दी जिसका प्रसार अनेक यूरोपीय देशों में शुरू हो चुका था।

फ़रवरी 1881 में आगामी दूसरे संस्करण को ध्यान में रखते हुए मार्क्स ने न्यूवेनहुइस से कहा कि उनकी निगाह में काम बेहतरीन हुआ है और अब वे अपने कुछ सुझाव देना चाहते हैं 'जिन भी संशोधनों को मैं जरूरी समझ रहा हूँ उनका रिश्ता विवरणों से है, प्रमुख चीज, काम की भावना इसमें आ गई है'। इसी पत्र में उन्होंने अपनी एक ऐसी जीवनी का जिक्र किया जो एक उदारपंथी डच पत्रकार आर्नोल्डस केर्दिक (1846-1905) ने 'मानेन वान बेटीकेनिस' (हमारे समय के महत्त्वपूर्ण लोग) नामक एक पुस्तक श्रृंखला के तहत 1879 में छपाई थी। इसके प्रकाशक निकोलस बालसेम (1835-84) ने उनके जीवन के बारे में सामग्री प्राप्त करने के लिए मार्क्स से सम्पर्क किया था और कहा था कि उनके विचारों से सहमत न होने के बावजूद उनके महत्त्व को समझता है। मार्क्स 'ऐसे अनुरोधों को आदतन खारिज कर देते थे' और बाद में छपे हुए पाठ को पढ़कर गुस्सा हुए कि उनको 'जान बूझकर गलत उद्धृत किया गया' है। उन्होंने न्यूवेनहुइस को लिखाः

> 'एक डच पत्रिका ने अपना कालम मेरे (उत्तर के) लिए खोलने का प्रस्ताव किया लेकिन सिद्धांततः मैं इस तरह के खोद विनोद का जवाब नहीं देता। लंदन में भी कभी मैंने इस तरह की साहित्यिक बकवाद पर कभी तनिक भी ध्यान नहीं दिया। कोई भी दूसरा रास्ता अपनाने का मतलब होता कैलिफ़ोर्निया से लेकर मास्को तक हर जगह सुधार संशोधन करने में अपने जीवन का बेहतरीन हिस्सा गंवा देना। जवानी के दिनों में कभी कभी कुछ डंडे चलाए लेकिन उम्र के साथ समझदारी आई कि कम से कम शक्ति का व्यर्थ अपव्यय नहीं करना चाहिए।'

कुछ साल पहले मार्क्स ने यह उपरोक्त नतीजा निकाला था। 5 जनवरी 1879 को *शिकागो ट्रिब्यून* में छपे एक साक्षात्कार में उन्होंने चुटकी ली थी

'मेरे बारे में जो कुछ कहा और लिखा गया है उन सबका खंडन करना हो तो मुझे बीसियों सचिवों की जरूरत होगी'। उनके इस कड़े रुख से एंगेल्स भी पूरी तरह सहमत थे। जब मार्क्स ने न्यूवेनहुइस को यह लिखा उसके कुछ ही पहले काउत्सकी को लिखे एक पत्र में एंगेल्स ने मार्क्स के लेखन के सिलसिले में जर्मन अर्थशास्त्री अल्बर्ट शाफ़्ले (1831-1903) और अन्य 'बैठे ठाले' समाजवादियों द्वारा प्रदर्शित अनगिनत भूलों और गलतियों का जिक्र कियाः

> 'उदाहरण के लिए अकेले शाफ़्ले ने अपनी मोटी मोटी किताबों में जो भयंकर बकवाद एकत्र कर रखा है उसका खंडन मेरी नजर में समय की बरबादी है। इन सज्जन ने उद्धरण चिन्हों के भीतर पूँजी को ही जितने गलत तरीके से उद्धृत किया है उसे ही सही करने की कोशिश में एक ठीक ठाक किताब तैयार हो जाएगी।'

अंत में दबंग तरीके से लिखा कि 'अपने सवालों का जवाब मांगने से पहले उन्हें पढ़ना और नकल करना सीखना होगा।'

दुर्व्याख्या और गलत उद्धरण के अतिरिक्त और उनके साथ ही राजनीतिक बहिष्कार की कोशिश के तहत मार्क्स के लेखन को वास्तविक विध्वंस का भी सामना करना पड़ा। फ़रवरी में निकोलाई डेनिएल्सन का 'हमारे सुधारोत्तर सामाजिक अर्थतंत्र का खाका' शीर्षक 'सच्चे अर्थों में मौलिक' लेख पढ़कर मार्क्स ने उन्हें पत्र लिखा। इसमें उन्होंने बतायाः

> 'अगर आप चालू चिंतन के जंजाल को तोड़ देते हैं तो सबसे पहले तय है कि आपका "बहिष्कार" किया जाएगा। असल में ढर्रे पर चलने वालों का यही एकमात्र सुरक्षा उपकरण है जिसका इस्तेमाल किंकर्तव्य विमूढ़ होने पर वे करना जानते हैं। सालों साल जर्मनी में मेरा "बहिष्कार" हुआ और इंग्लैंड में अब भी हो रहा है। समय समय पर मेरे विरुद्ध इतना बेतुका और बेवकूफी भरा हमला बिना किसी रूपभेद के होता है कि उस पर सार्वजनिक तौर पर ध्यान देते भी लज्जा आती है।'

बहरहाल जर्मनी में उनके इस विराट ग्रंथ की धीरे धीरे बिक्री हो रही थी। अक्टूबर 1881 में दूसरे संस्करण की प्रतियों के खत्म होने पर प्रकाशक ओट्टो माइजनेर (1819-1902) ने मार्क्स से कहा कि तीसरे संस्करण की तैयारी के लिए जरूरी संशोधन और काट छांट कर दें। दो महीने बाद मार्क्स ने अपने मित्र फ्रेडरिक जोर्गे (1828-1906) से स्वीकार किया कि 'यही सबसे सही मौका है', कुछ ही समय पहले पुत्री जेनी को लिखा था कि वे 'जितना ही

जल्दी फिर से (खुद को) सक्षम महसूस करेंगे, (अपना) सारा समय दूसरे खंड को समाप्त करने में लगाना चाहते हैं'। डैनिएल्सन से भी यही कहा– 'जितना जल्दी सम्भव हो–मैं खंड दो खत्म कर देना चाहता हूँ'। साथ ही जोड़ाः

> 'अपने संपादक से तय कर लूंगा कि तीसरे संस्करण में अल्पतम सम्भव बदलाव और जोड़ घटाव करूंगा लेकिन वह तीन हजार प्रतियों के प्रकाशन की अपनी इच्छा की बजाए एक हजार प्रतियाँ ही छापे। जब ये–बिक जाएँगी तो फिर इस समय वांछित बदलाव थोड़ा भिन्न परिस्थितियों में कर लूँगा।'

मार्क्स जिस देश में 1849 से रह रहे थे वहाँ उनके विचारों का प्रसार अन्य जगहों की अपेक्षा थोड़ी धीमी रफ़्तार से सही लेकिन शुरू हो चुका था। 1881 में हिंडमैन ने 'इंग्लैंड फ़ॉर ऑल' शीर्षक किताब छापी जिसमें डेमोक्रेटिक फ़ेडरेशन बनाने के पीछे के निर्देशक सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ था। इसके आठ अध्यायों में से दो का शीर्षक 'श्रम' और 'पूँजी' था। इनमें मार्क्स के ग्रंथ का अनुवाद या व्याख्या थी। असल में हिंडमैन 1880 के उत्तरार्ध से ही मेटलैंड पार्क रोड नियमित रूप से आने लगे थे[2] और मार्क्स के सिद्धांतों का सार तैयार कर रहे थे। अपनी किताब में उन्होंने मार्क्स के नाम या उनके ग्रंथ तक का कोई उल्लेख नहीं किया। उन्होंने केवल लिखा कि 'दूसरे और तीसरे अध्यायों में मौजूद विचार और अधिकांश सामग्री के लिए मैं एक महान चिंतक और मौलिक लेखक की रचना का आभारी हूँ जो यकीनन जल्दी ही हमारे अधिकांश देशवासियों को भी उपलब्ध हो जाएगी'।

---

2. मार्क्स के पत्रों में हिंडमैन का संबंधों के खत्म होने से पहले और उसके बाद एकाधिक बार जिक्र आया है। इनसे पता चलता है कि उनके प्रति मार्क्स का रुख हमेशा ही आलोचनात्मक रहा। 11 अप्रैल 1881 को उन्होंने जेनी लांग्वे को लिखा 'परसों ही–हम पर हिंडमैन और उनकी पत्नी का हमला हुआ। उन दोनों में ही धैर्य बहुत है। मुझे उनकी पत्नी खासा पसंद आईं क्योंकि उनके सोचने और बोलने का तरीका अशिष्ट, विद्रोही और निश्चयी था। लेकिन सबसे मजेदार यह देखना था कि वे अपने आत्मतुष्ट बड़बोले पति के होठों से प्रशंसापूर्वक लगी जा रही थीं'। अंतिम आपसी लड़ाई के कुछ महीने बाद 15 दिसम्बर 1881 को उन्होंने जोर्गे को लिखा 'इस आदमी ने मुझे बाहर ले जाने और आसानी से सीखने के नाम पर ढेर सारी शामें लूट लीं'।

मार्क्स को हिंडमैन के पैम्फलेट की जानकारी उसके छपने के बाद ही हो सकी। देखकर वे दुखी और चकित हुए क्योंकि सब कुछ के अतिरिक्त 'पूँजी' के हिस्सों को 'शेष पाठ से उद्धरण चिन्हों के जरिए अलगाया नहीं गया है, इनमें से ज्यादातर सटीक नहीं हैं और इनसे भ्रम भी पैदा होता है'।[3] इसीलिए जुलाई के शुरू में उनको पत्र लिखाः

> 'स्वीकार करने दीजिए कि मुझे अचम्भा हुआ जब पता चला कि लंदन में रहते हुए आपने 'इंग्लैंड फ़ॉर आल' अर्थात फ़ेडरेशन के बुनियादी कार्यक्रम पर अपने लेखन के दूसरे और तीसरे अध्याय के बतौर उन्नीसवीं सदी के खारिज लेख को संशोधित करके छापने की अपनी परिपक्व और कार्यान्वित योजना को मुझसे छिपाकर रखा।'

इस मामले को मार्क्स ने फिर दिसम्बर में जोर्गे को लिखी चिट्ठी में उठायाः

> 'जहाँ तक मेरी बात है उस बेवकूफ ने बहाने भरी तमाम बातें लिखीं मसलन कि 'अंग्रेजों को विदेशियों की सीख पसंद नहीं आती', कि 'मेरे नाम से नफ़रत करते हैं आदि'। इस सबके बावजूद चूँकि उसकी पतली सी किताब में 'पूँजी' से चोरी की गई है इसलिए बेहतरीन प्रचार है, हालांकि वह आदमी निहायत 'कमजोर' पात्र है और उस धीरज से तो बहुत दूर है, जो कुछ भी सीखने या किसी मामले का गहराई से अध्ययन करने की पहली शर्त होती है'।

आपसी संबंध टूट जाने के बाद मार्क्स ने हिंडमैन को उन 'भद्र मध्यवर्गीय लेखकों में' शामिल माना '(जो) किसी भी संयोगवशात उठी अनुकूल लहर के साथ आए किसी भी नए विचार से तत्काल धन या नाम या राजनीतिक पूँजी बनाने की खुजली से ग्रस्त रहते हैं।'[4] मार्क्स के शब्दों की रुखाई का

---

3. हेनरी हिंडमैन को कार्ल मार्क्स का 2 जुलाई 1881 का पत्र। इस पत्र के मसौदे को मार्क्स ने अपने कागजों में संभालकर रखा था। हिंडमैन ने मनुष्य के बतौर अपने छिछलेपन और बचकाने स्वभाव का सबूत देते हुए कहा कि उसने 'दुर्भाग्य से झगड़े के बाद मार्क्स के अधिकतर पत्रों को जला दिया'। जेनी फ़ान वेस्टफालेन को सब कुछ का अनुमान था। उन्होंने 2 जुलाई 1881 को ईस्टबोर्न से अपनी पुत्री लौरा लाफ़ॉर्ग को लिखा 'शनिवार को पीली आंखों वाले उस हिंडमैन के सिर पर मुक्का पड़ा है। शायद वह चश्मे के सामने भी इस पत्र को नहीं रख सकेगा हालांकि अपनी कुल कटुता के बावजूद उसे इतना मनोरंजक शब्दों में पिरोया गया है कि क्रोध मुश्किल से प्रकट होता है। मुझे लगता है मूर अपनी रचना से प्रसन्न हैं'।
4. बाद में हिंडमैन ने एंगेल्स से भी सम्पर्क किया। एंगेल्स ने लिखा 'आपसे निजी रूप से मिलकर मुझे बड़ी खुशी होगी, बस आप मेरे मित्र मार्क्स के साथ मामला सुलटा

कारण निश्चय ही नाम के साथ आभार प्रदर्शन के अभाव की निराशा न थी। क्योंकि उनका मानना था

> 'कि 'पूँजी' और इसके लेखक का नाम देना भारी भूल होती। पार्टी कार्यक्रमों को किसी भी लेखक या किताब पर प्रत्यक्ष निर्भरता से मुक्त रखा जाना चाहिए। इसके साथ लेकिन यह भी कहने की अनुमति दीजिए कि इनमें, जिस तरह आपने 'पूँजी' से ले लिया है उस तरह, नए वैज्ञानिक विकासों को पेश करना अनुचित होता है। वे बातें कार्यक्रम पर आपकी टिप्पणी के मेल में एकदम नहीं हैं क्योंकि उसके घोषित लक्ष्य के साथ उनका कोई संबंध नहीं है।[5] उनका प्रवेश किसी ऐसे कार्यक्रम की व्याख्या के लिए पूरी तरह उपयुक्त होता जिसे मजदूर वर्ग की स्वतंत्र और अलग पार्टी की स्थापना के लिए तैयार किया गया होता।'

हिंडमैन की अशिष्टता के साथ ही मार्क्स के क्रोध का मुख्य कारण उनका यह सरोकार था कि 'पूँजी' का उपयोग ऐसी किसी परियोजना के लिए नहीं होना चाहिए जो स्पष्ट रूप से उसमें मौजूद विचारों से कतई मेल नहीं खाती। दोनों व्यक्तियों के बीच का अंतर सचमुच गहरा था। हिंडमैन तो इस विचार को कतई नहीं मानते थे कि सत्ता पर क्रांतिकारी कार्यवाही के जरिए कब्जा करना चाहिए; वे ब्रिटिश सुधारवाद के चरित्र के मुताबिक मानते थे कि बदलाव केवल शांतिपूर्ण साधनों से और क्रमशः हासिल करना चाहिए। फ़रवरी 1880 में उन्होंने मार्क्स से कहा था 'प्रत्येक अंग्रेज के सामने लक्ष्य होना चाहिए कि वह बिना कठिनाई या खतरनाक टकराव के सामाजिक और राजनीतिक गोलबंदी करने में लगे'।

इसके उलट मार्क्स पहले से सोच समझकर बनाई यांत्रिक योजना का विरोध करते थे। उन्होंने 1880 के उत्तरार्ध में हिंडमैन को जवाब दिया कि उनकी 'पार्टी इंग्लैंड की क्रांति को अनिवार्य नहीं मानती लेकिन ऐतिहासिक

लीजिए क्योंकि मुझे नजर आ रहा है कि अब तो आप उन्हें उद्धृत भी करने लगे हैं'। मार्क्स ने टिप्पणी की 'बच्चे को आपने सही सीख दी है। आपके पत्र से उसे गुस्सा आया होगा। मेरे साथ तो वह यह सब इसलिए कर लेता है क्योंकि उसे "बदनामी के डर से" सार्वजनिक रूप से झगड़ा करने की मेरी अक्षमता पर भरोसा है'।

5. एमिली बोतिगेली का कहना है 'इस झगड़े का कारण व्यक्तिगत या किसी कुंठित लेखक की आकांक्षा से जुड़ा हुआ नहीं था।—यह सैद्धांतिक मामला था जिसमें मार्क्स ने डेमोक्रेटिक फ़ेडरेशन और उनके एक प्रमुख संस्थापक को घोषित किया कि उनका इस पहलकदमी से कोई लेना देना नहीं है'।

उदाहरणों के मुताबिक सम्भव समझती है।' सर्वहारा वर्ग के विस्तार ने सामाजिक सवाल के 'विस्फोट' को 'अपरिहार्य' बना दिया है।

'अगर (यह विस्फोट) क्रांति में बदल जाता है तो यह न केवल शासक वर्गों की बल्कि मजदूर वर्ग की भी गलती होगी। शासक वर्गों से प्रत्येक शांतिपूर्ण रियायत उन पर "बाहरी दबाव" के चलते हासिल की गई है। उनकी कार्यवाही इस दबाव के अनुरूप चलती रही है। अगर मजदूर वर्ग अधिकाधिक कमजोर होता गया है तो केवल इसलिए कि इंग्लैंड का मजदूर वर्ग नहीं जानता कि कानूनी रूप से उन्हें प्राप्त शक्तियों और स्वतंत्रताओं का वह किस तरह इस्तेमाल करे'।

इस निर्णय के उपरांत उन्होंने जर्मनी की घटनाओं से तुलना की जहाँ

> 'मजदूर वर्ग अपने आंदोलन की शुरुआत से ही इस बात को पूरी तरह जानता था कि बिना क्रांति के आप सैनिक तानाशाही से छुटकारा नहीं पा सकते। साथ ही उन्होंने यह भी समझा कि इस तरह की क्रांति सफल होने पर भी पहले से अगर संगठन न हो, उसने जानकारी न हासिल कर ली हो, प्रचार न चलाया हो तो आखिरकार उनके विरुद्ध हो जाएगी।–इसीलिए उन्होंने कड़ाई से कानूनी सीमाओं के भीतर ही अपना आंदोलन चलाया। कानून के परे सब कुछ सरकार के पक्ष में था जिसने मजदूरों को ही कानून के बाहर घोषित कर दिया। उनके अपराध उनके काम नहीं थे बल्कि वे विचार थे जिन्हें उनके शासक पसंद नहीं करते थे'।

इन बातों से सिद्ध है कि मार्क्स की निगाह में क्रांति महज व्यवस्था का तीव्र उन्मूलन नहीं था बल्कि वह एक लम्बी और जटिल प्रक्रिया थी।[6]

हालांकि मार्क्स के विचारों के चलते तीखी बहसें उठीं और वाद विवाद भी हुए लेकिन इंग्लैंड में भी उनका असर पड़ना शुरू हो गया। इसीलिए 1881 के अंत में मार्क्स ने जोर्गे को लिखे पत्र में बताया कि 'देर से ही सही अंग्रेजों ने भी 'पूँजी' पर थोड़ा ज्यादा ही ध्यान देना शुरू कर दिया है'। अक्टूबर में

---

6. 1879 के शुरू में मोंटस्टुअर्ट एलफिंस्टन की एक मुलाकात मार्क्स से हुई। अंग्रेज महोदय ने उनसे एक भड़काऊ सवाल पूछा 'मैंने कहा, मान लीजिए आपकी वाली क्रांति हो जाती है और आपकी वाली गणतांत्रिक सरकार भी बन जाती है। तब भी आपके और हमारे दोस्तों के खास विचारों को साकार करने की राह में काफी लम्बा चलना होगा। उन्होंने जवाब दिया कि निश्चय ही सभी बड़े आंदोलनों की रफ़्तार धीमी होती है। बेहतर चीजों की ओर सिर्फ़ यह एक कदम होगा जैसे 1688 की आपकी क्रांति राह पर एक चरण ही तो थी'।

कनटेम्पोरेरी रिव्यू ने 'कार्ल मार्क्स और युवा हेगेलपंथियों का समाजवाद' शीर्षक एक लेख छापा जिसे मार्क्स ने 'बेहद अपर्याप्त (और) भूल से भरा' कहा लेकिन नई रुचि का संकेतक भी माना। कटुता के साथ उन्होंने आगे लिखा कि यह 'उचित' था क्योंकि इसके लेखक जान रे (1845-1915) 'नहीं मानते कि चालीस साल से अपने घातक सिद्धांतों का प्रसार करने में मैं "खराब" इरादों से प्रेरित रहा हूँ। मुझे उनकी "महामनस्कता" की दाद देनी चाहिए।' कुल के बावजूद मार्क्स ने इस तरह के प्रकाशनों के बारे में अपना अभिमत संक्षेप में दर्ज किया 'अपनी आलोचना के विषय से कम से कम पर्याप्त परिचित होने का औचित्य कलम के ब्रिटिश हम्मालों के लिए बेहद अनजानी चीज प्रतीत होती है।'

एक अन्य अंग्रेजी पत्रिका *मॉडर्न थॉट* ने मार्क्स के साथ थोड़ा सम्मानजनक बरताव किया और उनके काम के वैज्ञानिक चरित्र को मानने को तैयार हुई। पत्रकार और वकील अर्नेस्ट बेलफ़ोर्ट बैक्स (1854-1925) ने 'पूँजी' को ऐसी किताब कहा जिसमें 'अर्थतंत्र में एक खास सिद्धांत का नियोजन इस तरह साकार हुआ है कि इसके क्रांतिकारी चरित्र और व्यापक महत्त्व की तुलना खगोलशास्त्र में कोपर्निकसीय व्यवस्था या आम यांत्रिकी में गुरुत्वाकर्षण के नियम से की जा सकती है।'

बैक्स को उम्मीद थी कि इसका अंग्रेजी अनुवाद जल्दी ही आएगा इसलिए उन्होंने न केवल माना कि 'पूँजी' इस 'सदी की सबसे महत्त्व की किताबों में से एक है', बल्कि मार्क्स की शैली की भी प्रशंसा की और उसकी तुलना इसके 'आकर्षण और उमंग', इसके 'हास्य' और इसकी 'सर्वाधिक अमूर्त सिद्धांतों की अत्यंत बोधगम्य प्रस्तुति' के लिए शापेनहावर से की।

मार्क्स इस 'पहले ऐसे अंग्रेजी प्रकाशन' से खुश हुए 'जिसमें नए विचारों के प्रति असली उत्साह की व्याप्ति है और यह ब्रिटिश अनपढ़पन के विरोध में मजबूती से खड़ा है'। उन्होंने ध्यान दिया कि 'मेरे आर्थिक सिद्धांतों की व्याख्या में और ('पूँजी' के उद्धरणों के) सही अनुवाद में—बहुत गड़बड़ी और भ्रम हैं' लेकिन लेखक की कोशिशों के लिए उसकी प्रशंसा की और खुश हुए कि 'इस लेख के प्रकाशन की घोषणा लंदन के वेस्ट एन्ड की दीवारों पर बड़े अक्षरों में प्लेकार्ड लगाकर की गई थी इसलिए बड़ी उत्तेजना पैदा हुई।'

मार्क्स के विचारों का व्यापक प्रसार 1870 दशक से ही नजर आने

लगा था। नए दशक के आरम्भ में भी यह प्रसार जारी रहा। बहरहाल अब उनका प्रसार अनुयायियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के छोटे घेरे तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि उन्हें व्यापक पाठक समुदाय मिलना शुरू हुआ। मार्क्स में रुचि अब केवल उनके राजनीतिक लेखन, मसलन कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र और इंटरनेशनल के प्रस्तावों तक ही सीमित नहीं रह गई, बल्कि उसका विस्तार उनके प्रमुख सैद्धांतिक योगदान, राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना, तक भी हुआ। 'पूँजी' में निहित सिद्धांतों की चर्चा और प्रशंसा विभिन्न यूरोपीय देशों में शुरू हो गई और कुछ ही सालों बाद, आगामी दिनों में मशहूर होने वाले उद्धरण की शब्दावली में, एंगेल्स ने अपने मित्र के इस ग्रंथ को बिना किसी संकोच के 'मजदूर वर्ग की बाइबल' कहा। कौन जानता है कि पवित्र ग्रंथों के प्रचंड विरोधी मार्क्स ने इस बात का बुरा न माना होता!

2. जीवन का दंगल

जून 1881 के पहले दो हफ़्तों में जेनी फ़ान वेस्टफालेन की सेहत और बुरी हो गई। उनके 'वजन और ताकत में लगातार और बढ़ती हुई गिरावट' चिंताजनक थी तथा दवा का कोई असर भी नहीं हो रहा था। डाक्टर ह्वोर्किन ने उन्हें लंदन की जलवायु से दूर जाने को प्रेरित किया। उम्मीद थी कि इससे उनकी सेहत इतनी स्थिर हो जाएगी कि पुत्री जेनी तथा प्यारे नाती-नतिनी से पेरिस में मिलने की पूर्वनिर्धारित यात्रा कर सकें। इसलिए मार्क्स और उनकी पत्नी ने कुछ समय समुद्री खाड़ी में ईस्टबोर्न में बिताने का फैसला किया।

उस समय मार्क्स की सेहत भी ठीक नहीं थी और उम्मीद थी कि कुछ समय के समुद्री संसर्ग के चलते वे न केवल, जैसा चाहते थे, पत्नी के साथ समय गुजारने को मिल जाता बल्कि उनकी सेहत के लिए भी लाभप्रद होता। एंगेल्स ने जेनी लांग्वे को महीने के दूसरे पखवारे में सूचित किया कि 'यह बदलाव मूर के लिए भी समान रूप से लाभप्रद (होगा)'।[7] 'वे भी थोड़ी

7. मार्क्स को परिवार और नजदीकी दोस्तों में 'मूर' के नाम से पुकारा जाता था। एंगेल्स ने बताया कि 'उनको कभी मार्क्स या कार्ल भी कहकर नहीं बुलाया जाता था। बस मूर ही कहा जाता वैसे ही जैसे हम सब उनको पुकारने के नाम से बुलाते। असल में जब पुकारने का नाम खत्म हो जाता है तो उसके साथ नजदीकी भी चली जाती है। विश्वविद्यालय के दिनों से ही उनका पुकारने का नाम मूर था और न्यू राइनिशे जाइटुंग में भी उन्हें हमेशा मूर कहा जाता। अगर मैं उनको किसी भी अन्य तरीके

स्फूर्ति चाहते हैं, एक और बात है कि अब रात को उनको उतनी बुरी तरह खांसी नहीं आती और बेहतर नींद सोते हैं।' मार्क्स ने अपने कष्ट के बारे में जोर्गे को बताया। 20 जून को माना कि वे 'लगातार 6 महीनों से अधिक समय से खांसी, जुकाम, गले की सूजन और गठिया की तकलीफ उठा रहे हैं। इसके चलते वे शायद ही कभी बाहर निकले हों और समाज से लगभग बाहर रहे हैं।'

महीने के अंत में मार्क्स और उनकी पत्नी ईस्टबोर्न के लिए निकले और वहाँ लगभग तीन हफ़्ते रहे। इस यात्रा और डाक्टरों की जरूरी सलाह का खर्च एंगेल्स ने उठाया। जुलाई में उन्होंने इस दोस्त को चिंतामुक्त किया 'आपको सौ से एक सौ बीस पौंड तक मिल सकते हैं। सवाल सिर्फ़ यह है कि ये सारा धन आप एक बार में ही चाहते हैं या कितना वहाँ भेजूं और कितना यहाँ के लिए रखूँ।'

लौरा और एलिनोर बारी बारी से माता पिता के साथ कुछ समय तक रहे और उनकी सेवा की। लेकिन जेनी फ़ान वेस्टफालेन की सेहत में सुधार नहीं आया। लौरा को उन्होंने लिखा 'अनुकूल परिस्थितियों के बावजूद मुझे बेहतर नहीं महसूस हो रहा और–कुर्सी से चिपककर रह गई हूँ। तुम तो जानती हो पैदल चलने में मेरा कोई जोड़ नहीं था इसलिए अपनी ऐसी हालत को कुछ ही महीने पहले तक अपने सम्मान के विपरीत माना होता।'

लौटकर लंदन आने पर जेनी की हालत डाक्टर को कुछ बेहतर महसूस हुई और उन्होंने पाँच महीने या उससे भी अधिक समय बाद पहली बार पेरिस जाकर पुत्री और नाती-नतिनियों से मिलने की उनकी इच्छा मंजूर कर ली। मार्क्स ने पाँच पौंड पुत्री जेनी को भेजा ताकि नकद चुकाकर वह बिस्तर, रजाई आदि भाड़े पर ला सके'। उन्होंने कहा कि अगर हम दोनों को तुम्हारे

से संबोधित करता तो उन्हें लगता कि कुछ गड़बड़ हो गई है जिसे दुरुस्त करने की जरूरत है'। इसी तरह अगस्त बेबेल ने भी बाद में लिखा 'मार्क्स को हमेशा उनकी पत्नी और पुत्रियाँ "मूर" कहती थीं मानो उनका कोई और नाम न हो। पुकारने का यह नाम उनको आबनूसी काले बालों और दाढ़ी के कारण मिला था जो उनकी मूछों के विपरीत सफेद हो गए थे'। बर्नस्टाइन को भी याद था 'मैं विदा बोलकर जाना चाहता था लेकिन एंगेल्स बोले "ना, ना, मेरे साथ मूर के पास चलो"। मैंने पूछा "मूर के पास? ये मूर कौन है?" एंगेल्स ने जवाब दिया "मार्क्स, और कौन" मानो पूछने वाले को जानना चाहिए कि वे किसकी बात कर रहे हैं'।

घर आकर रहना है तो इतना तो जरूरी होगा। इसके साथ ही लिखा 'शेष धन आएंगे तो चुका देंगे'।

26 जुलाई को मार्क्स और उनकी पत्नी, हेलेन देमुथ को साथ लेकर फ्रांस पहुँचे। फ्रांस पहुँचकर पेरिस के उपनगर अर्जेंत्यूल तक की यात्रा करनी पड़ी जहाँ जेनी लांग्वे अपने पति के साथ रह रही थी। मार्क्स तत्काल ही पारिवारिक डाक्टर गुस्ताव दाउर्लेन (?) से मिलना चाहते थे जिन्होंने जेनी फ़ान वेस्टफालेन की देखभाल का आश्वासन दिया था। उन्होंने एंगेल्स को लिखा कि मुलाकात के पहले दिन ही 'छोटे बच्चों ने ठीक ही अपना दावा' 'बुजुर्ग निक' पर ठोंक दिया है। क्रूर निहितार्थ के साथ मार्क्स के लिए यह नाम परिवार में 'मूर' के विकल्प के रूप में चल पड़ा था। खासकर अपने जीवन के आखिरी कुछ सालों में वे अक्सर पुत्रियों, एंगेल्स और पाल लाफ़ॉर्ग को लिखे पत्रों में इस नाम का उपयोग करते और अपने इस यशस्वी समनाम का आनंद और मजा लेते।[8]

फ्रांस में मार्क्स की वापसी हालांकि नितांत निजी कारणों से हुई थी फिर भी उससे थोड़ी सनसनी फैलनी तय थी। लांग्वे का अनुमान था कि जैसे ही उन्हें इसके बारे में पता चलेगा 'अराजकतावादी लोग (मार्क्स पर)' आगामी चुनावों में 'वोट इधर उधर करने की दुरभि मंशा का आरोप मढ़ (देंगे)' लेकिन फिर उन्हें अपने मित्र क्लीमेंस्यू से पता चला कि मार्क्स को 'पुलिस से डरने की कोई जरूरत नहीं है'। वैसे एलिनोर मार्क्स ने जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक प्रेस के पेरिस संवाददाता कार्ल हिर्श (1841-1900) को पहले

---

8. इस नाम से पहली बार उन्होंने 'पूँजी' के छपने के साल पत्र पर दस्तखत किया था। मार्क्स के बारे में जो तमाम ओछी बातें बोली गईं उनमें अधिकतर सामी विरोध या नस्लवाद का तड़का है। उनमें सबसे खराब बात में कहा गया कि 'दुनिया के बारे में उनका नजरिया शैतानी था, उनका अंहकार भी शैतानी था। कभी कभी लगता है वे जानते थे कि वे उसका पापकर्म पूरा कर रहे हैं'। मार्क्स ने अपना 'बुजुर्ग' नाम थोड़ा मजाहिया अंदाज में रखा था। उदाहरण के लिए उन्होंने लौरा लाफ़ॉर्ग को लिखा 'मुझे दुख है कि मैं अपनी प्यारी पुतली का जन्मदिन घर पर नहीं मना पाऊंगा लेकिन इस बुजुर्ग का मन तुम्हारे पास लगा हुआ है। तुम तो मेरे दिल में बसे हुए हो'। लौरा ने जब पुत्र को जन्म दिया तो उन्होंने पाल लाफ़ॉर्ग को लिखा 'छोटे बुतरू को मेरी ओर से गले लगाना और कहना कि यह बुजुर्ग अपने दो वारिसों को पाकर खुश है'।

ही अपने माता पिता के आगमन की सूचना दे दी थी इसलिए ही मार्क्स ने मजाक किया कि उनकी यह उपस्थिति 'एक खुला रहस्य' बनकर रह गई।

एंगेल्स एक पखवारे तक बर्लिंगटन, यार्कशायर रहे थे और उनके मित्र ने जो बताया उससे प्रसन्न तथा निश्चिंत हुए। उन्होंने सामान्य चिंता के साथ जवाब दिया– 'मेरे पास कुछ चेक पड़े हुए हैं। इसलिए भी अगर आपको कोई जरूरत हो तो बिना किसी संकोच के बताइए कि लगभग कितना चाहिए। आपकी पत्नी को किसी चीज का अभाव न तो होना चाहिए, न होने दीजिएगा। इसलिए अगर उन्हें कोई चीज पसंद आए या आपको पता हो कि इससे उनको खुशी होगी तो उनके लिए जरूर ले लीजिएगा।' साथ ही उन्होंने मार्क्स को अपनी जिंदगी के उत्तम आनंद की भी सूचना दी 'यहाँ जर्मन बीयर के बिना भी मजा लिया जा सकता है क्योंकि घाट पर जो छोटा सा कैफ़े है उसमें मिलने वाली कड़वी एल भी जबर्दस्त है और जर्मन बीयर की तरह ही उसमें भी तरंग आती है।'

समुद्र के दूसरे छोर पर मार्क्स का वक्त इतना बेहतरीन नहीं बीत रहा था। उन्होंने मदद के लिए एंगेल्स को धन्यवाद दिया 'आपके खजाने से इतनी भारी रकम निकालना मेरे लिए बड़ी लज्जा की बात है, लेकिन पिछले दो सालों से घर चलाने के मामले में अराजकता ने बहुत तकलीफ दी है और उसके चलते तमाम तरह का बकाया बढ़ता जा रहा है। यह हालत काफी समय से मेरे लिए उत्पीड़नकारी बनी हुई है'।[9] इसके बाद उन्होंने पत्नी का हालचाल बताया 'प्रतिदिन हमें चढ़ाव उतार के उसी अनुभव से गुजरना पड़ रहा है जैसा ईस्टबोर्न में हो रहा था। अंतर केवल इतना आया है कि, जैसे कल हुआ, कभी कभी दर्द के औचक तथा भयानक दौरे पड़ते हैं'। ऐसे मौकों पर डाक्टर दुर्लेन अफीम देने को तैयार रहते। मार्क्स ने अपना भय जाहिर किया 'सेहत में अस्थायी "सुधारों" से बीमारी की स्वाभाविक गति में कोई रुकावट नहीं आ रही। लेकिन इनसे मेरी पत्नी को धोखा होता है और मेरी फटकार के बावजूद जेनी (लांग्वे) इस विश्वास पर अड़ी हुई है कि अर्जेंत्यूल में हमारे रुकने की अवधि जितना सम्भव हो उतनी लम्बी होनी चाहिए'।

---

9. हमेशा की तरह उदारता के साथ एंगेल्स ने तत्काल जवाब दिया 'जहाँ तक इस तीस पौंड का सवाल है तो इस पर अपने बाल सफेद न कीजिए।––बहरहाल अगर और जरूरत हो तो बताइए, चेक की यह रकम बढ़ा दी जाएगी'।

उम्मीद और आशंका के बीच इस तरह लगातार दोलायमान रहना खुद उनकी सेहत के लिए एकदम ठीक नहीं था और उनका आराम हराम होता जा रहा था 'पिछली रात असल में पहला मौका था जब मुझे ठीक से नींद आई। दिमाग इस कदर निर्जीव और सुस्त हो गया है मानो सिर में मिल की कोई चक्की चल रही हो'। इसीलिए वे अब तक 'न तो पेरिस जा सके' और न ही राजधानी के साथियों को बेटी के घर बुलाने के लिए 'एक लाइन लिख सके'।[10] पहली बार पेरिस शहर के मुख्य भाग में उनका जाना 7 अगस्त को दिन में ही हो सका और जेनी फ़ान वेस्टफालेन को इससे बेहद आनंद आया। मार्क्स तो 1849 के बाद कभी आए ही नहीं थे इसलिए उनको शहर 'लगातार जारी मेले की तस्वीर' महसूस हुआ।

अर्जेंत्यूल वापस लौटने पर मार्क्स को आशंका हुई कि उनकी पत्नी की सेहत अचानक बिगड़ सकती है इसलिए एंगेल्स को पत्र में बताया कि लंदन लौटने के लिए उन्हें प्रेरित करने की चेष्टा मार्क्स ने की। बहरहाल उनकी मातृसुलभ भावना मजबूत साबित हुई और उन्होंने कहा कि वे अपनी पुत्री जेनी के साथ जब तक सम्भव है रुकना चाहती हैं। इसके लिए उन्होंने पहले ही 'चालाकी का काम किया—और इतने कपड़े धोने के लिए भेज दिए' कि वे अब अगले सप्ताह के आरम्भ में ही धुलकर वापस आएंगे।[11] पत्र को खत्म करने से पहले कुछेक पंक्तियों में अपना हाल लिखा 'विचित्र बात है कि हालांकि रात में बहुत कम सोने को मिलता है और दिन भर चिंता खाए रहती है फिर भी हरेक व्यक्ति कहता रहता है कि मेरी हालत अच्छी है और सचाई भी यही है'।

अंत में एक और दर्दनाक घटना के चलते उन्हें आनन फानन में फ्रांस

---

10. मार्क्स ने उनको जीवन के संकेत कुछ दिन बाद ही दिए 'लगभग एक पखवारे से मैं यहाँ पड़ा हुआ हूँ। न तो पेरिस और न ही किसी परिचित के पास गया। मेरी पत्नी की हालत ने तो मुझे न यह करने दिया न वह'।
11. मार्क्स ने यही बात लौरा को लंदन में लिखी 'बढ़ती कमजोरी के कारण मां की हालत गम्भीर है। इसलिए मेरा इरादा था (क्योंकि हम इस बार आराम से ही यात्रा कर सकेंगे) कि हफ़्ते के अंत तक किसी भी हाल में निकल चला जाए और बीमार को भी यह बता दिया था। बहरहाल कल धोने के लिए कपड़े भेजकर उन्होंने मेरी योजना पर पानी फेर दिया'।

छोड़ना पड़ा। 16 अगस्त को उन्हें सूचना मिली कि उनकी तीसरी पुत्री एलिनोर गम्भीर रूप से बीमार है। वे तुरंत लंदन के लिए चल पड़े। थोड़े दिन बाद उनकी पत्नी और हेलेन देमुथ भी आ गए। जल्दी ही साफ हो गया कि टूसी (एलिनोर का घर का नाम) घनघोर अवसाद की हालत में है।[12] चिंतित होकर कि उसने 'हफ़्तों से सचमुच कुछ भी नहीं खाया' और 'पीली तथा क्षीणकाय दीख' रही है, मार्क्स ने अपनी दूसरी पुत्री जेनी का रुख किया और उसे सूचित किया कि तुम्हारी बहन 'लगातार अनिद्रा, हाथों की कंपकंपी, चेहरे पर स्नायविक झटकों आदि' से पीड़ित है और 'अगर अधिक देरी की गई' तो 'उसको गम्भीर खतरा' हो सकता है।[13] सौभाग्य की बात थी कि इस संकट में सम्बल देने के लिए कुछ ही समय पहले बीते मधुर सप्ताहों की याद थी। कुल के बावजूद अर्जेंत्यूल में 'तुम्हारे और प्यारे बच्चों के साथ रहने की खुशी ने इतना भरपूर संतोष प्रदान किया है कि उतना अधिक संतोष मुझे शायद ही कहीं और मिला होता'।

महज दो दिन बाद अर्जेंत्यूल से खबर आई कि 'लांग्वे और छोटा हैरी' दोनों 'बहुत बीमार' हैं। मार्क्स ने एंगेल्स को बताया 'इस समय परिवार में और कुछ नहीं दुर्भाग्य टूट पड़ा है'। दुखों और परेशानियों का कोई पार नहीं सूझ रहा था।

3. पत्नी का देहांत और फिर से इतिहास का अध्ययन

एलिनोर की देखभाल का काम परेशान करने वाला था और इसमें वे शेष आधी गरमी डूबे रहे। साथ ही जेनी फ़ान वेस्टफालेन की बीमारी भी बढ़ रही थी जो 'दिन प्रतिदिन अपने अंतिम मुकाम की ओर बढ़ रही थी'। इन दोनों चीजों के चलते मार्क्स परिवार सामाजिक रिश्तों से कटा हुआ था। महीने के आरम्भ में उन्होंने पूर्व अभिनेत्री और सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध उपन्यासों की

---

12. एलिनोर की जीवनी लेखिका योने काप का कहना है कि एलिनोर की 'समस्या दोहरी और विकट थी'। वह लिसागरी के साथ अपना गोपनीय संबंध तोड़ना चाहती थी जिन्हें परिवार ने कभी स्वीकार नहीं किया और उसी समय 'नाटकों के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहती थी'।
13. एंगेल्स को उन्होंने लिखा कि डाक्टर डोंकिन को 'अचरज है–कि इस तरह का झमेला पहले क्यों नहीं हुआ'।

लेखिका मिन्ना काउत्सकी (1837-1912) को पत्र लिखकर माफ़ी मांगी कि वे उन्हें लंदन में घर नहीं बुला सकते क्योंकि उनकी पत्नी की 'दुखद और (डर है) घातक बीमारी' ने 'बाहरी दुनिया के साथ (उनकी) अंतःक्रिया को रोक दिया है'। मिन्ना के पुत्र काउत्सकी को उन्होंने उसी दिन लिखा कि वे 'बीमार नर्स' हो गए हैं।

इस दौरान मार्क्स ने गणित का अध्ययन फिर से शुरू किया। पाल लाफ़ॉर्ग ने बाद में इस विषय के प्रति अपने ससुर के अति विशेष रुख को याद कियाः

> 'कवियों और उपन्यासकारों को पढ़ने के अलावे मार्क्स का बौद्धिक आराम का एक उल्लेखनीय तरीका, गणित था जिससे उनको खास लगाव था। बीजगणित से भी उनको नैतिक आश्वासन मिलता था और इसमें वे घटनाओं से भरे अपने जीवन के सर्वाधिक तनाव के क्षणों में राहत पाते थे। अपनी पत्नी की अंतिम बीमारी के दौरान वे अपने सामान्य वैज्ञानिक काम करने में परेशानी महसूस करने लगे और पत्नी की तकलीफ़ से पैदा उत्पीड़न को परे करने का एकमात्र रास्ता उन्हें गणित में डूब जाना सूझा। नैतिक पीड़ा के उस दौर में उन्होंने अत्यणुकलन पर एक किताब ही तैयार कर दी।–उच्च गणित में उन्हें द्वंद्वात्मक गति का सबसे तार्किक और उसके साथ ही सरलतम रूप दिखाई पड़ा। उनका विचार था कि विज्ञान तब तक सचमुच विकसित नहीं हो सकता जब तक वह गणित का उपयोग करना सीख नहीं जाता।'

अक्टूबर मध्य में मार्क्स की सेहत, जो पारिवारिक घटनाओं का बोझ महसूस कर रही थी, एक बार फिर से गड़बड़ाई जब ब्रोंकाइटिस के चलते फेफड़ों में गम्भीर रूप से पानी भरने लगा। इस समय एलिनोर हर समय पिता के बिस्तर से लगी रही और न्यूमोनिया के खतरे से दूर रखने में उनकी मदद करती रही। सहायता के लिए अर्जेन्त्यूल से बड़ी बहन आना चाहती थी लेकिन उसे रोक दिया।[14]

चिंताकुल एंगेल्स ने 25 अक्टूबर को बर्नस्टाइन को लिखा 'पिछले 12 दिनों से वे ब्रोंकाइटिस और तमाम किस्म की दिक्कतों के चलते बिस्तर पर थे लेकिन आवश्यक सावधानियाँ बरतने के चलते रविवार के बाद से खतरे से बाहर हैं। आपसे बता सकता हूँ कि मुझे बड़ी चिंता हो गई थी'।[15] कुछ

---

14. 'तुम्हें बच्चों को नहीं छोड़ना चाहिए। यह सीधे पागलपन होगा और पापा को तुम्हारे मौजूद होने से जितनी खुशी या आराम होगा उससे अधिक चिंता होगी। वैसे हम सब चाहते तो हैं कि तुम यहाँ रहो'।

15. मार्क्स ने खुद बेकर को दिसम्बर में लिखा 'फेफड़ों की सूजन के साथ मिलकर

दिनों बाद दीर्घकालीन कामरेड जोहान्न बेकर (1809-86) को भी उन्होंने सूचित किया 'जीवन के इस दौर में और उनकी आम सेहत को देखते हुए (ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों की सूजन) काम करना कोई हंसी खेल नहीं है। सौभाग्य से बुरे दिन बीत गए हैं और जहाँ तक मार्क्स का सवाल है सभी तरह के खतरे फिलहाल दूर हो गए हैं हालांकि दिन के अधिकतर समय वे लेटे रहते हैं और बेहद कमजोर हो गए हैं'।

नवम्बर अंत में एंगेल्स ने फिर से बर्नस्टाइन को सेहत का ताजा हाल लिखा 'मार्क्स की हालत अब भी बेहद खराब है। उन्हें कमरे से बाहर निकलने या किसी गम्भीर काम को शुरू करने की इजाजत नहीं है। लेकिन उनका वजन बढ़ रहा है'। इसके बावजूद 'इस बीच अगर किसी एक बाहरी घटना के चलते उनका दिमाग फिर से कमोबेश दुरुस्त होने की ओर है तो वह है चुनाव'। 27 अक्टूबर 1881 को नई जर्मन संसद के चुनाव में सामाजिक जनवादियों ने तीन लाख से अधिक वोट पाये। यूरोप के लिए यह संख्या विस्मयकारी थी।[16]

जेनी फ़ान वेस्टफालेन भी इस नतीजे से बेहद खुश हुईं लेकिन यह उनके जीवन की लगभग आखिरी खुशी थी। आगामी हफ़्तों में उनकी अवस्था भयप्रद होती गई। डाक्टर द्वोर्किन ने कहा कि 'उनको थोड़ा बदलाव देने के लिए' एलिनोर और अन्य सहायक 'उन्हें चादर समेत बिस्तर से उठाएँ और कुर्सी पर बिठाएँ' तथा वापस बिस्तर पर लिटा दें। उनको होने वाले भयानक दर्द से थोड़ी राहत देने के लिए उन्हें मार्फीन की सुई लगातर लगाई जा रही थी। एलिनोर ने बाद में याद कियाः

> 'हमारी मां सामने वाले बड़े कमरे में पड़ी थी, मूर पीछे वाले छोटे कमरे में थे।–वह सुबह मुझे कभी नहीं भूलेगी जब उन्हें इतनी ताकत महसूस हुई कि मां के कमरे में जा सकें। जब दोनों साथ हुए तो जैसे दोनों जवान हो गए। मां प्यारी लड़की में

ब्रोंकाइटिस ने मुझे ऐसा जकड़ा कि एक समय बहुत दिनों तक डाक्टरों को इससे मेरे पार पाने में संदेह रहा'।

16. एंगेल्स भी खुश थे 'सर्वहारा ने कभी अपने आपको इतने शानदार तरीके से प्रकट नहीं किया था। इंग्लैंड में 1848 की पराजय के बाद उदासीनता का आलम छा गया था और आखिरकार बुर्जुआ शोषण के समक्ष इस प्रावधान के साथ कि ट्रेड यूनियनें ऊंचे वेतन के लिए व्यक्तिगत लड़ाई लड़ेंगी, समर्पण कर दिया गया था'।

बदल गई, पिता युवा प्रेमी हो गए जो जीवन की दहलीज पर खड़े थे। पिता बीमारी से त्रस्त बूढ़े नहीं रह गए, मां भी मरणासन्न बुढ़िया नहीं रह गईं जिन्हें एक दूसरे से जुदा होना है।'[17]

2 दिसम्बर 1881 को जेनी फ़ान वेस्टफालेन लीवर के कैंसर से मर गईं। वे वह औरत थीं जो मार्क्स के साथ खड़ी रही थीं। उनकी तकलीफों और राजनीतिक आवेगों की साझीदार रही थीं। इस नुकसान की भरपाई सम्भव नहीं थी। सिर्फ़ अठारह साल की उम्र में 1836 में जब वे उनके प्यार में पड़े थे उसके बाद पहली बार उन्होंने खुद को अकेला पाया। उनकी 'सबसे बड़ी निधि' छिन गई थी। अब वह 'चेहरा नहीं रह गया (जो उनके) जीवन की सबसे उदात्त और मधुरतम यादों को फिर से जगा सके'।

पहले से ही अपनी जर्जर अवस्था को और अधिक खराब होने से बचाने के लिए पत्नी के अंतिम संस्कार में शामिल भी न हो सके। दुखी मन से उन्होंने पुत्री जेनी को लिखा 'डाक्टर की पाबंदी की बात बोलने का कोई फायदा नहीं'। उनकी पत्नी ने मृत्यु से कुछ ही देर पहले किसी औपचारिकता की अनदेखी पर नर्स से जो कहा था, 'हम लोग ऐसे दिखावटी नहीं', उन शब्दों के बारे में सोचने लगे। बहरहाल एंगेल्स ताबूत गाड़ने के क्रियाकर्म में शामिल रहे। उनके बारे में एलिनोर ने कहा था कि 'उनकी सहृदयता और समर्पण बयान से परे है'। कब्र पर अपने वक्तव्य में उन्होंने याद किया 'अगर कभी कोई स्त्री रही हो जिसकी सबसे बड़ी खुशी दूसरों को खुश रखने में थी तो वह यही स्त्री थी'।

मार्क्स के लिए शारीरिक तकलीफ के चलते इस क्षति का हृदय विदारक कष्ट और बढ़ गया। उनका जो इलाज चल रहा था वह अत्यंत पीड़ादायक था फिर भी उन्होंने थोड़ा उदासीन भाव से उसका सामना किया। अपनी पुत्री जेनी को लिखाः

'अब भी मुझे छाती, गर्दन आदि पर आयोडीन का लेप लगाना पड़ता है और जब बार बार ऐसा किया जाता है तो त्वचा थकाऊ और दर्दनाक तरीके से सूज जाती है। यह पूरी कार्यवाही महज इसलिए की जा रही है ताकि आरोग्यलाभ के दौरान

17. मार्क्स ने बाद में डैनिएल्सन को लिखा कि कितनी बुरी बात थी कि 'पत्नी के जीवन के आखिरी छह हफ़्तों में से तीन हफ़्तों के दौरान' वे उन्हें देख भी नहीं सके थे' हालांकि वे 'एक दूसरे से सटे हुए कमरों में ही थे'।

बीमारी वापस न लौटे (अब यह सामान्य खांसी से एकदम अलग की चीज हो गई है) और फिलहाल मेरी वास्तविक सेवा कर रही है। मानसिक वेदना का केवल एक प्रभावी प्रतिरोध है और वह है शारीरिक दर्द। किसी भी आदमी की समूची दुनिया लूट लीजिए बस उसे दांतदर्द से छुटकारा दिला दीजिए।'

उनकी सेहत इतनी संकटग्रस्त हो गई थी कि उन्होंने एक समय डैनिएल्सन को लिखा कि वे 'यह बुरी दुनिया छोड़ने के बहुत करीब आ गए थे'। आगे लिखा 'डाक्टर मुझे फ्रांस के दक्षिण या अल्जीरिया तक भेजना चाहते' हैं। एकाधिक हफ़्तों तक उन्हें बिस्तर पर लेटे रहने को मजबूर होना पड़ा। जोर्गे को एक पत्र में लिखा कि 'घर में कैद रहना पड़ा' और 'समय का कुछ हिस्सा (मेरी) सेहत को दुरुस्त रखने की योजनाओं में चला जाता है'।

बहरहाल इन सबके बावजूद 1881 के वसंत से लेकर 1882 की सर्दियों के बीच का मार्क्स की बौद्धिक ऊर्जा का बड़ा हिस्सा ऐतिहासिक अध्ययन में बीता। उन्होंने पहली सदी ईसा पूर्व से साल दर साल की समय सारिणी बनानी शुरू की और उसमें प्रमुख घटनाओं को दर्ज करने के साथ उनके कारणों और मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में लिखना शुरू किया। यह वही पद्धति थी जिसका इस्तेमाल उन्होंने 1879 के वसंत और 1880 की गर्मियों के बीच में 'नोट्स आन इंडियन हिस्ट्री (664-1858)' को तैयार करने में आजमाया था। यह काम उन्होंने रॉबर्ट सीवेल (1845-1925) की किताब 'द एनालीटिकल हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया' के आधार पर किया था। इस बार भी उनका मकसद मनुष्यता के वास्तविक अतीत के परिप्रेक्ष्य में अपने विचारों की गुणवत्ता की परीक्षा करना था। इसमें उन्होंने केवल उत्पादन में होने वाले बदलावों पर ही ध्यान नहीं दिया, बल्कि किसी भी आर्थिक निर्धारणवाद के परे आधुनिक राज्य के विकास के बेहद जरूरी सवाल पर गहराई से ध्यान दिया।[18]

इन नोटों में कुछ बेहद मामूली स्रोतों का उल्लेख नहीं किया गया है। उनके अलावे दो प्रमुख किताबों का सहारा इस नई अनुक्रमणिका में लिया गया

---

18. माइकेल क्राट्के का कहना है कि मार्क्स इस प्रक्रिया को 'व्यापार, कृषि, खनन उद्योग, टैक्स प्रणाली और अधिसंरचना की समग्र विकास प्रक्रिया' के बतौर समझते थे। उनके अनुसार मार्क्स ने ये नोट इस दीर्घकालीन यकीन के साथ एकत्र किये कि 'राजनीतिक दर्शन की जगह वे समाजवादी आंदोलन के लिए ठोस सामाजिक-वैज्ञानिक बुनियाद तैयार कर रहे हैं'।

है। इनमें पहली थी इतालवी इतिहासकार कार्लो बोत्ता (1766-1835) की 'हिस्ट्री ऑफ़ द पीपुल'स ऑफ़ इटली' (1825) जो मूल रूप से तीन खंडों में फ्रांसिसी भाषा में छपी थी क्योंकि लेखक को 1814 में सेवोयार्द सरकार के उत्पीड़न से बचने के लिए तूरिन छोड़कर भागना पड़ा था (नेपोलियन बोनापर्त की पराजय के बाद ही वे पीदमांट लौट सके थे)। दूसरी थी फ्रेडरिक श्लोजेर (1776-1861) की बहुपठित और प्रशंसित 'वर्ल्ड हिस्ट्री फ़ॉर द जर्मन पीपुल'। इन दोनों किताबों के आधार पर मार्क्स ने चार नोटबुकें भर डालीं। उन्होंने जर्मन, अंग्रेजी और फ्रांसिसी में सार लिखे और कभी कभी संक्षिप्त आलोचनात्मक टिप्पणियाँ भी दर्ज कीं।[19]

इनमें से पहली नोटबुक में उन्होंने कालानुक्रमिक तरीके से कुल 143 लिखित पृष्ठों में 91 ईसापूर्व से लेकर 1370 ईसवी तक घटी कुछ प्रमुख घटनाओं की सूची बनाई। प्राचीन रोम से शुरू करके आगे रोमन साम्राज्य के पतन पर उन्होंने विचार किया, शार्लमान (742-814) के ऐतिहासिक महत्त्व पर ध्यान दिया, बैजंतिया और इटली के समुद्री गणतंत्रों की भूमिका को उजागर किया, सामंतवाद के विकास, क्रूसेडों (धर्मयुद्धों) तथा बगदाद और मोसुल के खिलाफ़तों का उल्लेख किया। दूसरी नोटबुक के 145 पृष्ठों में 1308 से लेकर 1469 ईसवी तक के कालखंड पर नोट हैं। इसके मुख्य

19. मार्क्स की चिट्ठी पत्री में इस अध्ययन का कोई उल्लेख नहीं मिलता इसलिए इनकी तिथि निश्चित करना बेहद मुश्किल है। समग्र लेखन के संपादकों ने अस्थायी रूप से इन उद्धरणों को '1881 के उत्तरार्ध से 1882 के उत्तरार्ध तक' का माना है जबकि मैक्समिलियन रूबल के मुताबिक 'बिना शक' वे 1881 के उत्तरार्ध के बाद के हैं। पहली परिकल्पना कुछ ज्यादा ही सामान्य है जबकि दूसरी वाली सही नहीं लगती क्योंकि मार्क्स ने अधिकतर काम 1881 में किया लेकिन ज्यादा सम्भावना है कि इस काम को वे 1882 तक भी खींच ले गये थे। इसे हम पांडुलिपियों को भिन्न किस्म से रेखांकित किये जाने के सहारे समझ सकते हैं और 23 दिसम्बर 1882 को अपनी पुत्री एलिनोर को लिखे उनके पत्र से भी। इसलिए कहा जा सकता है कि ये नोटबुकें उनके जीवन के आखिरी अठारह महीनों में उनकी बौद्धिक गतिविधि के दो दौरों से जुड़ी हुई हैं जब वे लंदन और वाइट द्वीप के बीच आते जाते रहे थे अर्थात 1881 के पतझड़ से 9 फ़रवरी 1882 तक और अक्टूबर 1882 के आरम्भ से 12 जनवरी 1883 तक। एक बात तय है कि इस ऐतिहासिक कालानुक्रम पर वे 1882 के आठ महीनों में काम नहीं कर सके थे जब वे फ्रांस, अल्जीरिया और स्विट्ज़रलैंड में थे।

विषय इटली की आर्थिक प्रगति तथा चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दियों में जर्मनी की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति हैं। तीसरी नोटबुक के 141 पृष्ठों में 1470 से लेकर 1580 ईसवी तक के समय को दर्ज किया गया है। इसमें फ्रांस और स्पेन के बीच की लड़ाई, जिरोलामो सावोनारोला (1452-98) के समय के फ़्लोरेंस के गणतंत्र तथा मार्टिन लूथर (1483-1546) के प्रोटेस्टैन्ट सुधार पर विचार किया गया है। आखिरी चौथी नोटबुक के 117 पृष्ठों में यूरोप के 1577 से 1648 ईसवी तक के असंख्य धार्मिक टकरावों को दर्ज किया गया है।

बोत्ता और श्लोजेर की किताबों के उद्धरणों से भरी चार नोटबुकों के अलावा मार्क्स ने एक और नोटबुक तैयार की। उसमें अपने समय की घटनाओं को दर्ज किया गया था और उद्धरण भी समकालीनों के थे। जिनो कपोनी (1792-1876) की 'हिस्ट्री ऑफ़ द रिपब्लिक ऑफ़ फ़्लोरेन्स' (1875) के नोटों में 1135 से 1433 तक का प्रकरण था जबकि 449 से 1485 तक का कालखंड एक नए हिस्से के बतौर तैयार किया गया जिसका आधार जान ग्रीन (1837-83) की किताब 'हिस्ट्री ऑफ़ द इंग्लिश पीपुल' (1877) थी। सेहत में आने वाले उतार चढ़ाव ने उन्हें इसके बाद का काम करने की इजाजत नहीं दी। उनके नोट पीस ऑफ़ वेस्टफालिया, जिससे 1648 में तीस साला लड़ाई का अंत हुआ था, के विवरण के साथ समाप्त हो जाते हैं।

जब मार्क्स की चिकित्सकीय अवस्था में सुधार आया तो जरूरत थी कि वे 'वापसी के खतरे' को दूर रखने की हर सम्भव कोशिश करें। अपनी पुत्री एलिनोर के साथ वे 29 दिसम्बर 1881 को वाइट द्वीप पर, जहाँ पहले भी एकाध बार वे गए थे और जहाँ फिर से जाने की सलाह दी जा रही थी वहीं वेंटनोर चले गए। उम्मीद थी कि 'गर्म जलवायु और शुष्क हवा से उनकी अवस्था में सुधार तेजी से' पूरा होगा। वहाँ जाने से पहले उन्होंने जेनी को लिखा 'मेरी प्यारी बच्ची, इस समय मेरी सबसे बेहतर जो सेवा तुम कर सकती हो वह यह कि हौसला बनाए रखो! मुझे आशा है कि तुम्हारे साथ और भी खुशनुमा दिन गुजार सकूंगा और नाना की जिम्मेदारियों को योग्यतापूर्वक निभाऊँगा'।

1882 के पहले दो हफ़्ते उन्होंने वेंटनोर में गुजारे। बिना किसी खास दिक्कत के टहलने के लिए और 'मौसम की मनमानी पर कम निर्भर रहने के

लिए' उन्हें 'औचक की जरूरत के लिए' एक कृत्रिम श्वास नलिका पहननी पड़ती थी जो बहुत कुछ 'थूथन' की तरह दिखाई देती थी। इन कठिन परिस्थितियों में भी मार्क्स कभी अपना विडम्बना वाला भाव नहीं भूले और लौरा को लिखा कि 'जिस उत्साह के साथ जर्मनी में बुर्जुआ अखबारों ने या तो (मेरे) निधन या फिर उसकी आसन्न अनिवार्यता की घोषणा की' उससे '(मुझे) काफी गुदगुदी हुई'।

मार्क्स ने एलिनोर के साथ जो दिन गुजारे वे बहुत आसान नहीं थे। अपनी आस्तित्विक समस्याओं में डूबी होने के कारण वह अब भी गहरे अस्थिर थी। सो नहीं पाती थी और डरी रहती थी कि उसका स्नायविक संकट अचानक बढ़ जा सकता है। उनके बीच आपसी लगाव जितना भी मजबूत महसूस होता रहा हो आपस में संवाद बहुत मुश्किल हो गया था। मार्क्स 'गुस्से और चिंता से भरे' थे तथा एलिनोर को 'अप्रिय और असंतुष्ट' समझते थे।[20]

मार्क्स अब भी समकालीन प्रमुख राजनीतिक घटनाओं से बाखबर बने हुए थे। जब जर्मनी के चांसलर संसद में बोलते हुए सरकारी नीति के प्रति जर्मन मजदूरों में मौजूद भारी अविश्वास की उपेक्षा नहीं कर सके तो उन्होंने एंगेल्स को लिखा 'मैं इसे बड़ी जीत मानता हूँ, न केवल जर्मनी के लिए बल्कि उसके बरक्स व्यापक बाहरी दुनिया के लिए कि बिस्मार्क ने राइखस्टाग में माना कि उनके राजकीय समाजवाद के प्रति कुछ हद तक जर्मन मजदूरों ने "नाकामयाबी का इजहार किया" है'।

मार्क्स का ब्रोंकाइटिस असाध्य होता जा रहा था। बहरहाल उनकी लंदन वापसी के बाद डाक्टर द्वोर्किन के साथ परिवार के सदस्यों ने विस्तार से उनकी बेहतरी के लिए सर्वाधिक मुफ़ीद मौसम को लेकर सलाह मशविरा किया। पूरी तरह से ठीक होने के लिए गरम इलाके में आराम उचित लग रहा था लेकिन वाइट द्वीप से कोई फायदा हुआ नहीं था। जिब्राल्टर का विकल्प खारिज हो गया क्योंकि उस इलाके में प्रवेश के लिए मार्क्स को पासपोर्ट की जरूरत पड़ती। राज्यविहीन मनुष्य होने के नाते उनके पास पासपोर्ट

---

20. 4 जनवरी 1882 को मार्क्स ने लौरा को लिखा 'मेरी संगिनी कुछ भी नहीं खा रही हैं, स्नायविक तनाव से बुरी तरह परेशान हैं तथा दिन भर पढ़ती-लिखती रहती हैं।– लगता है वे मेरे साथ केवल आत्मोत्सर्ग करने वाले शहीद की तरह कर्तव्य भावना से जीवित बची हुई हैं'।

नहीं था। बिस्मार्की साम्राज्य बर्फ से ढका हुआ था और वैसे भी उनके लिए वह प्रतिबंधित था। इटली का तो सवाल ही नहीं था क्योंकि जैसा एंगेल्स ने बताया 'शुभेच्छुओं के मन में पहली चिंता यह थी कि पुलिस की ओर से कोई उत्पीड़न नहीं होना चाहिए'।

डाक्टर द्वोर्किन और मार्क्स के दामाद पाल लाफ़ॉर्ग की मदद से एंगेल्स ने मार्क्स को अल्जीयर्स जाने के लिए राजी कर लिया। उस समय अंग्रेजों में उस जगह की प्रतिष्ठा यह थी कि अगर धन हो तो ठंड की दिक्कतों से बचने के लिए वहाँ जाना सही है। मार्क्स की पुत्री एलिनोर ने बाद में याद किया कि मार्क्स को यह असामान्य यात्रा करने के लिए 'पूँजी' को पूरा करने के उनके पुराने सपने ने मजबूर कर दिया।

'उनकी सामान्य अवस्था खराब होती जा रही थी। अगर उनके भीतर थोड़ा अधिक अहं होता तो उन्होंने चीजों को उनकी स्वाभाविक गति से जाने दिया होता। लेकिन उनके लिए एक चीज सब कुछ के ऊपर थी और वह थी लक्ष्य के प्रति समर्पण। वे अपने इस विशाल ग्रंथ को समाप्त करना चाहते थे और इसीलिए सेहत में सुधार हेतु एक और यात्रा करने को राजी हो गए।'

9 फ़रवरी को मार्क्स भूमध्य सागर की ओर चले। रास्ते में अर्जेंत्यूल में रुके। यह पेरिस का एक उपनगर था जहाँ उनकी सबसे बड़ी बेटी जेनी रहती थी। जब उनकी सेहत में सुधार नहीं आया तो मुश्किल से एक हफ़्ते बाद ही अकेले मार्सेलीज जाने का फैसला किया। एलिनोर को समझा दिया कि उसका साथ आना जरूरी नहीं है। एंगेल्स को राज बताया 'दुनिया में चाहे जो कुछ हो जाए मैं उस लड़की को यह सोचने नहीं दूंगा कि परिवार की बलिवेदी पर एक बूढ़े आदमी की "नर्स" के रूप में उसे अपना जीवन होम करना है'।

समूचे फ्रांस को ट्रेन से पार करने के बाद वे 17 फ़रवरी को प्रोवेन्साल के विशाल बंदरगाह पर पहुँचे। तुरंत उन्होंने अफ्रीका जाने वाले पहले जहाज का टिकट हासिल किया। दूसरे ही दिन ठंडी तेज हवा में शाम को जहाज पर चढ़ने के लिए बंदरगाह पर अन्य यात्रियों के साथ कतार में लग लिए। उनके पास कुछेक सूटकेस थे जिनमें ठूंसकर भारी कपड़े, किताबें और दवाइयाँ भरी थीं। 5 बजे शाम को 'सइद' नामक स्टीमर अल्जीरिया के लिए चल पड़ा। वहाँ मार्क्स को 72 दिन ठहरना था। जीवन में केवल एक बार ही यूरोप के बाहर उनको यह समय बिताना था।

5

मूर की आखिरी यात्रा

1. अल्जीयर्स और अरब दुनिया के बारे में

34 घंटे की तूफानी यात्रा के बाद मार्क्स अपनी मंजिल पर 20 फ़रवरी को पहुँचे। अगले ही दिन एंगेल्स को चिट्ठी लिखी और एक हफ़्ते बाद याद किया कि उनका 'क्षीण शरीर' हड्डी के भीतर की 'मज्जा तक जम' गया था। होटल पेंशन विक्टोरिया में ऊपरी मुस्तफा इलाके में आदर्श जगह पर कमरा मिल गया जिसके एक ओर बंदरगाह दिखाई पड़ता था तो दूसरी ओर क्षितिज पर कबीलिया पहाड़ियाँ नजर आती थीं; यह 'जादुई समां' उन्हें 'यूरोप और अफ्रीका के अद्भुत संगम' को निहारने का मौका दे रहा था।

इस नवागंतुक बहुज्ञ के बारे में केवल अल्बेर्त फ़ेर्मे ही जानते थे जो चार्ल्स फ़ुरिए के अनुयायी थे और शांति की कद्र करते थे। दूसरे साम्राज्य का विरोध करने के चलते मिले कारावास को भुगतने के बाद वे 1870 में अल्जीयर्स आए थे। मार्क्स के एकमात्र दोस्त वहाँ वही थे, बाहर घूमने जाने पर उनके गाइड का काम करते और इस नई दुनिया के बारे में उनकी जिज्ञासा शांत करने की कोशिश करते।

बहरहाल कुछ दिन बीत जाने के बावजूद मार्क्स की सेहत में सुधार नहीं आया। ब्रोंकाइटिस से अब भी वे परेशान थे और लगातार खांसी के चलते रात भर जागते रहते थे। मौसम में ठंड, नमी और बरसात थी– दस साल में अल्जीयर्स का वह सबसे बुरा जाड़ा था– जिससे प्लूरेसी का भी हमला फिर हुआ। उन्होंने एंगेल्स को पत्र लिखा 'लंदन के पड़ोसी द्वीप और अल्जीयर्स नगर के मेरे पहनावे में बस इतना अंतर आया है कि राइनोसेरस की कोट की जगह हल्का कोट पहन रखा है।' उन्होंने 400 किलोमीटर और दक्षिण सहारा

के किनारे बिस्क्रा गांव चले जाने के बारे में सोचा लेकिन शरीर की बुरी हालत के चलते यह कष्टकर यात्रा टाल दी। इसलिए अल्जीयर्स में ही दीर्घकालीन और जटिल इलाज की शुरुआत की।

शहर के सबसे मशहूर डाक्टर स्टेफान (1840-1906) ने दिन में सोडियम आर्सिनेट और रात में निद्रा के लिए कोडीन आधारित अफीमी सीरप की सलाह दी। उन्होंने मार्क्स को शारीरिक थकान वाले सारे काम न्यूनतम करने और 'मन बहलाव के लिए कुछ पढ़ने के अतिरिक्त असली बौद्धिक काम से दूर रहने' का आदेश दिया। बहरहाल 6 मार्च को खांसी भयानक हो गई और बार बार खून आने लगा। इसलिए मार्क्स को होटल से बाहर निकलने या बातचीत करने से भी रोक दिया गया। अब 'नागरिक के बतौर उनका कर्तव्य' बस 'आराम, एकांत और खामोशी' रह गया। उन्होंने एंगेल्स को लिखा 'कम से कम मेरे प्यारे डाक्टर डोंकिन (लंदन) की तरह डाक्टर स्टेफान भी कोन्याक शराब नहीं भूले'।

सबसे तकलीफदेह इलाज दस घाव पैदा करने का वह तरीका साबित हुआ जो उन दिनों प्रचलन में था। इसके तहत त्वचा पर फफोले पैदा किए जाते थे ताकि उससे सतह के नीचे के नुकसानदेह तत्व बाहर निकल जाएँ। इस इलाज को मार्क्स एक अन्य रोगी की मदद से पूरा कर सके जो संयोग से फ़ॉर्मेसी का जानकार नौजवान था। धीरे धीरे उनके सीने और पीठ को कोलोडियन से डुबोकर और उससे पैदा फफोलों का मुँह खोलकर कास्तेलहाज ने उनके फेफड़ों में जमा अतिरिक्त पानी बाहर निकालने में सफलता पाई।

अचरज नहीं कि मार्क्स अपनी पसंद पर पछताने लगे। उन्होंने लाफ़ॉर्ग को लिखा 'जिस क्षण (उन्होंने) मार्सेलीज से विदा लिया' तभी से 'नीस और मेंटन में मौसम बेहतरीन' हो गया। इन्हीं दोनों जगहों पर जाने के बारे में उन्होंने सोचा था।[1] मार्च के उत्तरार्ध में अपनी पुत्री जेनी से स्वीकारा 'इस बेवकूफाना, अदूरदर्शिता से भरी यात्रा से सेहत के मामले में मैं उसी स्तर पर पहुँच गया हूँ जिस हालत में (लंदन में) था'। उन्होंने यह भी लिखा कि इतनी दूर की यात्रा को लेकर उनके मन में संदेह तो था लेकिन एंगेल्स और

1. 20 मार्च 1882 को उन्होंने लौरा लाफ़ॉर्ग को लिखा 'यह विचार, जिसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ, लगातार दुहराया जा रहा था कि अफ्रीका में धूप बेहद कड़ी होती है और हवा में जादू का असर है'।

डोंकिन एक दूसरे पर अफ्रीकी आग के भ्रम में पागल हो रहे थे जबकि उनमें से कोई भी उस साल 'वहाँ के मौसम के बारे में कुछ खास' नहीं जानता था। उन्हें लगा 'जंगली मुर्गाबी की ऐसी खोज से पहले जानकारी जुटा लेनी उचित थी'।[2]

20 मार्च को मार्क्स ने लाफ़ॉर्ग को लिखा कि फिलहाल इलाज रोक दिया गया है 'क्योंकि (उनकी) छाती या (उनकी) पीठ पर रत्ती भर जगह भी सूखी नहीं' बची है। अपने ही शरीर को देखने से उनको वह 'तरबूजों से भरे बगीचे का लघु संस्करण' लगने लगा है। बहरहाल उनको सुकून इससे मिला कि उनकी 'नींद धीरे-धीरे' लौट रही है। 'जो भी अनिद्रा से पीड़ित न रहा हो वह कभी उस परमानंद को नहीं समझ सकता जो निद्राविहीन रातों के आतंक के खात्मे से पैदा होता है।'

दूसरी ओर मार्क्स को सांस लेने में तकलीफ बढ़ती गई क्योंकि फफोले रात में आते, उन्हें पट्टी से बांधना जरूरी था और खुजलाने की सख्त मनाही थी। उन्होंने सुना कि जबसे वे लंदन से निकले तबसे ही फ्रांस में मौसम 'बेहतरीन' रहा है। साथ ही याद आया कि सेहत तेजी से ठीक होने की उम्मीद जताई गई थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने एंगेल्स को लिखा 'मनुष्य को कभी अत्यधिक आशावादी राय से खुद को धोखे में नहीं रखना चाहिए'। साफ बात कि 'स्वस्थ शरीर में तार्किक दिमाग का कोई रास्ता होना चाहिए'।

मार्क्स की तकलीफ महज शारीरिक नहीं थी। उन्हें अकेलापन महसूस हो रहा था और 16 मार्च को उन्होंने अपनी पुत्री जेनी को लिखा 'अल्जीयर्स शहर से अधिक जादुई कुछ भी नहीं हो सकता, बस शहर के बाहर का देहाती इलाका न हो– यह तो अलिफ़ लैला की तरह है– बशर्ते सेहत ठीक हो और मेरे प्यारे सब करीब हों (खासकर अपने पोतों को कैसे भूल सकता हूँ)'।

---

2. 27 मार्च 1882 को जेनी लांग्वे को लिखा 'हम लोगों के बीच की बात है। हालांकि वाइट द्वीप पर मौसम प्रतिकूल था लेकिन मेरी सेहत में इतना सुधार हुआ था कि लोगों को भारी अचरज हुआ।–इसके विपरीत लंदन में एंगेल्स की उत्तेजना ने–असल में मुझे परेशान कर दिया। मुझे लगा कि अब मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा। इसलिए बेचैन होकर किसी भी कीमत पर लंदन से दूर भाग आया! लोग अतिशय वास्तविक प्रेमवश भी किसी की जान ले सकते हैं। इन सबके साथ फिर से अच्छा हो जाने वाले मामलों में इससे अधिक खतरनाक कुछ भी नहीं होता है'।

27 मार्च को फिर लिखा कि 'जादू के जोर से' अगर सबसे बड़ा जानी यहाँ आ जाए तो 'अचम्भे से मूरों, बर्बरों, तुर्कों और नीग्रो लोगों, एक शब्द में कहें तो इस बेबेल को और इस पूरबी दुनिया के (अधिकतर काव्यात्मक) परिधानों को 'सभ्य' फ्रांसिसियों तथा आलसी ब्रिटन लोगों के साथ घुला मिला देखेगा'।

एंगेल्स उनके ऐसे साथी थे जिनसे वे सब कुछ बताते थे। उन्हें लिखा कि 'कभी-कभी महान डान क्विक्जोट की तरह गहरी उदासी के दौरे पड़ते हैं'। जीवन संगिनी के दुनिया में न होने की अनुभूति बार बार उभर आती थी 'आप तो जानते हैं कुछ लोग अपनी भावनाओं को जाहिर करने में कुछ ज्यादा ही संकोच करते हैं; फिर भी इसे स्वीकार (न) करना झूठ बोलना होगा कि बहुत हद तक मेरे खयालों में मेरी प्रिया की याद तारी रही। आखिर वह मेरे जीवन के सबसे बेहतरीन हिस्से की संगिनी रही थी।' इस दुखते कष्ट से निजात केवल चारों ओर फैली हुई प्राकृतिक सुषमा को निहारने से ही मिलती थी। अप्रैल के शुरू में उन्होंने लिखा कि 'समुद्र के किनारे अद्भुत चांदनी' पसरी है और '(अपनी) बाल्कनी के सामने के इस नजारे से (अपनी) आंख कभी हटा नहीं पाता हूँ।'

मार्क्स को गम्भीर बौद्धिक सक्रियता पर लगी रोक से भी दिक्कत हो रही थी। यात्रा की शुरुआत से ही उन्हें महसूस हो रहा था कि यह 'समय की बरबादी' साबित होगी फिर भी इसके लिए राजी हुए जब उन्हें लगा कि इस 'जघन्य बीमारी' से 'व्यक्ति की बुद्धि को भी नुकसान पहुँचता' है।

जेनी को उन्होंने बताया कि अल्जीयर्स में 'किसी काम' का 'सवाल ही नहीं उठता', यहाँ तक कि 'पूँजी को (तीसरे जर्मन संस्करण के लिए) सुधार भी नहीं पाता'।[3] जहाँ तक उस समय की राजनीतिक स्थिति की जानकारी का सवाल था उन्होंने खुद को एक स्थानीय छोटे अखबार *ल पेटिट कोलोन* की दूरस्थ रिपोर्टों और यूरोप से आनेवाले 'लेगालिते' (समता) नामक मजदूरों के एकमात्र परचे तक सीमित कर लिया था। लेगालिते के बारे में उन्होंने व्यंग्य के साथ लिखा 'इसे अखबार नहीं कह सकते'।

1882 की मार्क्स की चिट्ठियों से पता चलता है कि वे 'फिर से सक्रिय

3. अक्टूबर 1881 में प्रकाशक ओट्टो मेइजनर ने 'पूँजी' के पहले खंड के नए संस्करण की तैयारी में जरूरी सुधार या जोड़ घटाव के लिए कहा था।

होने और इस व्यर्थ के बेवकूफाना पेशे को छोड़ देने के लिए उत्सुक' थे क्योंकि यह 'महंगा तो छोड़िए व्यर्थ और नीरस जीवन' था। लाफ़ॉर्ग से उन्होंने यह भी कहा कि कुछ न करने की व्यस्तता के चलते लगभग जड़बुद्धि हुआ महसूस कर रहे हैं। इससे लगता है कि उनको डर सताने लगा था कि वे अपना सामान्य जीवन वहाँ से शुरू करने में अक्षम हो चुके हैं जहाँ उन्होंने उसे स्थगित किया था।

इस तरह की तकलीफदेह घटनाओं ने मार्क्स को अल्जीरिया के यथार्थ में उतरने नहीं दिया, न ही, एंगेल्स के मुताबिक, उनके लिए 'अरब लोगों में मौजूद साझा स्वामित्व' की विशेषताओं का अध्ययन करना ही सच में सम्भव था।[4] 1879 में पहले ही उन्होंने फ्रांस-शासित अल्जीरिया में जमीन के सवाल पर सोच विचार किया था जब वे मानव विज्ञान, भू संपत्ति और पूँजीवाद से पहले के समाजों का अध्ययन कर रहे थे। उस समय उन्होंने एक नोटबुक में रूसी इतिहासकार मैक्सिम कोवालेव्सकी की किताब 'कम्युनल लैंडओनरशिपः काजेज, कोर्स ऐंड कान्सीक्वेन्सेज' से कुछ उद्धरण उतारे थे जिनमें फ्रांसिसी उपनिवेश बनने से पहले के साझा भू-स्वामित्व और उसमें फ्रांसिसी उपनेविशकों द्वारा किए बदलावों का जिक्र था। मसलनः

> 'राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में समस्त प्रगति की अनिवार्य शर्त (फ्रांसिसी पूँजीपति वर्ग की निगाह में) निजी भूस्वामित्व का निर्माण है। साझा संपत्ति को बरकरार रखना उपनिवेश के साथ ही मूल देश के लिए भी खतरनाक है क्योंकि यह 'रूप लोगों के दिमाग में कम्युनिस्ट प्रवृत्तियों का समर्थन करता है' (नेशनल असेम्बली की बहस, 1873)। कबीले की संपत्ति के वितरण को प्रोत्साहित किया गया, इसका आदेश तक दिया गया ताकि पहले तो दबाव पड़ने पर सदैव विद्रोह के लिए तैयार पराधीन जनजातियों को कमजोर किया जा सके और दूसरे मूलवासियों

4. लाफ़ॉर्ग ने निश्चय ही बाद में बढ़ा चढ़ा कर बोला जब कहा कि 'मार्क्स जब वापस आए तो उनके दिमाग में अफ्रीका और अरब लोगों की बातें भरी हुई थीं। अल्जीयर्स में अपने निवास के दौरान उन्होंने उसका पुस्तकालय चाट डाला। मुझे लगता है कि अरब लोगों की हालत के बारे में उन्होंने ढेर सारी किताबें पढ़ डाली थीं'। जबकि बाडिया ने बताया है कि ज्यादा सम्भव है कि मार्क्स 'उस फ्रांसिसी उपनिवेश के सामाजिक और राजनीतिक हालात के बारे में बहुत कुछ जानने' में कामयाब न हो सके हालांकि 'अल्जीरिया से लिखे गए उनके पत्रों से उनकी बहुमुखी उत्सुकता का पता चलता है'।

> से औपनिवेशिक प्रभुओं के हाथ में भू-स्वामित्व का अधिकाधिक अंतरण हो सके। फ्रांस की सभी सरकारों की ओर से यही नीति अपनाई जाती (रही) है।'

अल्जीरिया की हालत के बारे में जो मसौदा कानून वाम रिपब्लिकन सांसद जूल्स वार्निए (1826-99) ने पटल पर रखा उसे 1873 में संसद की मंजूरी मिल गई। उसका मकसद 'यूरोपीय उपनिवेशकों और सट्टेबाजों द्वारा स्थानीय आबादी की जमीन छीनना' था। फ्रांसिसी इतने निर्लज्ज थे कि 'सीधी डकैती डालने' की हद तक चले गए क्योंकि साझा देशी इस्तेमाल के लिए आरक्षित समस्त अनजोती जमीन को 'सरकारी संपत्ति' में बदल दिया गया। इसका एक और महत्त्वपूर्ण नतीजा निकला– स्थानीय जनता की ओर से प्रतिरोध का खतरा खत्म हो गया। कोवालेव्सकी के आधार पर ही अपनी टीपों में फिर मार्क्स ने रेखांकित किया कि

> 'निजी संपत्ति की स्थापना और अरब कबीलों में यूरोपीय उपनिवेशवादियों का निवास–कबीलाई एकता के बिखराव की प्रक्रिया को तेज करने का सबसे शक्तिशाली साधन बनेंगे।–कानून के जरिए अरब लोगों की जमीन हड़पने से (होगा कि) 1) फ्रांसीसियों को जितनी सम्भव है उतनी जमीन मिल जाएगी; और 2) जमीन के साथ अरब लोगों के प्राकृतिक जुड़ाव को खत्म करके, फलस्वरूप उनकी कबीलाई एकता के बिखराव के सहारे फ्रांसीसी उनकी आखिरी ताकत को तोड़कर, और इस तरह विद्रोह के खतरे को समाप्त कर देंगे।'

इस तरह के 'भू-संपत्ति के वैयक्तीकरण' से आक्रांताओं को भारी फायदा होगा लेकिन साथ ही इससे 'समाज की बुनियाद को नष्ट करने' का 'राजनीतिक लक्ष्य' भी पूरा होगा।

22 फ़रवरी 1882 को अल्जीरिया के दैनिक *ल'अखबार* (अखबार) ने एक लेख में नव निर्मित व्यवस्था के अन्यायों को दर्ज किया। इसके तहत सैद्धांतिक रूप से उस समय का कोई भी फ्रांसिसी नागरिक फ्रांस से बाहर निकले बिना भी अल्जीरिया की सौ हेक्टेयर से ज्यादा जमीन पर दखल कर सकता था और फिर उस जमीन को किसी स्थानीय व्यक्ति को चालीस हजार फ्रांक में बेच सकता था। प्रत्येक फ्रांसिसी उपनिवेशक ने बीस या तीस फ्रांक चुकाकर खरीदी गई जमीन के हरेक टुकड़े को औसतन तीन सौ फ्रांक की कीमत पर बेचा था।

अपनी खराब सेहत के चलते मार्क्स इन समस्याओं पर फिर से ध्यान

देने में अक्षम थे और अखबार के लेख पर उनकी निगाह भी नहीं पड़ी थी। लेकिन ज्ञान की उनकी स्थायी इच्छा अत्यंत विपरीत हालात में भी मंद न पड़ी। होटल के चारों ओर के इलाके पर नजर मारने के बाद उन्होंने देखा कि वहाँ बड़े पैमाने पर मकानों का निर्माण कार्य चल रहा है। उन्होंने दर्ज किया कि 'हालांकि इस काम में लगे हुए मजदूर स्वस्थ और स्थानीय निवासी हैं फिर भी शुरू के तीन दिन बाद वे बुखार की पकड़ में आ जाते हैं। इसलिए उनकी मजदूरी का एक हिस्सा नियोक्ताओं द्वारा दी जा रही दैनिक कुनैन की भेंट चढ़ जाता होगा'।[5]

भूमध्य सागर के इस दक्षिणी छोर से लिखे सोलह पत्रों में मार्क्स ने कई मजेदार बातों का जिक्र किया है[6] हालांकि इनमें से कुछ से आंशिक औपनिवेशिक नजरिया भी जाहिर होता है। शेष विलक्षण बातें मुस्लिम लोगों के भीतर के सामाजिक संबंधों की बाबत हैं।

मार्क्स अरब लोगों की ठवन से गहरे चकित हुए। उन्होंने लिखा 'गरीब से गरीब मूर भी अपने आपको लबादे में लपेटने और स्वाभाविक, शालीन और सम्मानजनक बरताव जाहिर करने की कला में महानतम यूरोपीय अभिनेता को भी पीछे छोड़ देगा'। उन्होंने देखा कि उनके विभिन्न सामाजिक वर्गों में आपसी घुलाव मिलाव बहुत है। मध्य अप्रैल में पुत्री लौरा को लिखा कि उन्होंने अरब लोगों के एक समूह को कार्ड खेलते देखा। 'उनमें से कुछ भारी परिधान पहने धनी भी लग रहे थे' जबकि शेष सब 'कभी केवल कुर्ती में, कभी सफेद ऊनी पहनावे में तो कभी फटे चीथड़े पहने' नजर आते थे। उन्होंने टीप लिखी

'क्योंकि सच्चे मुसलमान के लिए इस तरह के संयोग भाग्य का उलटफेर हैं जिससे मुहम्मद के बच्चों में भेद नहीं पैदा होता। उनकी सामाजिक अंतःक्रिया

---

5. मार्क्स ने जोड़ा कि 'ऐसा ही आचरण दक्षिण अमेरिका के अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है'।
6. इसमें केवल उनके बचे हुए पत्र ही शामिल हैं। असल में मार्क्स ने और भी पत्र लिखे थे। उनमें से कुछ उनकी पुत्री एलिनोर को भी सम्बोधित थे जो समय बीतने के साथ गुम हो गए। 'उन्होंने मुझे अल्जीयर्स से लम्बे पत्र लिखे थे। उनमें से अनेक मेरे पास नहीं रह गए क्योंकि बहन के अनुरोध पर उन्हें मैंने जेनी को दे दिया और उन्होंने फिर वापस कुछ ही पत्र लौटाए'।

में मौजूद समानता पर इससे कोई असर नहीं पड़ता। नैतिक रूप से पतित होने पर ही वे इस भेद को लेकर सचेत होते हैं। इसी अवस्था में इसाइयों के प्रति उनके मन में नफ़रत और इन काफ़िरों पर अंतिम विजय की उम्मीद पैदा होती है। उनके राजनेता भी संपूर्ण समता (संपत्ति या हैसियत की नहीं बल्कि व्यक्तित्व की) के इस अहसास और आचरण को ठीक ही काफ़िरों के प्रति नफ़रत छोड़े बिना एकता बनाए रखने की गारंटी समझते हैं (इसके बावजूद किसी क्रांतिकारी आंदोलन के अभाव में वे तबाही मचा देंगे।)'

मार्क्स को राज्य की अत्यल्प उपस्थिति पर भी अचम्भा हुआः

> 'किसी भी अन्य जगह ऐसे नगर में, जो केंद्र सरकार का शासन केंद्र हो, अहस्तक्षेप की नीति का पालन इस तरह न होता होगा। पुलिस की मौजूदगी न्यूनतम है और जनता में लज्जा का अतुलनीय अभाव है। इसकी वजह इस्लामी तत्व ही है। चूँकि मुसलमानों में अधीनता जैसी कोई चीज नहीं होती इसलिए न कोई "प्रजा" है, न कोई "शासक"। राजनीति को छोड़कर अन्य किसी क्षेत्र में कोई अधिकारी नहीं दीखता। इस बात को समझने में यूरोपीय पूरी तरह अक्षम हैं'।

मार्क्स ने तिरस्कार के साथ यूरोपीय लोगों के हिंसक दुरुपयोग और निरंतर छेड़खानी तथा 'छोटे लोगों' के बरक्स उनके 'नग्न अहंकार और ढिठाई (तथा) विद्रोह की किसी छोटी घटना में भी 'क्षतिपूर्ति के भीषण, मोलोच जैसे उन्माद' पर हमला किया। उन्होंने इस पर भी जोर दिया कि औपनिवेशिक अधिग्रहण के तुलनात्मक इतिहास में 'अंग्रेजों और डच लोगों ने फ्रांसीसियों को पीछे छोड़ दिया' है। उन्होंने एंगेल्स को सूचना दी, अल्जीयर्स में भी दोस्त और जज फ़ेर्मे ने अपने सेवाकाल के दौरान लगातार देखा कि 'अरब लोगों से इकबालिया बयान हासिल करने के लिए–"पुलिस" उसी तरह टार्चर करती है (जिस तरह भारत में अंग्रेज)–स्वाभाविक रूप से करते हैं'।

'उदाहरण के लिए जब कभी आम तौर पर लूटपाट के इरादे से कोई अरब गिरोह हत्या कर देता है और कुछ समय बाद असली अपराधी पकड़े, मुकदमा झेले और दंडित हो जाते हैं तो उत्पीड़ित उपनिवेशक परिवार के लिए यही क्षतिपूर्ति पर्याप्त नहीं मानी जाती। इसके बदले में वे कम से कम आधा दर्जन अरब लोगों को "खींच लाने" की मांग करते हैं।–जब कोई यूरोपीय इन "छोटे लोगों" के बीच रहता है, चाहे उपनिवेशी बाशिंदे के बतौर या यूं ही, तो आम तौर पर खुद को बांके विलियम प्रथम से अधिक अधिकारसंपन्न समझता है।'

मार्क्स इस विषय को फिर से एक अन्य संदर्भ में उठाते हैं जब उन्होंने एंगेल्स से 'एक गरीब, चोर अरब, किसी बेचारे, पेशेवर हत्यारे' के प्रति फ्रांसिसी अधिकारियों की निर्ममता का जिक्र किया। मृत्युदंड से कुछ देर पहले ही उसे पता चला कि 'उसे गोली नहीं मारी जाएगी, बल्कि गिलोटीन पर चढ़ाया जाएगा! इसे पूर्वनिर्धारित प्रक्रिया के उल्लंघन से होना था!' इतना ही नहीं थाः

> 'उसके रिश्तेदारों को उम्मीद थी कि सिर और धड़ उन्हें सौंप दिया जाएगा ताकि दोनों को एक साथ सीकर वे "पूरे" बदन को दफ़ना सकें। कतई नहीं! चीख पुकार, गाली गलौज और दांत पीसना- फ्रांसिसी अधिकारी अड़े रहे। आखिर पहले कब उन्होंने ऐसा किया था! अब जब मृत शरीर जन्नत पहुँचेगा तो मुहम्मद पूछेंगे,
>
> "तुमने सिर कहाँ छोड़ दिया? या धड़ से सिर अलग कैसे हुआ? तुम जन्नत में घुसने लायक नहीं हो। दोजख में उन कुत्ते इसाइयों के साथ रहो!" इसी वजह से उसके रिश्तेदार इतना परेशान थे।'

इन राजनीतिक और सामाजिक बातों के अतिरिक्त मार्क्स के पत्रों में अरब रीति रिवाजों के बारे में भी बताया गया है। एक पत्र में उन्होंने पुत्री लौरा को एक कहानी सुनाई है जिसने उनके व्यावहारिक पक्ष को बेहद प्रभावित कियाः

> 'एक फ़ेरीवाला अपनी छोटी सी नाव के साथ नदी के तूफानी पानी पर यात्री ढोने के लिए तैयार सवारी का इंतजार कर रहा था। नदी के दूसरे किनारे जाने का इच्छुक एक दार्शनिक आया और नाव पर चढ़ गया। उनके बीच निम्नवत बातचीत हुई।
>
> दार्शनिक– "फ़ेरीवाले, इतिहास के बारे में कुछ जानते हो?"
>
> फ़ेरीवाला– "नहीं।"
>
> दार्शनिक– "तब तो तुम्हारी आधी जिंदगी व्यर्थ गई!"
>
> फिर दार्शनिक– "तुमने गणित पढ़ा है?"
>
> फ़ेरीवाला– "ना।"
>
> दार्शनिक– "तब फिर तुम्हारी आधी से अधिक जिंदगी व्यर्थ गई।"
>
> दार्शनिक के मुख से ये शब्द निकले ही थे कि तेज हवा से नाव पलट गई। फ़ेरीवाला और दार्शनिक नदी में गिर पड़े। इसके बाद फ़ेरीवाले ने जोर से पूछा- "तैर सकते हो?"
>
> दार्शनिक– "ना।"
>
> फ़ेरीवाला– "तब तो तुम्हारी पूरी जिंदगी गई।"'

कहानी के बाद मार्क्स ने लौरा को लिखा 'इससे अरबी बातों की गुदगुदी के लिए तुम्हारी भूख बढ़ेगी।'

दो महीने से ऊपर कष्ट सहने के बाद मार्क्स की सेहत में सुधार आया और आखिरकार वे फ्रांस लौटने में सक्षम हुए। बहरहाल सबसे पहले एंगेल्स के लिए उनके पास चौंकाने वाली खबर थी 'यथावत, गरमी के चलते मैंने पैगम्बर जैसी दाढ़ी और गौरवशाली ताज से छुटकारा पा लिया लेकिन (पुत्रियों के सम्मान में) अल्जीरियाई नाई की बलिवेदी पर बाल चढ़ाने से पहले अपनी तस्वीर खिंचवा ली'। यही उनकी आखिरी तस्वीर रही। और उनकी यह तस्वीर 'असल में मौजूद समाजवाद' के चौराहों पर उनके प्रतिनिधित्व के लिए तत्कालीन शासन द्वारा बनवाई ग्रेनाइट पत्थर में जड़ी मूर्तियों से काफी अलग है। उनके विचारों की तरह ही उनकी मूंछ का जवानी का रंग उतरा नहीं था और जीवन की तमाम मुसीबतों और हताशाओं के बावजूद मुस्काते चेहरे पर दयालुता और भोलापन व्याप्त था।[7]

2. सिद्धांततः गणतांत्रिक

खराब मौसम ने मार्क्स को सताना बंद नहीं किया। 'अफ्रीका में अंतिम दिनों' के दौरान उनकी सेहत की सिरोक्को के आगमन और मार्सेलीज की यात्रा में बुरी तरह परीक्षा हो गई। अपने चौसठवें जन्मदिन पर 5 मई को वे मार्सेलीज उतरे। उस दिन मौसम खास तौर पर खराब था। बाद में उन्होंने एलिनोर को लिखा 'एक जोरदार तूफान ने–(मेरे) केबिन को सच्चे हवाई सुरंग में बदल दिया था'। और उनके पहुँचने की जगह पर स्टीमर असल में बंदरगाह में नहीं घुसा इसलिए यात्रियों को नाव में बिठाकर ले जाया गया। उन्हें 'कई घंटे एक ऐसे कस्टम-सह-शोधन कक्ष में बिताने पड़े जहाँ ठंड और तेज हवा आती थी। वहाँ तब तक रहना पड़ा जब तक नीस जाने का समय नहीं आ गया।' तंज करते हुए लिखा कि इन तकलीफों ने 'कमोबेश (मेरी) मशीन को पटरी से उतार दिया है' और जैसे ही मोंटे कार्लो पहुँचू, तत्काल ही

---

7. मार्क्स ने खुद कहा है कि हालांकि तस्वीर खिंचाने के पहले के आठ हफ़्तों में उन्हें 'एक भी दिन पूरा आराम' नहीं मिला था 'फिर भी चेहरे पर रौनक बरकरार थी'। उनके मित्र ने उन्हें जो बताया उससे एंगेल्स तो बहुत ही खुश थे। उन्होंने बेबेल को लिखा 'अल्जीयर्स में उनकी तस्वीर उतारी गई और वे पुराने दिनों की तरह दीख रहे हैं'।

'(मुझे) किसी एसकलपिस नामक चिकित्सा देव' के पास जाने को मजबूर कर दिया है ।

उनके विश्वस्त चिकित्सा देव अल्साके निवासी और फेफड़े के विशेषज्ञ डाक्टर कुनेमान (1828-?) थे। पता चला कि ब्रोकाइटिस तो असाध्य हो चुकी है और मार्क्स के लिए 'डरावनी' बात कि 'फेफड़ों की सूजन (प्लूरेसी) वापस आ गई है'।[8] इस तमाम उठापटक ने और नुकसान ही किया था और मार्क्स ने हमेशा की तरह एंगेल्स से इसके बारे में साहित्यिक संदर्भ के जरिए मजाक किया। लगता है इस मौके पर 'भाग्य' ने भयंकर सुसंगति का प्रदर्शन किया। कहा जा सकता है कि लगभग (अमल्डस) मुलनेर (1774-1829) की त्रासदियों की तरह, जहाँ 'भाग्य' सचमुच मानव जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए फफोले पैदा करके इलाज करने की पद्धति को चार बार और करना जरूरी हो गया। 9 से 30 मई के बीच इन्हें संपन्न किया गया।

चूँकि आगे की यात्रा से पहले उन्हें चंगा होना था इसलिए तीन हफ़्ते उन्होंने मोनाको शहर में बिताए। वहाँ के माहौल के उनके वर्णन में बुद्धिमत्ता के साथ सामाजिक आलोचना भी शामिल है। मसलन मोंटे कार्लो की तुलना उन्होंने एक काल्पनिक स्थान जेरोल्सटाइन से की जहाँ जैक ओफ़ेनबाख (1819-80) का ओपेरा 'द ग्रैंड डचेस ऑफ़ जेरोल्सटाइन' अवस्थित है।

एकाध बार मार्क्स वहाँ के मशहूर जुआघर के वाचनालय में गए क्योंकि वहाँ अंतर्राष्ट्रीय अखबारों का अच्छा खासा संग्रह था। लेकिन उन्होंने एंगेल्स को बताया कि 'होटल द रूसी में एक दाम में भरपेट भोजन के साथी' और आम तौर पर शहर की जनता को 'जुआघर में चल रहे खेल में अधिक रुचि' थी। इस दौर की उनकी चिट्ठियों में मिलने वाले लोगों के बारे में मजेदार सर्वेक्षण हैं। मसलन 'एक अल्बियन का पुत्र, उदास, चिड़चिड़ा और किंकर्तव्यविमूढ़ था—क्योंकि उसके कुछ पीले बच्चे गुम हो गए थे जबकि वह "उन्हीं पर निगाह रखने में" पूरी तरह निमग्न था'। इसके साथ ही कुछ चुभती टिप्पणियाँ भी मिलती हैं जैसे 'वह समझ नहीं सका कि ब्रिटिश उजड्डता भी "भाग्य को" धकेल नहीं सकती'।

---

8. मार्क्स ने अपनी पुत्रियों को इस बदलाव की सूचना नहीं दी क्योंकि 'वे बेवजह परेशान होतीं'।

इस परदेशी दुनिया का सबसे कटु विवरण उन्होंने पुत्री एलिनोर को निकलने से कुछ ही पहले लिखे पत्र में दिया:

> 'एक दाम में भरपेट भोजन की मेज पर, कैफ़े आदि में बातचीत या फुसफुसाहट का एकमात्र विषय रूलेट का खेल और जुआ में जीत का अंक है। हर समय कुछ न कुछ जीता जाता है, उदाहरण के लिए एक रूसी महिला (रूसी राजनयिक सह जासूस की पत्नी) ने सौ फ्रांक जीते,—और बदले में छह हजार फ्रांक गंवा दिए, जबकि एक और के पास वापसी की यात्रा का भी धन नहीं बचा; कुछ और लोगों ने पूरे परिवार की भारी विरासत को दांव पर लगा दिया; बहुत कम को ही लूट का कोई हिस्सा मिलता है— कहने का मतलब कि बहुत कम जुआरियों को, और जिन्हें मिलता है वे बिना किसी अपवाद के धनी लोग होते हैं। बुद्धि या गुणा गणित का यहाँ कोई सवाल ही नहीं उठता। अगर आपके पास भरपूर धन नहीं है तो किसी "संयोग" के बल पर किसी भी सम्भावना पर भरोसा कोई नहीं कर सकता।'

वहाँ की हवा में जो उन्माद था वह जुआ के अड्डे या शाम के समय तक ही सीमित नहीं था। पूरे शहर में यह नशा व्याप्त था और वहाँ जाने वालों पर पूरे दिन छाया रहता था। उदाहरण के लिए जुए अड्डे के ठीक बगल में एक दुकान थी

> 'जिसमें रोज एक तख्ती लटकाई जाती। उस पर छापे की जगह हाथ से लिखी और साही के कांटे के दस्तखत के साथ सूचना होती कि छह सौ फ्रांक में वह हजार फ्रांक से लाख फ्रांक जीतने का विज्ञान साफ-साफ बता देगा।—और कहा जाता कि किसी भी भांति ऐसे लोग विरल न थे जो रहस्य बताने की इस धूर्त विद्या के शिकार न हुए हों। असल में अधिकतर औरत के साथ जुआरी मर्द भी यकीन करते थे कि निरा संयोग के इस खेल में कोई न कोई विज्ञान जरूर है। उक्त पेरिस कैफ़े के बाहर जुए के अड्डे के सामने या बगीचे के भीतर कुर्सी पर बैठे भद्र पुरुष या स्त्री सिर गड़ाकर (मुद्रित) छोटी तालिकाओं के सहारे कलम से जोड़ घटाव करते रहते हैं। उनमें से कोई एक जोर देकर दूसरे को बताएगा कि वह किस "प्रणाली" को तरजीह देता है, दांव एक "सिरीज की संख्याओं" पर लगाना ठीक रहेगा या नहीं आदि आदि। लगता है जैसे पागलों के किसी झुंड से पाला पड़ा हो।'[9]

---

9. अंग्रेज इंजीनियर जोसेफ जैगर्स ने बैंक तोड़ने का एक रास्ता खोज निकाला। बहरहाल यह कोई वैज्ञानिक प्रणाली नहीं थी बल्कि महज एक तकनीकी गड़बड़ी का उन्होंने पता लगा लिया। 1873 में उन्होंने देखा कि एक रूलेट का पहिया अन्य की तुलना में असंतुलित है। इसलिए अन्य चक्कों के मुकाबले इसमें नौ की संख्या अधिक बार आती है। उन्होंने पंद्रह लाख फ्रांक जीतने में सफलता पाई। बाद में जुआघर को गड़बड़ी का पता चल गया और उसने आसानी से इसे दुरुस्त कर लिया।

संक्षेप में मार्क्स के सामने स्पष्ट हो गया कि 'मोनाको-जेरोलस्टाइन का आर्थिक आधार जुआघर है। यह अगर कल बंद हो जाए तो पूरा मोनाको-जेरोलस्टाइन उठ जाएगा- पूरा का पूरा!' इसके बिना नीस भी नहीं रह जाएगा 'ठंड के बेहतरीन महीनों का मिलन-स्थल चला जाएगा और उनके साथ ही भाग्य के खिलाड़ी भी किसी अन्य फ़ैशनेबुल जगह पर मौज करते पाए जाएंगे।–और वैसे तो बाजार की तुलना में जुआघर कितना बचकाना है!'

फफोलों में से अंतिम के ठीक होने के बाद डाक्टर कुनेमान ने मार्क्स को छुट्टी दे दी और आगे यात्रा जारी रखने की भी इजाजत दे दी। लेकिन उन्होंने 'कांस में एक दो दिन रुकने' की सलाह दी ताकि घाव 'सूख' सके। इसके बाद वे पेरिस जा सकते थे। फ्रांस की आरामगाह पहुँचने के बाद मार्क्स ने अज़ूर तट पर बीते अपने समय का लेखा जोखा प्रस्तुत कियाः

> 'पूरा एक महीना मैंने कुलीन ऐय्याशों या साहसियों की इस मांद में आराम करते हुए गुजारा। बेहतरीन प्राकृतिक सुषमा, दूसरे शब्दों में सुनसान छिद्र।–"जनता" की भीड़ यहाँ कोई नहीं, केवल होटल और कैफ़े के सेवक आदि और घरेलू नौकर जिन्हें लम्पट सर्वहारा में गिनेंगे।'

मौसम बदस्तूर खराब बना हुआ था और इससे उनकी हालत खराब हुई जा रही थी। कान्स के तीन दिनों के प्रवास में भीषण 'अंधड़ (गर्म) वाली हवा और धूल के बगूले' मिले जिनकी चर्चा से 'रीविएरा का स्थानीय प्रेस' भरा हुआ था। मार्क्स ने आत्म-विडम्बना के साथ मजाक करते हुए एंगेल्स को लिखा 'प्रकृति भी कभी भद्दे हास्य के इशारे करती है (उसी तरह जैसे पुरानी बाइबिल में धूल पर सांप के पलने को हंसी में डार्विन के कीड़ों के धूल भरे खाद्य से तुलना करके उसका पूर्वानुमान कहा जाए।)

इसी पत्र में मार्क्स ने डाक्टर की आखिरी सलाह का भी जिक्र किया है 'अच्छी तरह और भरपूर खाइए, भले इससे अन्न का नुकसान हो और ऐसा करने की 'आदत' डाल लीजिए।–'बेहतरीन' चीजें पीजिए और घूमा फिरा कीजिए आदि।–सोचना जितना हो सके कम कर दीजिए आदि।' वे व्यंग्य करने से नहीं चूके 'इन "निर्देशों" के अनुपालन के चलते मैं "मूर्खता" की ओर कदम बढ़ा चुका हूँ और अगर कुछ साथ नहीं छोड़ रहा तो वह यही ब्रोंकाइटिस और सर्दी है। मेरे लिए सुकून देने वाली बात यही है कि वह तो ब्रोंकाइटिस ही था जिसने बूढ़े गैरीबाल्डी को "अनंत विश्राम" में पहुँचा दिया।'

किसी भी हाल में उनको यकीन था कि 'एक खास उम्र में इस बात का कोई मतलब नहीं रह जाता कि "अमर पद" की प्राप्ति आपको कैसे होती है।'

लंदन छोड़ने के चार माह बाद 7 जून को आखिरकार मार्क्स ऐसी हालत में आ सके कि अर्जेंत्यूल में पुत्री के घर के लिए वापस ट्रेन पकड़ सकें। उन्होंने अपने आगमन के बारे में परेशान न होने की उसे सलाह दी 'अब तक मैंने हमेशा पाया है कि सबसे अधिक तकलीफ मुझे इसी बात से होती है कि लोग स्टेशन पर मेरा इंतजार करें' और लाफ़ॉर्ग समेत किसी भी कामरेड को अपने सम्भावित आगमन की सूचना देने से भी मना किया। उन्हें अब भी 'पूर्ण शांति' की जरूरत थी और उन्होंने एंगेल्स से भी कहा 'अब भी "लोगों के साथ" यथासम्भव कम अंतःक्रिया की जरूरत महसूस होती है'। वह महान प्रतिभा अब थक रही थी और लग रहा था जैसे यात्रा का अंत आ पहुँचा है। उन्होंने जेनी को जो शब्द लिखे वे किसी भी मर्त्य प्राणी के लिखे के समान थे '"शांति" से मेरा मतलब "पारिवारिक" जीवन और "बच्चों का शोरगुल" है। "बड़ी दुनिया" के मुकाबले "छोटी दुनिया" अधिक रुचिकर लग रही है।'

अर्जेंत्यूल में अपने जीवन की तुलना उन्होंने ऐसे कैदी से की जिसे छुट्टी मिल गई हो क्योंकि उन्हें हमेशा 'जहाँ कहीं (वे) रुकते, उसके सबसे नजदीक के डाक्टर की सेवा लेनी पड़ती' थी। लांग्वे के पारिवारिक डाक्टर गुस्ताव दुर्लेन (?) मार्क्स को अच्छी तरह जानते थे और सलाह दी कि 'कुछ हफ़्ते' वे निकट की एक जगह 'आग्यि (ले बें) में गंधयुक्त पानी के सेवन का प्रयास' करें। वहाँ वे डाक्टर फ़ुगिए (?) से सलाह भी ले सकते हैं।[10]

मौसम अब भी स्थिर नहीं हुआ था इसलिए मार्क्स यह इलाज एकबारगी शुरू नहीं कर सके। इसके चलते उन्हें 'कूल्हे में गठिया का' बहुत ही दर्दनाक 'हमला' हुआ।[11] जुलाई के शुरुआती कुछ दिनों में ही जाकर वे इस सलाह

---

10. एंगेल्स ने बताया है कि इसके बाद से उनका 'आगामी आवागमन–पूरी तरह से डाक्टरों पर निर्भर हो गया'।

11. मौसम की खराबी ने उनका पीछा पुत्री के घर अर्जेंत्यूल में भी नहीं छोड़ा। लाफ़ॉर्ग ने लिखा है 'पेरिसवासी निराश हैं, उन्हें कभी ऐसे जून का सामना नहीं करना पड़ा था। हालत इतनी भयंकर है कि लोग इंग्लैंड में रहने के ख्वाब देखने लगे हैं। मार्क्स भी खराब मौसम पर झींक रहे हैं। उन्होंने मुझसे कहा, जहाँ कहीं वे गए, जैसे ही सामान खोला, मौसम की खराबी की आम शिकायत सुनी, कल कितना बेहतरीन

पर अमल कर सके और गंधकयुक्त पानी में स्नान के लिए यात्रा कर सके जिससे उन्हें बहुत फायदा हुआ। जैसा कि उन्होंने एंगेल्स को बताया यह क्रिया नियमित तौर पर दुहरानी होगीः

> 'श्वसन कक्ष की हवा गंधक की भाप से नम रहती है। 30 से 40 मिनट वहाँ बिताना पड़ता है। प्रत्येक 5 मिनट पर एक खास मेज पर जस्ते के पेंचदार नलके से खास तौर पर चूर्णित गंधक से बोझिल भाप सांस के साथ अंदर खींचनी पड़ती है। प्रत्येक मनुष्य सिर से पाँव तक रबर से ढका रहता है। इसके बाद वे एक दूसरे के पीछे मेज का चक्कर लगाते हैं, दान्ते के इन्फ़र्नो जैसा दृश्य पैदा हो जाता है'।

स्नान से लौटने और थोड़ी देर आराम कर लेने के बाद शाम को वे नियमित रूप से 'बच्चों के साथ घूमने और खेलने' चले जाते थे 'जिसका असर देखने और सुनने (सोचने की बात छोड़िए) के गुणों के लिए उससे अधिक हानिकर होता था जितने का अनुभव "फेनोमेनोलाजी" लिखने वाले हेगेल ने कभी न किया होगा।'

तमाम कोशिशों के बावजूद ब्रोंकाइटिस और खांसी ने 'किसी भी तरह खांव खांव बन्द नहीं किया' और डाक्टरों ने सलाह दी कि अगस्त मध्य तक यह इलाज जारी रखें। बहरहाल आम तौर पर उनकी हालत में सुधार आया, इतना कि महीने के आरम्भ में उन्होंने जोसे मेसा (1840-1904), पाल लाफ़ॉर्ग, गैब्रिएल डेविल (1854-1940) और जूल्स गुदे समेत पेरिस के मजदूर आंदोलन के कुछ नेताओं के साथ एक बैठक भी की। महीनों बाद पहली बार वे ऐसी किसी चीज के लिए सहमत हुए थे और हालांकि बैठक 'ठीक ही बीती' फिर भी उन्होंने एंगेल्स को लिखा 'हमेशा ही चटपटी बात और/या बकवास ही किसी घटना के बाद सुनाई जाती है'।

20 अगस्त को मार्क्स ने 'श्वसन कक्ष की आखिरी सैर' पूरी की। आखिरी सलाह के समय डाक्टर फ़ुगिए ने उन्हें बताया कि 'फेफड़ों की सूजन में बहुत अंतर नहीं आया है। इसकी मुझे उम्मीद थी' और डाक्टर दुर्लेन के साथ सहमत होते हुए सलाह दी कि वे जेनेवा झील जाएँ 'जहाँ से अनुकूल

था, आज कितना बेकार हो गया। मार्क्स ने कहा "ये मेरी गलती है। मैं अपने साथ बुरा मौसम लेकर आया हूँ"। अगर कहीं वे मध्ययुग में होते तो उन्हें जादूगर होने के आरोप में जला दिया जाता।'

मौसम की खबरें आ रही हैं' और उम्मीद जताई कि 'ब्रोंकाइटिस जनित खांसी के अंतिम निशान भी वहाँ अपने आप दूर हो जाएंगे'।[12]

इस बार 'अकेले इस खतरनाक यात्रा पर निकलने' में अक्षम होने के चलते बेटी लौरा भी उनके साथ चली। क्रूसेडों के दौरान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हत्यारों के संप्रदाय के प्रमुख इस्माइली राशिद-उद-दीन शिनान (1132/1135-92) के साथ खुद की तुलना करते हुए उससे मजाक किया 'कमोबेश (उसका) कर्तव्य है कि बुड्ढे को पहाड़ों तक साथ लेकर आए'।

स्विट्ज़रलैंड की यात्रा पर निकलने से पहले उन्हें कई जर्मन अखबारों के पेरिस स्थित संवाददाता की एक चिट्ठी मिली जिसने कहा कि 'आपके (मार्क्स के) विनम्र और ताबेदार सेवक होने के नाते एक साक्षात्कार करना' चाहता है क्योंकि 'जर्मन "सोसाइटी" के सभी हलकों के लोग (आपकी) सेहत की आधिकारिक सूचना के लिए परेशान रहते हैं'। एंगेल्स को उन्होंने अंग्रेजी में लिखकर सूचित किया 'आप जानते हैं, उस मीठी धार वाले कलमकार को मैंने जवाब नहीं दिया'।

पहले चरण की यात्रा केवल दिन में हुई ताकि 'बीमारी की वापसी का कोई बहाना न रहे' इसलिए वे लोग लूसान तक ही पहुँच सके। मार्क्स को सर्दी ने तभी पकड़ लिया था जब वे पेरिस में 'पूँजी' के फ्रांसिसी अनुवादक जोसेफ राय (1830-1916) से मिले थे। मौसम के अनुकूल होने की भविष्यवाणी के बावजूद वहाँ 'नमी और अपेक्षाकृत ठंड' थी। एंगेल्स को उन्होंने बताया 'पहला सवाल मैंने वेटर से पूछा कि "यहाँ कितने दिनों से बारिश हो रही है?" जवाब मिला "केवल दो दिनों से (यानी जिस दिन पेरिस से चला तबसे) नमी है"। क्या मजाक है!'

उनकी आखिरी मंजिल जेनेवा झील के उत्तरपूर्वी किनारे का वेवी नगर था। मार्क्स ने एंगेल्स को सूचित किया कि उन्हें 'खांसी अब भी' आ रही है

---

12. कुछ समय बाद एंगेल्स ने जेनी को लिखा 'इस बात पर संतुष्ट होने के भरपूर कारण हैं कि प्रतिकूल मौसम के बावजूद उनकी हालत में काफी प्रगति आई है। यह मौसम उन्हें मजबूती से जकड़े हुए काफी परेशान करता रहा। तीन बार तो फेफड़े में सूजन उतरी जिनमें से दो तो काफी गम्भीर थे।—अब बची हुई ब्रोंकाइटिस के लिए कुछ दिन बेल्जियम या फ्रांस में वाष्प स्नान, इसके बाद आल्प्स या पाइरेनीज में जलवायु का बदलाव। फिर तो वे काम करने के लिए पूरी तरह चंगे हो जाएंगे'।

लेकिन शेष सब कुशल है 'हम इस समय मधुपुरी (काजे) में निवास कर रहे हैं'। इस समय उन्हें एंगेल्स की याद बुरी तरह सता रही थी और उन्हें लंदन से बाहर निकलकर साथ देने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन एंगेल्स उस समय तमाम तरह के सांसारिक मामलों में उलझे हुए थे ताकि वे मार्क्स के निरंतर चलने वाले इलाज के खर्च की व्यवस्था कर सकें 'मुझे तो बहुत खुशी होगी अगर वहाँ आकर आपके दर्शन कर सकूं। लेकिन मुझे तात्कालिक रूप से भी अगर कुछ हो गया तो हमारा आर्थिक इंतजाम बिखर जाएगा। यहाँ पर ऐसा कोई चिड़िया का पूत भी नहीं है जिसे मैं अपने वित्तीय अधिकार सौंप सकूं या जटिल किस्म के नकदी लेन देन के मामले में उस पर भरोसा कर सकूं'। मार्क्स समझ गए और एक बार फिर आभार जताया 'मेरे प्रति आपका परोपकारी भाव अविश्वसनीय है और अक्सर मन ही मन इसको लेकर शर्मिंदा भी अनुभव करता हूँ'।

सितम्बर के अंत में जब वे लौटकर लौरा के घर अर्जेंत्यूल आ गए तो मार्क्स डाक्टर दुर्लेन से फिर मिलने गए और 'समुद्र पार करने' की अनुमति मांगी। डाक्टर को मार्क्स की हालत में 'बहुत सुधार महसूस हुआ और लगा कि वे इस असाध्य सर्दी की (अपनी) बीमारी से छुटकारा पाने की राह पर हैं' लेकिन उन्होंने आदेश दिया कि वे लंदन में अधिक से अधिक एक पखवारा या 'अगर मौसम सचमुच अच्छा हुआ तो 3 हफ़्ते' तक ही रहें। अपने इलाज को वे 'सर्दी का अभियान' कहते थे और उसे 'वाइट द्वीप में जल्दी ही शुरू' करना होगा। इंग्लैंड में इंतजार कर रहे दोस्त से तब भी उन्होंने मजाक किया 'अगर फ्रांस की इस सरकार को–यहाँ मेरी मौजूदगी की खबर लग जाए तो– डाक्टर दुर्लेन की अनुमति के बिना भी वह मुझे पठा देगी'।

3. "तय है कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ"

लंदन में दिन बहुत तेजी से बीते। 9 अक्टूबर को मार्क्स ने पुत्री लौरा को लिखा कि उनकी खांसी 'अब भी थकाऊ' बनी हुई है और 'अगर (उन्हें) फिर से काम में जुटने हेतु पूरी तरह से फ़िट होना है तो इसे जड़ मूल से उखाड़ फेंकना' होगा। पतझड़ के आगमन के साथ नमी और बादलों वाला मौसम लौट आया। मार्क्स इस समय डाक्टर द्वोर्किन की देखरेख में थे। उन्होंने फिर से वाइट द्वीप चले जाने की सलाह दी। पहले तो उन्होंने एक

पूरा दिन एंगेल्स के साथ बिताया। एंगेल्स ने लाफ़ॉर्ग को लिखा 'कल मेरे साथ मार्क्स ने दोपहर का भोजन किया, फिर रात का खाना हमने उनके घर किया और फिर एक बजे रात तक साथ बैठकर रम पीते रहे'।[13] बाद में 30 अक्टूबर को वे ट्रेन से वेंटमोर निकल लिये।

बहरहाल मार्क्स की हालत गठिया के चलते फिर से खराब हो गई। 'यह भी (उनके) फेफड़ों की सूजन की तरह ही आवर्ती होने के काफी करीब पहुँच गई थी'। इसके चलते मजबूरन उन्हें एक स्थानीय डाक्टर जेम्स विलियमसन की शरण में जाना पड़ा जिन्होंने 'कुनैन, मार्फिया और क्लोरोफ़ॉर्म' की मिश्रित दवा सुझाई। इसके अलावा 'बाहर टहलते समय हवा और तापमान में मनमौजी उतार चढ़ाव पर बहुत निर्भर न रहने के लिए' उन्हें 'वक्त जरूरत के लिए एक कृत्रिम श्वास नलिका (अपने) साथ लिये रहने के फिर से बाध्य होना पड़ा'। इस प्रकार 'बौद्धिक धुंधलके के लम्बे वक़्फ़े' के बाद भी मार्क्स को 'पूँजी' के तीसरे जर्मन संस्करण की तैयारी का काम करना असम्भव प्रतीत हो रहा था। 10 नवम्बर को उन्होंने अपनी पुत्री एलिनोर को लिखा 'वर्तमान परिस्थितियों में मैं अब भी सचमुच का कोई काम नहीं कर पा रहा हूँ, हालांकि तैयारी के बहाने किसी न किसी काम में खुद को व्यस्त रखे हुए हूँ।'

एंगेल्स उन्हें लंदन की हालत की ताजा सूचना से अवगत रखे हुए थे। 'आपके घर में सब कुछ ठीक ठाक है, लेकिन बीयर सब जगह सड़ी हुई है, वेस्ट एन्ड में केवल जर्मन बीयर भली है'। लेकिन मार्क्स अपने बारे में अच्छी खबर नहीं सुना सके। खांसी बेतरह बढ़ गई थी और गुस्से की बात कि कोढ़ में खाज की तरह गला बैठ गया था। इसलिए वे 'जब तक सूजन चली न जाए–(अपने) कमरे में रहने के लिए शापित' थे।

---

13. दो दिन पहले ही उन्होंने जर्मनी में बेबेल को लिखा था 'मार्क्स–परसों वाइट द्वीप के लिए रवाना हो गए।–(उनमें) अच्छी तरह सुधार आ रहा है और अगर फेफड़ों में सूजन वापस नहीं आती तो अगले पतझड़ में वे बरसों बाद तंदुरुस्त होंगे। बहरहाल बाद में उन्होंने थोड़ी कम आशाजनक और ज्यादा सही तस्वीर पेश की '(मार्क्स) इधर उधर घूमने और निठल्ला जीवन बिताने से इस कदर उकताए हुए हैं कि दक्षिणी यूरोप में उनका नया प्रवास उनके शरीर को जितना लाभ पहुँचाएगा उससे अधिक उनके उत्साह को नष्ट करेगा। लंदन के धुंध भरे मौसम में उन्हें वाइट द्वीप भेजा गया जहाँ लगातार बारिश हो रही थी और उन्हें फिर सर्दी ने जकड़ लिया'।

14 दिसम्बर को उन्होंने अपनी पुत्री लौरा को लिखा कि 'पिछले एक पखवारे से नाक की सर्दी के चलते घर के भीतर कैद' हूँ और कहा कि 'संन्यासी का जीवन बीत' रहा है। डाक्टर विलियमसन के अतिरिक्त किसी से उनकी देखादेखी नहीं हुई थी तथा उन्होंने 'नमी और बारिश' के मौसम के चलते 'अगले सुहाने दिन तक' बाहर निकलने से मना किया हुआ था।

बहरहाल मार्क्स तत्कालीन घटनाओं और फ्रांसिसी मजदूर आंदोलन के नेताओं की स्थिति पर, जितनी अच्छी तरह सम्भव था टिप्पणी करने से नहीं चूके। वे कुछ नेताओं में विकसित 'अति-क्रांतिकारी लफ़्फ़ाजी' से 'परेशान' थे। इन चीजों को 'हमेशा उन्होंने "गर्म हवा" माना था, एक ऐसी विशेषता जो हमारे लोगों को अराजकतावादियों के लिए छोड़ देनी चाहिए। ये तथाकथित अराजकतावादी अव्यवस्था के जनक होने की बजाए मौजूदा व्यवस्था के अलंकरण होते हैं'।

इसी तरह मार्क्स ने उनको भी नहीं बख्शा जो स्वतंत्र वर्ग स्थिति बरकरार रखने में अक्षम साबित हुए। उन्होंने चेतावनी दी कि मजदूर वर्ग के लिए राज्य की संस्थाओं और उसके वाग्जाल का विरोध करना अत्यधिक आवश्यक है। जब कोआपरेटिव कांग्रेस के अध्यक्ष और सांसद जोसेफ कोवेन ने, जिन्हें मार्क्स 'सर्वोत्तम अंग्रेज सांसद' मानते थे, मिस्र में ब्रिटेन की दखलंदाजी को सही ठहराया[14] तो मार्क्स ने अपनी पूर्ण असहमति एलिनोर से व्यक्त की।

सबसे आगे, उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर हमला बोला। 'बहुत खूब! असल में ईसाई पाखंड का मिस्र की "जीत" से बड़ा नग्न उदाहरण हो ही नहीं सकता। शांति के बीच हासिल विजय!' लेकिन 8 जनवरी 1883 को न्यूकैसल में अपने भाषण के दौरान कोवेन ने 'ब्रिटेन की बहादुराना सफलता' और 'हमारी अद्भुत सैन्य क्षमता की चमक' के बारे में प्रशंसा जाहिर की और वे 'अटलांटिक से लेकर हिंद महासागर तक फैली हुई समस्त आक्रामक किलेबंदी की छोटी सी उदीयमान सम्भावना पर खीसें निपोरने से भी नहीं

14. मार्क्स यहाँ 1882 के युद्ध का उल्लेख कर रहे हैं जिसमें अहमद उराबी (1841-1911) के नेतृत्व में मिस्र की सेना और ब्रिटेन की सेना एक दूसरे से लड़ रहे थे। इसका खात्मा तेल अल-कबीर की लड़ाई (13-14 सितम्बर 1882) में हुआ जिसमें तथाकथित उराबी विद्रोह समाप्त हुआ। इसकी शुरुआत 1879 में हुई थी और उसके चलते अंग्रेजों ने मिस्र में संरक्षक की नियुक्ति की थी।

बच' सके 'जिससे डेल्टा से लेकर केप तक एक "अफ्रीकी-ब्रिटिश साम्राज्य" निर्मित होगा'। यही वह 'अंग्रेज शैली' है जिसकी विशेषता 'देश के हित' के प्रति 'जिम्मेदारी' है। सबके अंत में मार्क्स ने कहा कि विदेश नीति के मामले में कोवेन उस 'बेचारे अंग्रेज पूँजीपति वर्ग' के सटीक उदाहरण हैं जो 'अपने ऐतिहासिक मिशन की सेवा में अधिकाधिक "जिम्मेदारी" उठाने के बोझ तले कराहता है और उसके प्रति विरोध का झूठा दिखावा भी करता है'।

मार्क्स ने इंग्लैंड और मिस्र के टकराव के आर्थिक पहलुओं में भी गहन रुचि ली। *लंदन कनटेम्पोरेरी रिव्यू* के अक्टूबर अंक में प्रकाशित माइकेल जार्ज मुलहाल (1836-1900) के 'इजिप्शियन फ़ाइनैन्स' शीर्षक लेख से आठ पृष्ठों में उतारे गए उद्धरण से इसका पता चलता है।

अतः अंत तक मार्क्स ने यूरोप में प्रतिक्रिया के मुख्य गढ़, ब्रिटेन और रूस, के विरुद्ध लड़ाई का उत्साह बनाए रखा। 1869 में चूँकि उन्होंने रूसी पढ़ने की योग्यता हासिल कर ली थी इसलिए ज़ारशाही साम्राज्य में राजनीति के बारे में गहराई से ध्यान दे सके और उनकी आखिरी दो नोटबुकों के उद्धरणों से स्पष्ट है कि 1881 के उत्तरार्ध और 1882 के पतझड़ में भी वे उस साम्राज्य के विभिन्न बदलावों पर नजर रखे हुए थे। खासकर मार्क्स ने 1861 में भूदास प्रथा की समाप्ति और भूमि सुधारों के उपरांत उभरे नए समाजार्थिक संबंधों के बारे में हाल में छपी रूसी किताबों का अध्ययन किया। इनमें शामिल थीं– वसीली सेमेव्सकी (1848-1916) की 'द पीजेंट्री इन द एज ऑफ़ एम्प्रेस कैथरीन II (1881)'; अंद्रेई इजायेव (1851-1924) की 'द आर्टेल्स इन रशिया (1881)'; जेरार्ड मिनिएको (1832-1888) की 'रूरल कॉमन लैंड इन आरखांगेल प्रोविन्स (1882)' और वसीली वोरोंचेव (1847-1918) की 'द फ़ेट ऑफ़ कैपिटलिज्म इन रशिया (1882)'। इनके अतिरिक्त कुछ पुरानी किताबें भी देखीं। मसलन अलेक्सांद्र स्क्रेबित्सकी (1827-1915) की 'द पीजेंट क्वेश्चन इन द एज ऑफ़ अलेक्जेंडर II (1862)' और फ़्योदोर एलेनेव (1827-1902), जो स्काल्दिन का छद्मनाम इस्तेमाल करते थे, की 'आन द पेरिफेरी ऐंड इन द कैपिटल (1870)'।

इस दौरान सेंट पीटर्सबर्ग से प्रकाशित कुछ लेखों से 'उस देश में (मार्क्स के) सिद्धांतों के भरपूर प्रचार का पता चलता' है। उन्होंने अपनी पुत्री लौरा से बताया 'अन्य कहीं भी (उनकी) सफलता से (उन्हें) इतनी खुशी नहीं

मिलती' क्योंकि 'इससे (उनको) संतोष मिलता है कि (वे) ऐसी ताकत को बरबाद कर रहे हैं जो इंग्लैंड के बाद पुराने समाज का सचमुच का मजबूत सुरक्षा बांध है'।

दूसरी ओर यह भी था कि मार्क्स की आलोचना से कोई बचा नहीं था। सितम्बर 1882 में फ्रांस में पार्टी ओवरिए के जन्म के बाद अपनी दोनों बड़ी पुत्रियों के दामादों पर गुस्सा करते हुए एंगेल्स से कहा 'लांग्वे अंतिम प्रूधोंपंथी हो गया है और लाफ़ॉर्ग अंतिम बाकुनिनवादी! शैतान उन्हें ले जाए!' और इसी जुबान में उन्होंने एकाधिक बार उन लोगों पर हमला किया था जो उनके विचारों के अनुयायी होने का दावा करते थे। तंज कसते हुए वे बोलते 'एक बात तय है कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ'।[15]

15. एंगेल्स ने दुख जताया था कि 'फ्रांस में जिसे आजकल "मार्क्सवाद" कहा जाता है वह पूरी तरह एक विचित्र उत्पाद है'।

पश्चलेख : आखिरी हफ़्ते

मार्क्स न तो यूरोपीय मजदूर आंदोलन की हलचलों को ठीक से देख पा रहे थे, न ही उनका सैद्धांतिक काम आगे बढ़ पा रहा था। हालांकि उन्होंने फिर से 'सेहत दुरुस्त' करने की पूरी कोशिश की और हालांकि पुत्री एलिनोर से साल के अंत में आने पर कुछ किताबें ([जोहानेस] रांके की 'फिजियोलाजी' [और एडवर्ड] फ्रीमैन की 'कालानुक्रमणिका' की जगह सड़ी हुई पतली सी 'हिस्ट्री ऑफ़ यूरोप' लाने को कहा फिर भी सेहत की गड़बड़ी और बेटी जेनी को हाल में संतान पैदा होने के बाद उसकी स्थिति की चिंता के चलते उनकी हालत अधिकाधिक खराब होती गई।

6 जनवरी को उन्होंने डाक्टर विलियमसन को बताया कि उठने पर 'अचानक लगातार खांसी आ रही थी और सांस लेने में इस कदर जूझना पड़ रहा था मानो दम घुट रहा हो'। अचानक आई इस आफत का मतलब वे समझते थे। बीती शाम को ही उन्हें पहली संतान के बारे में भयानक खबर वाली चिट्ठी मिली थीः 'जानता तो था कि उसकी बीमारी गंभीर है लेकिन यह सुनने के लिए तैयार नहीं था कि इस समय उसकी हालत खराब है'।

उन्होंने एंगेल्स से यह भी बताया कि उन्हें 'दम घुटता' सा लगा, और कि 'आजकल कोई भी स्नायविक उत्तेजना उनका गला पकड़ लेती है'। एलिनोर को उन्होंने लिखाः

> 'यकीनन स्नायविक परेशानी- जेनीचेन के बारे में दुश्चिंता- की वजह से ऐसा हो रहा है!–तुरंत ही मैं अर्जेंत्यूल के लिए निकल जाता लेकिन फिर सोचा कि एक बीमार अतिथि का अतिरिक्त बोझ मेरी बच्ची क्यों उठाए! कोई नहीं कह सकता कि यात्रा के चलते फिर से दौरा न पड़ जाता जिससे अब तक संयोग से बचा हुआ हूँ। लेकिन फिर जाकर न देख पाने की तकलीफ भी सता रही है।'

उस समय मार्क्स एक और 'लम्बी घरबंदी' से गुजर रहे थे। उनकी 'थका देने वाली' और लगभग 'अर्ध-स्थायी खांसी' जिसके साथ 'प्रतिदिन की उल्टी' भी जुड़ गई थी, ने उनकी हालत को तकरीबन असहनीय बना दिया था। फिर भी हालात इतने भी बेकाबू न हुए थे कि लगे कि अब सेहत सुधर नहीं सकती। एलिनोर से शिकायत के लहजे में कहा कि उनकी अवस्था 'अक्सर काम करना असम्भव' बना देती है। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि 'डाक्टर को यकीन है– और उसको अब भी यकीन है और यही खास बात है– कि (जो थोड़ा सा इलाज उसने अभी सुझाया है) उसके सहारे मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिला सकता है। जो बचेंगे तो देखेंगे।'

बहरहाल प्यारी पुत्री जेनी की 11 जनवरी को लीवर कैंसर से हुई मृत्यु ने ऐसी उम्मीदों को धो पोंछ डाला। पत्नी की मृत्यु के तुरंत बाद यह धक्का जानलेवा था खासकर उस आदमी के लिए जो पहले ही गम्भीर रूप से बीमार था और तमाम तकलीफ़ों से जूझ रहा था। बाद में एलिनोर ने जो लिखा वह उन दिनों की हालत की अपूर्व बानगी हैः

> 'हमें मूर की एक चिट्ठी मिली–, जिसमें उन्होंने लिखा कि जेनी की सेहत में आखिरकार सुधार हो रहा है और हमें- हेलेन (देमुथ) और मैं- को परेशान होने की जरूरत नहीं है। चिट्ठी मिले एक घंटा भी न गुजरा होगा कि जेनी की मौत की सूचना तार से पहुँची। तुरंत मैं वेंटनर के लिए निकल पड़ी। जिंदगी में दुख के तमाम मौके आए हैं लेकिन इस जैसा जानलेवा अहसास कभी नहीं हुआ था। लगा कि पिता की मौत का परवाना देख रही हूँ। दिल को चीर देने वाली उस न बीतने वाली यात्रा के दौरान मैं लगातार सोचती रही कि पिता को यह खबर कैसे सुनाई जाए। लेकिन कुछ कहने की जरूरत ही नहीं पड़ी। मेरे चेहरे ने सब कुछ जाहिर कर दिया। मूर ने तुरंत कहा "हमारी गुड़िया जेनी नहीं रही!" और वे तत्काल पेरिस के लिए चल देना चाहते थे ताकि बच्चों की देखभाल में हाथ बंटा सकें। मैं उनके साथ रहना चाहती थी लेकिन वे कोई बात सुनने को तैयार नहीं थे। वेंटनर में बस आधे घंटे रुक सकी और उसके बाद टूटे और दुखी दिल से लंदन चल पड़ी ताकि पेरिस जाया जा सके। बच्चों के भले के लिए मैंने वही किया जो मूर ने चाहा।'

13 जनवरी को मार्क्स भी आनन फानन लंदन के लिए निकल पड़े। वाइट द्वीप से निकलने से पहले उन्होंने डाक्टर विलियमसन को समझाया कि निकलने की वजह '(उनकी) बड़ी लड़की की मृत्यु की घातक खबर है'। साथ ही यह भी जोड़ा 'भीषण सिरदर्द की वजह से थोड़ा आराम मिल रहा है। शारीरिक

तकलीफ ही मानसिक तकलीफ को 'सुन्न' कर पाती है। ये ही आखिरी शब्द साबित हुए जो वे कागज पर लिख सके थे।

एंगेल्स की चिट्ठियों के आधार पर हम मार्क्स के जीवन के आखिरी हफ़्तों की कहानी के विवरणों की कुछ झलक पा सकते हैं। एडुअर्ड बर्नस्टाइन को लिखी एक चिट्ठी से हमें पता चलता है कि वेंटनर से लौटने के बाद मार्क्स 'ब्रोंकाइटिस के चलते घर में ही रहे– संयोग से इस बार का दौरा हल्का ही था'। इसके बाद 8 फ़रवरी को फिर उन्होंने बर्नस्टाइन को लिखा कि 'पिछले तीन हफ़्तों से मार्क्स का गला ऐसा फटा हुआ है कि मुश्किल से बोल (पा) रहे हैं'। उस समय जर्मनी के सामाजिक जनवादी नेताओं में बर्नस्टाइन से एंगेल्स की काफी नियमित चिट्ठी पत्री होती थी। इसके दो कारण थे। एक तो वे पार्टी के अखबार डेर *जोत्सियालडेमोक्राट* के निदेशक थे और दूसरे क्योंकि विल्हेल्म लीबक्नेख्त के साथ पहले एंगेल्स का टकराव रहा था।

16 फ़रवरी को एंगेल्स ने लौरा को पत्र लिखा 'हाल के दिनों में उन (मार्क्स) की रातें बुरी, निद्राविहीन गुजरी हैं जिनके चलते उनकी बौद्धिक भूख टूट गई है। इसलिए उपन्यासों की जगह पर उन्होंने प्रकाशन सूची पढ़ना शुरू कर दिया है'। दूसरे दिन फिर लिखा कि अच्छी बात है कि 'उन्होंने सूची छोड़ दी है और फ्रेडेरिक सूली (1800-47) की ओर लौट आए' हैं। ये 1848 के पहले के सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक थे। इसके बावजूद एंगेल्स के मन में शंका बनी हुई थी 'सबसे बुरी बात कि उनका मामला बेहद जटिल हो गया है। इसमें सबसे चिंताजनक समस्या यानी सांस संबंधी तंत्र पर तुरंत ध्यान देना होगा, कभी कभी सोने के लिए दवा देनी होगी, अन्य चीजों मसलन पेट की फिलहाल उपेक्षा की जा सकती है।'

महीने के अंत में एंगेल्स ने बर्नस्टाइन को ताजा हाल से दोबारा अवगत कराया 'मार्क्स अब भी कोई काम करने की हालत में नहीं हैं। अपने कमरे से बाहर नहीं निकलते और फ्रांसिसी उपन्यास पढ़ते हैं। उनका मामला कुछ ज्यादा ही जटिल लगता है।' अगले सप्ताह बेबेल को बताया कि मार्क्स की सेहत 'उतनी नहीं सुधर रही जितनी सुधर जानी चाहिए थी।' आखिरकार 10 मार्च को डाक्टर डोंकिन के स्वास्थ्य परीक्षण के बाद लौरा को उन्होंने लिखा '(उन्होंने) कल शाम मूर को देखा और बताते हुए खुशी हो रही है कि पिछले पखवाड़े के मुकाबले सेहत के बारे में ज्यादा सकारात्मक तस्वीर पेश

की। उन्होंने कहा कि मूर की सेहत उस समय के मुकाबले तयशुदा रूप से बिगड़ी तो नहीं ही है, सुधरी है।' बहरहाल मार्क्स 'अब भी कमजोर हैं क्योंकि निगलने में उन्हें परेशानी हो रही है' और कि 'उन्हें जबरिया खिलाना पिलाना होगा।'

हालात जल्दी ही फिर से बिगड़ गए क्योंकि मार्क्स का शरीर तेजी से जवाब देने लगा। फेफड़े में उन्हें फिर से घाव हो गया। एंगेल्स को चिंता शुरू हुई कि उनके जिंदगी भर के दोस्त का अंत सचमुच निकट आ पहुँचा है 'पिछले छह हफ़्तों से रोज सुबह जैसे ही मेरी आंख खुलती है घातक झुरझुरी होती है कि कहीं परदा गिर न गया हो।' जिस बात का उनको डर था आखिर जल्दी ही वह क्षण 14 मार्च 1883 को पौने तीन बजे शाम को आ पहुँचा। पूरी घटना का समूचा विवरण उन्होंने सर्वाधिक संवेदनशील शब्दों में फ्रेडरिक जोर्गे को लिखा जो इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन का मुख्यालय 1872 में अमेरिका चले जाने के बाद उसके सचिव और कामरेड थे।

'कल शाम पौने दो बजे शाम को जब वे आगंतुकों से मिलना पसंद करते थे, उस समय जब मैं घर पहुँचा तो सभी लोग रो रहे थे। लगा जैसे वे अपने अंत के करीब पहुँच चुके थे।– बहुत हल्का रक्तस्राव हुआ था और उसके तुरंत बाद गिर पड़े थे। हम सबकी प्यारी लेंचेन ने उनकी देखभाल अपने बच्चे से अधिक बेहतर तरीके से की थी। वह ऊपर गई और फिर नीचे आकर बताया कि अर्धनिद्रा में हैं। मुझे साथ लेकर वह ऊपर गई। जब हम पहुँचे तो वे वहाँ लेटे हमेशा के लिए सो रहे थे। उनकी सांसें थम गई थीं और नब्ज डूब चुकी थी। दो मिनट के भीतर ही वे बिना किसी तकलीफ के शांतिपूर्वक गुजर चुके थे।'

अपने सबसे प्यारे दोस्त को खो देने के दर्द के बावजूद एंगेल्स ने उनकी इस अपरिवर्तनीय स्थिति के नतीजों को सहसा समझ लिया।

'प्राकृतिक अपरिहार्यता के साथ आने वाली सभी घटनाओं, चाहे वे कितनी ही भयानक क्यों न हों, के साथ कुछ सांत्वना की बात भी रहती है। इस मामले में भी यही है। दवाओं की ताकत के चलते शायद वे कुछ और साल जीवित भर बचे रह गए होते लेकिन वह ऐसे असहाय प्राणी का जीवन होता जो अचानक मरने की जगह इंच दर इंच मौत के मुंह में जाता। वह जीवन डाक्टरों के कौशल की जीत का सबूत होता। लेकिन ऐसी हालत हमारे

मार्क्स शायद कभी न झेल पाते। निगाह के सामने इतनी सारी अपूर्ण रचनाओं के साथ उन्हें पूरा करने की उत्तेजक इच्छा दिल में लिए हुए लेकिन पूरा करने में असमर्थ- ऐसी जिंदगी उनके लिए इस शांत देहांत के मुकाबले हजार गुना तकलीफदेह रही होती। एपीक्यूरस की एक बात वे अक्सर बताते थे "मौत मरने वाले के लिए नहीं बल्कि जिंदा बच गए मनुष्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण होती है।" और इस प्रतिभा के शक्तिपुंज को चिकित्साशास्त्र के गौरव हेतु जिंदा लाश की तरह उन मूर्खों के लिए हास्यास्पद अस्तित्व बने रहना जिन्हें वे अक्सर पटककर धूल चटा चुके थे– नहीं! इससे तो कई हजार गुना बेहतर है जो हुआ, कई हजार गुना बेहतर है कि हम उन्हें परसों उसी कब्र में लिटा आएँ जिसके पड़ोस में उनकी पत्नी चिरनिद्रा में लेटी हैं। और कुल मिलाकर इससे पहले जो कुछ भी घटित हुआ, जिससे डाक्टर उतना परिचित नहीं हैं जितना मैं, उसे देखते हुए यही एकमात्र विकल्प रह गया था। अब जो होना है वह हो। मानवता जिस पर आज गर्व कर सकती है ऐसी प्रतिभा, असल में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिभा से विरहित हो चुकी है। सर्वहारा आंदोलन अपनी राह चलता रहेगा लेकिन उसने अपना केंद्रक खो दिया है। उस केंद्रक की ओर ही फ्रांसिसी, रूसी, अमेरिकी और जर्मन कार्यकर्ता संकट के समय देखते थे और प्रत्येक अवसर पर उन्हें साफ तथा निर्विवाद सलाह मिलती थी। ऐसी सलाह विलक्षण और पूर्ण विशेषज्ञ ही प्रदान कर सकता था। अब तो धोखेबाजों की नहीं लेकिन गली के शेरों और स्थानीय छुटभैयों की चांदी हो जाएगी। अंतिम जीत तो निश्चित है लेकिन पहले से जारी विचलन, अस्थायी और स्थानीय भटकाव अभूतपूर्व रूप से बढ़ जाएंगे।[16] सच है हमें इससे पार निकलना होगा, आखिर और हम कर ही क्या सकते हैं। इन सबके चलते हमें दिल छोटा नहीं करना है, रत्ती भर भी नहीं।'

मार्क्स के देहांत के बाद यही सब हुआ। तमाम लोगों ने उनका झंडा उठा लिया। लैटिन अमेरिका से लेकर धुर पूरब तक विपन्न हाशियों के ट्रेड यूनियन दफ़्तरों या प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के विराट सभा कक्षों में लाखों लाख मजदूरों और विद्यार्थियों ने उनकी रचनाएँ पढ़ीं, उनसे उत्पीड़ितों के

16. बर्नस्टाइन को ऐसे ही एक पत्र में एंगेल्स ने लिखा 'आंदोलन तो अपनी राह चलता रहेगा लेकिन इसे शांत, समयोचित और सूझ भरे हस्तक्षेपों के अभाव का सामना करना होगा जिसने अब तक इसे अनेक बार थकावट से उत्पन्न भटकावों से बचाया'।

सच्चे हालात की समझ हासिल की, नए नए संघर्षों में शामिल होने की प्रेरणा पाई और हड़ताल करने, सामाजिक आंदोलन चलाने तथा राजनीतिक पार्टियों को गठित करने का तरीका सीखा। वे रोटी और गुलाब के लिए, अन्याय के विरुद्ध आजादी लिए लड़े और इस लड़ाई में उन्होंने मार्क्स के सिद्धांतों को पूरी तरह साकार किया।

इस लम्बी प्रक्रिया के दौरान उनका गहराई से अध्ययन हुआ, उनको मूर्ति में बदल दिया गया, सरकारी नियमावली में स्थिर कर दिया गया, गलत समझा गया, प्रतिबंधित किया गया, मृत घोषित किया गया और फिर फिर पुनः प्राप्त किया गया। कुछ लोगों ने उनके विचारों को सिर के बल खड़ा कर दिया, ऐसे सिद्धांत और व्यवहार का चलन किया जिससे अगर वे जीवित रहते तो कड़ाई से लड़े होते। बहरहाल कुछ और लोगों ने उनके विचारों को समृद्ध किया, उनका नवीकरण किया और उनके ही द्वारा अपनाई गई प्रबल आलोचनात्मक भावना के साथ उनमें मौजूद कुछेक समस्याओं को हल किया और अंतर्विरोधों को दूर किया। ऐसी कोशिशों की उन्होंने तारीफ ही की होती।

जो लोग आज मार्क्स के लेखन को फिर से खंगाल रहे हैं या जो उनके लेखन को पहली बार पढ़ रहे हैं वे संसार की व्याख्या हेतु तैयार उनकी समाजार्थिक विश्लेषण की क्षमता से मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते। उनके समस्त लेखन से एक संदेश लगातार प्रसारित होता रहता है– पूँजीवादी उत्पादन पद्धति के खात्मे और पूँजी की गुलामी से संसार के मजदूरों की मुक्ति के लिए संघर्ष संचालित करना अनिवार्य है।

परिशिष्ट : रोटी और गुलाब

अक्टूबर 1879 में फ़ेडरेशन ऑफ़ द सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी ऑफ़ फ्रांस की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस मार्सेलीज में संपन्न हुई। इसका जन्म एक साल पहले ही फ्रांसिसी समाजवाद की विभिन्न धाराओं के एक साथ मिलने से हुआ था। पार्टी में बहुमत हासिल करने के बाद जूल्स गुदे ने ऐसा राजनीतिक कार्यक्रम बनाना शुरू किया जिसका इस्तेमाल चुनाव में भी किया जा सके। पाल लाफ़ॉर्ग के जरिए उन्होंने मार्क्स से इस जरूरी काम को पूरा करने में मदद करने का अनुरोध किया और तीनों की मुलाकात मई 1880 में लंदन में हुई। लिखे जाने के तुरंत बाद यह कार्यक्रम कई फ्रांसिसी अखबारों में छपा। इसका सबसे प्रामाणिक रूप 30 जून 1880 को जूल्स गुदे द्वारा स्थापित *ल'इगालिते* नामक अखबार में छपा। उसी साल नवंबर में संपन्न ल हाव्रे कांग्रेस में यह पारित भी हो गया।

अगले साल एंगेल्स ने एडुअर्ड बर्नस्टाइन को लिखे एक पत्र में इसके लेखन की पृष्ठभूमि को उजागर किया। कार्यक्रम की 'प्रस्तावना' "मार्क्स द्वारा मेरे कमरे में लाफ़ॉर्ग और मेरी मौजूदगी में (गुदे को) लिखवाई गईः मजदूर मुक्त तभी हो सकता है जब वह काम के औजारों का मालिक हो- चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामूहिक- आर्थिक बदलावों के चलते मालिकाने का व्यक्तिगत रूप लगातार कम होता जा रहा है इसलिए सामुदायिक आदि ही मालिकाना शेष रहता है। ठोस तर्क के साकार रूप में जनता को सारी बातें संक्षेप में समझा दी गई थीं। ऐसी कोई चीज मैंने शायद ही कभी देखी थी और इस संक्षिप्त रूप में भी वह अद्भुत दस्तावेज था।"

एंगेल्स ने आगे बताया है कि कुछ ही समय बाद 'कार्यक्रम के बाकी हिस्से' पर बात हुई, गुदे के मसौदे में कुछेक बदलाव किए गए, 'कुछ जोड़ा

और कुछ हटाया'। मार्क्स मजबूती के साथ आर्थिक मामलों के तीसरे विंदु (न्यूनतम मजदूरी के बारे में बेवकूफी) को हटाने की वकालत करते रहे लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। नवम्बर 1880 में मार्क्स की सबसे बड़ी बेटी जेनी लांग्वे ने अपने पति को लिखे पत्र में अपने पिता और गुदे के बीच की इस बहस का जिक्र कियाः

> 'जहाँ तक न्यूनतम वेतन के निर्धारण का सवाल है तो तुम्हें यह जानकर मजा आएगा कि पापा ने गुदे से उसे कार्यक्रम से हटवाने के लिए सब कुछ किया, समझाया कि अगर इस बात को अपना लिया जाए तो आर्थिक नियमों के मुताबिक इस तयशुदा न्यूनतम का नतीजा उसके अधिकतम होने में निकलेगा। लेकिन गुदे माने नहीं और कहा कि अगर और कुछ नहीं तो इस मांग से मजदूर वर्ग उनकी पकड़ में रहेगा।'

आखिरकार मार्क्स ने खुद इस मामले को फ्रेडरिक जोर्गे को लिखी एक चिट्ठी में उठायाः

> 'कानून द्वारा न्यूनतम मजदूरी तय करने जैसी कुछेक बेवकूफियों के अपवाद के अतिरिक्त, जिसे गुदे हमारे विरोध के बावजूद फ्रांसिसी मजदूरों को प्रदान करना सही समझ रहे थे (मैंने उनसे कहा कि अगर फ्रांसिसी मजदूर वर्ग इतना बचकाना है कि उसे इस तरह के प्रलोभनों की जरूरत है तो बेहतर है कि कोई कार्यक्रम ही न दिया जाए), इस दस्तावेज के आर्थिक अनुभाग में (कम्युनिस्ट लक्ष्य को कुछेक पंक्तियों में आरम्भ में परिभाषित करने के अलावे) केवल उन्हीं मांगों को शामिल किया गया है जो मजदूर आंदोलन से स्वतःस्फूर्त तौर पर पैदा हुई हैं। फ्रांसिसी मजदूरों को उनके शाब्दिक घटाटोप से उतारकर जमीन पर ले आना सचमुच बड़ी भारी प्रगति है और इसीलिए इसका विरोध उन सभी बौद्धिक जालसाजों से अपेक्षित है जो 'बादल एकत्र' करने के व्यवसाय से जीविका चलाते हैं।'[1]

700 से कुछ अधिक शब्दों में यह कार्यक्रम मजदूर वर्ग की प्राथमिक मांगों को पेश करता है। इसकी शुरुआत इस मान्यता से होती है कि मजूरी श्रम

---

1. फ्रेडरिक जोर्गे को मार्क्स ने 5 नवम्बर 1880 को बताया कि बेवकूफियों में वे सबसे अधिक विरासत के उन्मूलन के बारे में शंकाकुल थे। यह हेनरी द सेंट साइमन (1760-1825) का पुराना प्रस्ताव था जिस पर प्रथम इंटरनेशनल के समय ही मिखाइल बाकुनिन के साथ उनका वाद विवाद हुआ था। मार्क्स के मुताबिक 'अगर मजदूर वर्ग विरासत का उन्मूलन करने में सक्षम होने की ताकत जुटा लेता है तो वह इतना तकतवर भी होगा कि संपत्तिहरण कर ले। यह अधिक आसान और प्रभावी प्रक्रिया होगी'।

पर आधारित उत्पादन व्यवस्था में सर्वहारा कभी मुक्त नहीं हो सकता, और कि उनकी मुक्ति उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व हासिल करने से ही होगी। इसके बाद इसमें घोषणा है कि मजदूर वर्ग को किसी भी तरह के भेदभाव- खासकर लिंग या नस्ल से जुड़े भेदभाव- के विरोध में सक्रिय संघर्ष करना होगा और पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की अधीनता को समाप्त करने की मांग उठानी होगी।

मजदूरों को विकेंद्रित शक्तियों वाली भागीदारी आधारित सरकार का समर्थन करना चाहिए। उन्हें सरकारी कर्जों की मंसूखी और धार्मिक आयाम से विरहित राज्य के लिए लड़ना चाहिए। उन्हें सार्वजनिक खर्च पर सबके लिए शिक्षा के अधिकार को अपनाना चाहिए, सार्वजनिक संपत्ति के निजीकरण का विरोध करना चाहिए और साझा स्वामित्व के सिद्धांत को बुलंद करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें कारखानों का स्वप्रबंधन हासिल करने के लिए गोलबंद होना चाहिए और किसी भी रूप में राजकीय समाजवाद का विरोध करना चाहिए।

इन लक्ष्यों को साकार करने के लिए जरूरी है कि मजदूर ऐसी स्वतंत्र राजनीतिक पार्टी के जरिए राजनीतिक रूप से संगठित हों जो अन्य लोकतांत्रिक पार्टियों के साथ होड़ करे और बुर्जुआ पार्टियों के विरुद्ध संघर्ष करे।

समाजवादी मजदूरों का चुनावी कार्यक्रम

जूल्स गुदे, पाल लाफ़ॉर्ग, कार्ल मार्क्स

प्रस्तावना

मानकर

कि उत्पादक वर्ग की मुक्ति लिंग या नस्ल आधारित भेदभाव के बिना सभी मनुष्यों की मुक्ति है;

कि उत्पादक केवल तभी मुक्त हो सकते हैं जब उत्पादन के साधन उनके कब्जे में हों;

कि केवल दो रूप हैं जिनके तहत उत्पादन के साधन उनके हो सकते हैं

1. व्यक्तिगत रूप जो आम तौर पर कभी नहीं रहा और औद्योगिक प्रगति के साथ अधिकाधिक समाप्त हो चला है;

2. सामूहिक रूप जिसके भौतिक और बौद्धिक तत्व पूँजीवादी विकास से ही उत्पन्न हो चुके हैं;

मानकर

कि यह सामूहिक अधिग्रहण स्वतंत्र राजनीतिक पार्टी में संगठित सर्वहारा या मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी कार्यवाही से ही सम्भव है;

कि ऐसे संगठन का निर्माण सर्वहारा के पास उपलब्ध सभी संसाधनों के सहारे करना ही होगा। इन संसाधनों में सार्वभौमिक मताधिकार भी शामिल है जिसे इस प्रकार अब तक धोखे के साधन की भूमिका निभाने वाले उपकरण से बदलकर मुक्ति का उपकरण बना दिया जाएगा;

फ्रांसिसी समाजवादी मजदूरों ने अपनी कोशिशों का लक्ष्य पूँजीपति वर्ग का आर्थिक और राजनीतिक अपहरण तथा उत्पादन के सभी साधनों को समुदाय को लौटा देना मानते हुए तय किया है कि संगठन और संघर्ष के उपाय के बतौर चुनाव में निम्नांकित तात्कालिक मांगों के साथ उतरा जाए:

(क) राजनीतिक मांग

प्रेस, सभा और संगठन संबंधी सभी कानूनों और सबसे आगे बढ़कर इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन के विरोध में बने कानून का उन्मूलन। मजदूर वर्ग पर लीव्रे[2] नामक प्रशासनिक नियंत्रण और मालिक के मुकाबले मजदूर की तथा पुरुष के मुकाबले स्त्री की अधीनता स्थापित करने वाली सभी संहिताओं का खात्मा;

1. धार्मिक संस्थाओं के बजट का खात्मा और 'असंक्राम्य कही जाने वाली चल और अचल वस्तुओं' (2 अप्रैल 1871 के कम्यून द्वारा अधिसूचित) समेत कारपोरेशनों की समस्त औद्योगिक तथा वाणिज्यिक संपत्ति को जब्त कर राष्ट्र को लौटाना;
2. सार्वजनिक कर्ज की मंसूखी;
3. स्थायी सेना और जनता के आम सैन्यीकरण का खात्मा;
4. प्रशासन और पुलिस पर कम्यून का नियंत्रण

---

2. लीव्रे एक प्रमाणपत्र होता था जिसमें लिखा होता था कि इस मजदूर पर पुराने नियोक्ता का कोई कर्ज या देनदारी नहीं है। इसके प्रस्तुत किए बिना किसी को काम पर नहीं रखा जाता था। 1890 में जाकर इस प्रथा का खात्मा हुआ।

(ख) आर्थिक मांग

1. हफ़्ते में एक दिन आराम या सात दिनों में छह दिन से अधिक काम कराने पर कानूनी प्रतिबंध। बालिगों के लिए काम की अवधि घटाकर कानूनी रूप से आठ घंटे करना। चौदह बरस से कम उम्र के बच्चों से निजी कारखानों में काम कराने की मनाही, चौदह से सोलह बरस के बच्चों के लिए काम की अवधि आठ से घटाकर छह घंटे करना;[3]
2. मजदूर संगठनों द्वारा प्रशिक्षु कामगारों की सुरक्षा का निरीक्षण;
3. मजदूरों के एक सांख्यिकी आयोग द्वारा भोजन की स्थानीय कीमत के अनुरूप प्रत्येक वर्ष निर्धारित न्यूनतम वेतन का भुगतान;
4. फ्रांसिसी मजदूरों को देय वेतन से कम वेतन पर विदेशी मजदूरों को नियुक्त करने पर कानूनी प्रतिबंध;
5. स्त्री और पुरुष कामगारों को समान काम का समान वेतन;
6. सभी बच्चों को वैज्ञानिक और व्यावहारिक शिक्षा, समाज की ओर से राज्य और कम्यून पर इनके भरण पोषण की जिम्मेदारी;
7. समाज पर वृद्ध और अशक्त लोगों की जिम्मेदारी;
8. मजदूरों की सहकारिता सोसाइटियों और भविष्य निधि सोसाइटियों के प्रशासन में मालिकों के समस्त हस्तक्षेप पर रोक और इन्हें एकमात्र मजदूरों के नियंत्रण में वापस लाया जाए;[4]
9. दुर्घटनाओं के मामलों में नियोक्ता की जिम्मेदारी, जिसके लिए मजदूरों की सुरक्षा के कोश में नियोक्ता की ओर से जमा सिक्योरिटी की गारंटी हो; यह कोश कामगारों की संख्या और संबंधित उद्योग में खतरे की सम्भावना के अनुपात में होगा;
10. विभिन्न कारखानों की विशेष नियमावली बनाने में मजदूरों का हस्तक्षेप होगा; अर्थदंड या मजदूरी के भुगतान पर रोक की शक्ल में मजदूरों को सजा देने का मालिकों का अधिकार खत्म किया जाए (27 अप्रैल 1871 की कम्यून की अधिसूचना);
11. (बैंक, रेल, खान आदि) सार्वजनिक संपत्ति के निजी अधिग्रहण

---

3. इन मांगों को 19वीं सदी के संदर्भ में देखना होगा।
4. इन मांगों को उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के संदर्भ में देखना होगा।

संबंधी समस्त समझौतों का खात्मा, सभी सरकारी कारखानों का संचालन वहाँ काम करने वाले मजदूरों को सौंपा जाए;

12. सभी परोक्ष करों का उन्मूलन और सभी प्रत्यक्ष करों को तीन हजार फ्रांक से अधिक आमदनी पर प्रगतिशील आयकर में बदल दिया जाए। सीधे वारिसान के अतिरिक्त किसी और को विरासत सौंपने तथा बीस हजार फ्रांक से अधिक की समस्त सीधी विरासत पर पाबंदी।

जीवनक्रम : 1881-83

1881

जनवरी से जून– इन महीनों में लंदन में मार्क्स ने एच. मोर्गन, जे. मनी, जे. फीयर और एच. मेन की किताबों से संक्षेपण का कुछ काम पूरा किया जिसे उन्होंने 1880 के अंत में शुरू किया था। इस सामग्री से भरी हुई एथनोलॉजिकल नोटबुक्स में लगभग 200 पृष्ठ हैं। इसी दौरान वे मैथमेटिकल नोटबुक्स में डिफ़रेन्शियल कैलकुलस में भी उलझे रहे। फ़रवरी के दूसरे हफ़्ते से लेकर 8 मार्च तक उन्होंने रूस के ग्रामीण कम्यून के सवाल पर वेरा जासूलिच को चिट्ठी के आरम्भिक मसौदे तैयार किए और आखिरकार चिट्ठी लिखी।

जून के आखिरी हफ़्ते से लगभग 19 जुलाई तक– ईस्टबोर्न में पत्नी जेनी फ़ान वेस्टफालेन के साथ रहे।

20 से 25 जुलाई लगभग– लंदन लौटे और फ्रांस यात्रा की तैयारियों को अंतिम रूप दिया।

26 जुलाई से 16 अगस्त– पेरिस के उपनगर अर्जेन्तियूल में बड़ी बेटी जेनी लांग्वे के यहाँ पत्नी और हेलेन देमुथ के साथ।

17 अगस्त से 28 दिसंबर– लंदन वापसी। इतिहास के गहन अध्ययन में डूब गए और एफ़. श्लोजेर तथा सी. बोत्ता की किताबों से विस्तार से नोट लिए। नतीजे के तौर पर क्रोनोलाजिकल एक्सट्रैक्ट्स तैयार हुआ जिसमें 550 से अधिक पृष्ठों में 91 ईसा पूर्व से लेकर 1648 की वेस्टफालिया संधि तक की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं को टिप्पणियों के साथ दर्ज किया गया था। बीमार पत्नी की लगातार देखरेख के अलावे बचे हुए समय में रूस पर हाल में छपी किताबें देखीं और गणित का छूटा हुआ अध्ययन फिर से शुरू किया।

अक्टूबर मध्य के बाद से दो महीनों तक प्लूरेसी और ब्रोंकाइटिस के हमले के चलते अशक्त रहे।

2 दिसंबर– पत्नी का देहांत हुआ।

29 से 31 दिसंबर– सबसे छोटी बेटी एलिनोर के साथ उचित जलवायु की खोज में वाइट द्वीप में वेन्टनोर की यात्रा।

1882

1 से 15 जनवरी– वेन्टनोर में बने रहे।

16 जनवरी से 8 फ़रवरी– प्रभावी इलाज हेतु डाक्टरों से सलाह मशविरे के लिए लंदन वापसी। 21 जनवरी को मार्क्स एंगेल्स ने कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र के रूसी संस्करण की भूमिका खत्म की।

9 से 16 फ़रवरी– अल्जीरिया के लिए प्रस्थान। एलिनोर के साथ ही अर्जेन्तियूल में रुककर बड़ी बेटी जेनी से मुलाकात की।

17 फ़रवरी– अकेले ही मार्क्स आगे चले। फ्रांस को पारकर एक रात मार्सेलीज में रुके।

18-19 फ़रवरी–भाप की जहाज सइद पर अफ्रीका चले। अल्जीयर्स उतरे।

20 फ़रवरी से 2 मई– अल्जीरिया की राजधानी में रुके जहाँ पुरानी ब्रोंकाइटिस और प्लूरेसी के हमले ने दो महीने लम्बे दर्दनाक इलाज के लिए मजबूर कर दिया।

3-4 मई– सेहत में सुधार के चलते फ्रांस होते हुए वापसी की यात्रा।

5 मई–चौसठवें जन्मदिन पर मार्सेलीज उतरे और थोड़ी देर के लिए नीस गए।

6 मई से 3 जून– सेहत फिर से खराब होने के कारण मोन्टे कार्लो में रुकना पड़ा और इलाज भी कराना पड़ा।

4 से 7 जून– डाक्टर की सलाह पर मार्सेलीज से पेरिस की यात्रा से पहले थोड़े समय के लिए कान्स रुकना पड़ा।

8 जून से 22 अगस्त– अर्जेन्तियूल में रुककर बड़ी बेटी जेनी से मुलाकात की। जुलाई प्रारम्भ से 20 अगस्त तक आग्यिन-ले-बेंस में ताप चिकित्सा कराई।

23 अगस्त से 27 सितंबर– बेटी लौरा के साथ स्विट्ज़रलैंड की यात्रा। लूसान में कुछ समय तक रहे फिर चार हफ़्ते तक जेनेवा झील के किनारे वेवी में रहे। वापसी यात्रा में जेनेवा रुके।

28 सितंबर से 6 अक्टूबर– फ्रांस लौटे। पेरिस में बेटी लौरा के पास रुके फिर अर्जेन्तियूल में रुककर बड़ी बेटी जेनी से मुलाकात की।

7 अक्टूबर– इंग्लैंड की वापसी यात्रा।

8 से 29 अक्टूबर– लंदन में तीन हफ़्ते रुककर अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र और रूस से संबंधित किताबों से सामग्री संचय किया।

30 अक्टूबर से 31 दिसंबर– वेन्टनोर में रुककर अपनी सेहत सुधारने और रुका काम शुरू करने की कठिन कोशिश की।

1883

1 से 12 जनवरी– वेन्टनोर में ही रुके रहे जहाँ 12 को बड़ी बेटी जेनी के देहांत की खबर मिली।

13 जनवरी से 13 मार्च– दुखी मन से तुरंत लंदन लौटे। फेफड़े में घाव के चलते तबीयत अचानक बेहद खराब हो गई। बची खुची ताकत के सहारे पुस्तक सूची देखते रहते और फ्रांसिसी उपन्यास पढ़ते रहते।

14 मार्च– हृदयगति रुक जाने से 41, मेटलैंड पार्क स्थित घर में देहान्त।

अनुक्रमणिका

अंग्ल-ज़ुलू युद्ध 51
अंतर-कलन (डिफ़रेन्शियल कैलकुलस) 37-40
अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन 11, 25, 80
अंद्रेई इजायेव 124
अत्यणुकलन विद्या 38
अफ़्रीकी-ब्रिटिश साम्राज्य 124
अमेरिका 27, 45, 48, 50, 53, 81
अमेरिकी समाज 47
अराजक-कम्युनिस्ट-नास्तिक युग 77
अर्नेस्ट बेलफ़ोर्ट बैक्स 90
अलेक्सांद्र दुमास सीनियर 17
अलेक्सांद्र स्क्रेबित्सकी 124
अलेक्सांद्र ह़र्ज़ेन 64
अल्जीरिया 8
अल्बर्ट शाफ़्ले, जर्मन अर्थशास्त्री 85

आइजक न्यूटन 38
आगस्तीन काउची 39
आतंकी केंद्रीय कमेटी 77
आधुनिक मजदूर वर्ग 57
आयरलैंड 8, 49-50
आर्नोल्डस केर्दिक, डच पत्रकार 84

इंग्लैंड 11, 13, 38, 48-50, 68
इंग्लैंड का मजदूर वर्ग 89
इंटरनेशनल वर्किंग मेन'स एसोसिएशन 18, 24, 42, 129, 135
इजिप्शियन फ़ाइनैन्स 124
इटली 81, 101

उत्पादन पद्धति 45
उपनिवेशवाद 28, 76

एंगेल्स 7, 19, 21-23, 30, 37-39, 52-53, 57, 74, 82-83, 85, 91-99, 103-09, 112-14, 117-22, 125-26, 128-29, 132, 139
एडुअर्ड बर्नस्टाइन 23, 81, 98, 128, 132
एडुअर्ड फ़ोर्तिन 83
एडोल्फ वागनेर, जर्मन अर्थशास्त्री 63
एडोल्फ़ सामटेर, अर्थशास्त्री 45
एथनोलॉजिकल नोटबुक्स 27-28, 30, 34-35, 69, 138
एरिक वेइरस्त्रास 39
एलिनोर, पुत्री 92-93, 96, 98-99, 103, 122, 126-27, 139
एस्किलुस 17

ओट्टो माइजनेर 85
ओतेचस्त्वेन्ये ज़ापिस्की 63-64, 67, 75
ओलिविए लिसागरी 53
औद्योगिक 51
  और वाणिज्यिक संकट 46
  पूँजीपति 44
औपनिवेशिक उत्पीड़न 8, 53
औपनिवेशिक नीति 35
औपनिवेशिक शोषण 54

कनटेम्पोरेरी रिव्यू 90
कन्जर्वेटिव पार्टी 50
कम्युनिज्म 40, 48, 60
कम्युनिस्ट 51
कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र 30, 44, 57, 74, 91, 139
कम्यून 64
  ग्रामीण 54, 56, 68, 70-71, 73-74
कामरेड जोहान्न बेकर 98
कामरेड विल्हेल्म वोल्फ़ 20
कार्ल काउत्सकी 23, 52, 85
कार्ल हिर्श 22, 93

कार्लो काफ़िरो 84
कार्लो बोत्ता, इतालवी इतिहासकार 101, 138
किसान आंदोलन 55
कैपिटल 18
क्रांतिकारी आंदोलन 11, 112
क्रांतिकारी बदलाव 58
क्रांतिकारी बुर्जुआ 45
क्रांतिकारी समाजवादी 56
क्रीमियावासी निकोलाई ज़ाइबेर 22
क्लीमेंस्यू 93

गाटफ्राइड विल्हेल्म लाइबनित्ज़ 20, 38
गाम्बेत्ता 52
गुलाम उत्पादन पद्धति 66
गुस्ताव दुर्लेन, पारिवारिक डाक्टर 118
गूल्ड 47
गैब्रिएल डेविल 119
गोगोल 17
गोथा विलय कांग्रेस 80

चार्ल्स पार्नेल 50
चार्ल्स लांग्वे, मार्क्स के दामाद 13, 24, 50, 83, 96, 125
चार्ल्स लीवर 17
चेर्बुलिए 44

जनरल एसोसिएशन ऑफ़ जर्मन वर्कर्स 80
जर्मन मजदूर 103
जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक 93
जर्मनी 38, 51, 83, 85
जान फीयर 27
जान बुल 51
जान स्विंटन 11, 43
जानी 24, 26
ज़ार अलेक्जेंडर द्वितीय 72
जार्ज क्लीमेंस्यू 24, 44-45
जासूलिच 55, 57, 64, 67-68, 75, 77
जिरोलामो सावोनारोला 102
जूल्स गुदे 81-83, 119, 132, 134
जूल्स वार्निए, वाम रिपब्लिकन सांसद 110
जेनी (लांग्वे), पुत्री 21, 24-25, 49-50, 52, 77, 91-95, 99, 106-07, 118, 126-27, 133, 138-39
जेनी फ़ान वेस्टफालेन, पत्नी 12, 21, 91-93, 95-96, 98-99, 138
जे. फीयर 138
जे. मनी 138
जेरार्ड मिनिएको 124
जैक ओफ़ेनबाख 115
जोर्गे 87
जोसेफ कोवेन 123
जोसेफ राय, 'पूँजी' के फ्रांसिसी अनुवादक 120
जोसेफ लुई-लारांज 38
जोसे मेसा 119
जोहान मोस्ट 84
जोहान्न रॉबर्टस 45
ज्याँ इपोलाइत कोलिन्स 45
ज्याँ द'लेम्बर्ट 38
ज्यार्जी प्लेखानोव 77

डाक्टर कुनेमान 115, 117
डाक्टर गुस्ताव दाउर्लेन 93
डाक्टर जेम्स विलियमसन 122-23, 126-27
डाक्टर डोंकिन 24, 107, 107, 128
डाक्टर दुर्लेन 94, 119, 121
डाक्टर द्वोर्किन 98, 103, 104, 121
डाक्टर फ़ुगिए 118-19
डाक्टर स्टेफान 106
डान क्विकजोट 17
डेर जोत्सियालडेमोक्राट 128
ड्यूश-फ्रांत्सोजिशे यारबुखेर 18

द प्रोलेतारियन 82
दांते 17
दैनिक ल'अखबार 110
द्वितीय इंटरनेशनल 35

निकोलाई काब्लुकोव 22
निकोलस बालसेम 84
निकोलाई डैनिएल्सन 24, 27, 46, 85-86, 100
निकोलाई मिखाइलोव्सकी, समाजशास्त्री 63-66
नीदरलैंड्स 40
न्यूनतम मजदूरी 133
न्यू यार्क चैम्बर ऑफ़ कामर्स 48
न्यू यार्क टाइम्स 12
न्यू यार्क ट्रिब्यून 11, 37, 54, 68

न्यू राइनिशे जाइटुंग 18-19

पगारजीवी श्रमिक 45, 66
पश्चिमी पूँजीवादी व्यवस्था 72
पापुलिस्ट ब्लैक रीडिस्ट्रीब्यूशन समूह 55
पार्नेल 51
पाल द काक 17
पाल ब्रूस 81
पाल लाफ़ॉर्ग, मार्क्स के दामाद 13, 17, 82-83, 93, 97, 104, 106-07, 118-19, 122, 132, 134
पीपुल'स विल 75, 77
पुश्किन 17
पूँजी 7, 11, 15, 19-21, 28, 37, 40, 56, 58-59, 61-65, 67, 75, 79-81, 83-84, 86-91, 104, 108, 122
पूँजीपति वर्ग 42, 57, 124
पूँजीवाद 7, 36, 54, 57-59, 61, 66-68, 70
  कम्युनिस्ट समाज 57
पूँजीवादी 27, 36, 45
  उत्पादन 42, 45, 56-58, 62-63, 65, 67-69, 71, 73, 81
    पद्धति 15, 59, 60, 64, 76, 131
  व्यवस्था 9, 36, 61, 70, 73
  समाज 62, 65
पेरिस कम्यून 24, 80
पेरिस का मजदूर आंदोलन 119
पोलिटिश-ओकोनामिश रेव्यू 19

फ़र्दिनांद न्यूवेनहुइस 40-42, 84-85
फ़र्दिनान्द लासाल 80, 82
फीयर 29, 35
फ़ेडरेशन ऑफ़ द सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी ऑफ़ फ्रांस 53, 132
फ़ेनियन 53
फ़ेनियन आंदोलन 49
फ़्योदोर एलेनेव 124
फ्रांस 13, 51, 81, 83, 93, 95, 102, 139
फ्रांसिसी 132
  पूँजीपति वर्ग 42, 109
  मजदूर 82, 135
  मजदूर आंदोलन 123
  मजदूर वर्ग 133
  समाजवादी 82
  सरकार 24
फ्रेंच वर्कर्स पार्टी 81
फ्रेंच सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी 63
फ्रेडरिक जोर्गे, जर्मन क्रांतिकारी 43, 85, 87, 129, 133
फ्रेडरिक फ्रिट्शे 22
फ्रेडरिक श्लोजेर 101, 138
फ्रेडेरिक सूली 128

बार्थोल्ड नीबूहर 29
बाल्ज़ाक 17
बुर्जुआ 35-36, 40, 53
बुर्जुआ अखबार 103
बुर्जुआ उद्योग 68
बुर्जुआ बौद्धिक 16
बुर्जुआ सभ्यता 32, 35
बुर्जुआ समाज 58
बेंजामिन डिजराइली 50
बेनोइत मालों 82
ब्रिटेन 81
ब्रूस 82-83

भारत 8, 53
भूदास प्रथा 55
भूदास प्रथा की समाप्ति 124
भूमि सुधार 124

मजदूर वर्ग 15, 21, 40-41, 45, 51, 54, 59, 79, 89, 133, 135
  आंदोलन 15, 23, 54, 82, 133
  की बाइबल 91
मजदूर-वर्गीय क्रांति 57
मजदूरों के अधिकार 84
मरियान कोमिन, छोटी बेटी की अभिनेत्री दोस्त 22, 23
माइकेल जार्ज मुलहाल 124
माउंटस्टुअर्ट एलफ़िंस्टन, स्काटिश नेता 23
मार्क्सवाद 36
मार्क्सवादी 9
मार्टिन लूथर 102
मिखाइल बाकुनिन 62, 81
मिन्ना काउत्सकी 97

मिल 44
मिस्र 8
मुलनेर 115
मेटलैंड पार्क 15, 20, 22, 86, 140
मैक्सिम कोवालेव्सकी, रूसी इतिहासकार 27, 109-10
मैथमेटिकल मैनुस्क्रिप्ट्स 38-40
मॉडर्न थॉट, अंग्रेजी पत्रिका 90

यूरोप 48
यूरोपीय मजदूर आंदोलन 126

रूस 54, 83
रूसी क्रांति 74-75
रूसी पूँजीवाद 56
रॉबर्ट बर्न्स 17
रॉबर्ट सीवेल 100
रोमन साम्राज्य 42, 101

ल'इगालिते, अखबार 132
ल जस्टिस, क्रांतिकारी दैनिक 24
लंदन कनटेम्पोरेरी रिव्यू 124
ल पेटिट कोलोन 108
लियो हार्टमान 22
लुई वाइरेक 22
लुडविग कुलेगमान 20
लेविस हेनरी मोर्गन, अमेरिकी मानवशास्त्री 27-29, 31-33, 71, 138
लैंड ला 50
लैंडलार्ड ऐंड टीनैन्ट (आयरलैंड) ऐक्ट 49
लौरा, पुत्री 92, 111, 113, 121, 123-24, 128, 140
ल्यों गाम्बेत्ता 52

वसीली वोरोंचेव 124
वसीली सेमेव्सकी 124
वाल्टर स्काट 17
विक्टर ह्यूगो 12
विक्टोरियाई समृद्धि 47
विलार्ड ब्राउन, अमेरिकी समाजवादी 43
विलियम ग्लैडस्टोन 49-50
विलियम शेक्सपियर 17, 22
विल्हेल्म लीबक्नेख्त 128
वैज्ञानिक समाजवाद 56

शाफ़्ले 82
शार्लमान 101
शिकागो ट्रिब्यून 17, 84
श्चेद्रिन 17

सन (पत्रिका) 11-12
समाजवाद 9, 36, 41, 45, 57, 63, 72, 76
समाजवादी 36, 41
  आंदोलन 64
  कांग्रेस 40, 42
  पुनर्जीवन 33
  व्यवस्था 41, 63
  समाज 59, 63, 67
सर्वहारा आंदोलन 51, 130
सर्वहारा क्रांति 42, 75
सर्वहारा मोर्चा 42
सर्वहारा वर्ग 89
सर्वहारा संघर्ष 74
सर्वान्तेज 17
सामंतवाद 67
सामंती उत्पादन 67
सामंती समाज 57, 65
सामाजिक उत्पादन 61, 71
सुधारवादी सोशलिस्ट वर्कर्स' फ़ेडरेशन ऑफ़ फ्रांस 81
सेंट पीटर्सबर्ग 77
सैमुएल मूर 39
सोशल डेमोक्रेटिक लीग 40
सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर'स पार्टी 80
सोशलिस्ट वर्कर्स' पार्टी फ़ेडरेशन ऑफ़ फ्रांस 81
स्त्री-पुरुष संबंध 61
स्पेन 81, 102
स्विंटन 12, 13-15, 26, 44

हिल्डिच 44
हेनरी जार्ज, अमेरिकी अर्थशास्त्री 43
हेनरी मेन 27, 138
हेनरी हिंडमैन, डेमोक्रेटिक फ़ेडरेशन के संस्थापक 23, 28, 86-88
हेलेन देमुथ, सेविका 21, 93, 96, 127, 138